A-PDF OFFICE TO PDF DEMO: Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

अभिषेक

1992

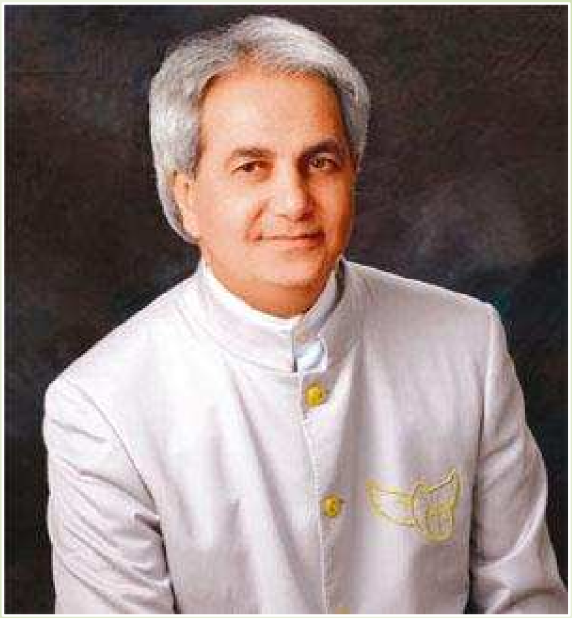

LENOVO

'वर्ल्ड आरउटरीच सेन्टर

अभिषेक

बैनी हिन्न

अनुक्रमणिका

1.	डेट्राइट में अनर्थ	5
2.	सबसे बहुमूल्य वरदान	8
3.	आरम्भ में	15
4.	अन्ततः उत्तर मिला	27
5.	न तो बल से	45
6.	परमेश्वर की एक आसाधारण स्त्री	56
7.	यह क्या है	64
8.	आपके पास होना चाहिये	71
9.	तीन अभिषेक	80
10.	यह कल आरम्भ नही हुआ	91
11.	यीशू – मैं हूँ	98
12.	यह आपके लिये है अभी	106
13.	दो गूढ़ आधार	113
14.	यीशू का उदाहरण	124
15.	अपने तेल को बदलिये	138
16.	दो गुना भाग पाना	147
17.	क्या आप अपना मूल्य चुकायेंगें?	156
	अध्ययन व चर्चा के लिये निर्देश	165

प्राक्कथन

अपनी गत पुस्तक 'शुभ – प्रभात पवित्र आत्मा' में मैंने पवित्र आत्मा की वास्तविकता परमेंश्वर के रुप में, त्रिएकता के बराबर के सदस्य के रुप में तथा मेरे व आपके समान एक वास्तविक व्यक्ति होने पर बल दिया था। उस पुस्तक में मेरा उद्देश्य आपको आत्मा से परिचित कराना तथा आपको उसकी उपस्थिति के उनुभव की ओर अग्रसर करना था।

'अभिषेक में मेरा उद्देश्य उस खूबसूरत चल रहे सम्बंध को आगे बढ़ाना है तथा आपको उस सामर्थ की वास्तविकता में ले जाना, जिससे आप अपने जीवन में उसकी विशिष्ट बुलाहट में प्रभु यीशु की सेवा कर सकें। यह सामर्थ पवित्र आत्मा का अभिषेक है, जैसा यीशु ने अपने जी उठने के बाद प्रतिज्ञा की थी, 'जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा , तब तुम सामर्थ पाओगे और तुम मेरे गवाह होगे' (प्रेरितों के काम 1:8)।

मेरे विचार में हम सब इस पर सहमत होंगे कि यदि कोई ऐसा समय था, जब मसीह की देह को सामर्थ की आवश्यकता थी, तो वह अब है। केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आश्चर्यजनक कार्य करने की शक्ति ही संसार के हर कोने में पाप व रोग के उमड़ते हुए ज्वार को रोक सकती है।

मसीही होने के नाते, दुर्बलता हमें विरासत में नहीं मिली है, फिर भी इस हम में से बहुत उसी में संतोष किये हुए हैं। बाइबल कहती है,मसीह के लिये हमारी साक्षी प्रमाणित हो सकती है ' चन्हों के द्वारा '(मरकुस 16:20) पवित्र आत्मा के अभिषेक का उद्देश्य इस प्रतिज्ञा का पूरा होना है। और आपको इस गुप्त धन से सज्जित करना इस पुस्तक का आशय है।

सर्वप्रथम उपस्थिति आवश्यक है, तत्पश्चात आता है अभिषेका अभिषेक पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं है, यद्यपि यह महत्वपूर्ण है। अभिषेक सामर्थ है, परमेश्वर की सेवा करने की सामर्थ। आप निश्चत रूप से जान जायेंगे, जब पवित्र आत्मा की उपस्थिति आपके जीवन में आयेगी, क्योंकि आपको मिलेगी– मधुर संगति । आप तत्काल ही जान जाएंगे जब वह आपको आत्मिक ,मानसिक व शारीरिक रूप से सामर्थी करेगा कि आप शैतानों व रोगों से लड़ सकें।

इस विषय में कोई गलत धारणा न रखें परमेश्वर चाहता है कि आपके पास यह दोनों बड़े वरदान हो। यह आपकें लिये वास्तविकता बन जायेगा, जब आप आगे पढ़ते जाएंगे।

आपके लिये जीवन बदलने वाले क्षण आगे है। प्रभु आपको हर प्रकार से आशीषित करे जैसे आप एक – एक कदम आगे बढ़ाते हैं। हम एक अदभुत और सामर्थी परमेश्वर की सेवा करते हैं।

अध्याय 1

डेट्रॉइट में अनर्थ

डेट्राइट के होटल के अपने कमरे में पलंग पर लेटा हुआ, मैं आराम कर रहा था तथा खामोशी से प्रार्थना व प्रभु की आराधना कर रहा था। 1980 में वह एक शनिवार की रात थी। घड़ी मध्य रात्रि का समय बता रही थी और मुझे अगली प्रातः व संध्या शहर से बाहर एक कलीसिया में प्रचार करना था।

कुछ क्षण बाद, परमेश्वर की उपस्थिति मेरे कमरे में इतनी तीव्रता से महसूस हुई कि मेरे आँसू निकल कर बहने लगे और में उसकी महिमा में लीन हो गया। उपस्थिति –पवित्र आत्मा की वह अदभुत उपस्थिति , जिसने कई वर्ष पूर्व मेरे जीवन को क्रान्तिकारी कर दिया था, इतनी भारी थी , कि में बाकि सब चीजों को भूल सा गया इससे पहले कि मैं जान पाता, प्रातः के दो बज गये और मैं अभी भी प्रार्थना कर रहा था।

अगली सुबह मैं शीघ्र उठ गया, आराम किया हुआ व शक्ति से परिपूर्ण। आराधना सभा के लिये निकलने से पूर्व मैंने पुनः प्रार्थना की। मैं महसूस कर रहा था कि मेरा प्रार्थना का समय इस बार असाधारण नहीं था। पिछली रात के समान बिलकुल नहीं था, लेकिन उसकी बराबरी करना तो बहुत मुश्किल था।

मैं सभा में गया। जब समय आया तो मैंने प्रचार करना आरम्भ किया। पहले कुछ शब्द कहने के लिये मैंने अपना मुँह खोला और महिमा का एक बादल उस इमारत में आ गया। ऐसा लगता था। शेकेन्याह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की विस्मयकारी पवित्र उपस्थिति महिमा– वहाँ आ गई हो। वह भारी थी ,इतनी भारी कि आप हिल नहीं सकते।
लोग रोने लगे। जब मैं बोल रहा था, कुछ अपनी सीटों से भूमि पर गिर पड़े। वे वहीं पड़े रहे व सिसकियाँ भरते रहे। उनका प्रत्युत्तर आश्चर्यजनक था। यह क्या हो रहा था?

तब मैंने अपनी आँखों को बंद किया और एक शब्द कहा–'यीशु'। ओह ! परमेश्वर की उपस्थिति व सामर्थ उस सभागार में पहले से भी

वृहत रूप से भर गई और लोग हर जगह हिल से गये। कोई भी ऐसा नहीं था, जो प्रत्यक्ष रूप से इससे अनछुआ रह गया हो।

मेरे पास खड़े एक व्यक्ति ने कहा, 'मैंने परमेश्वर की उपस्थिति को ऐसे कभी अनुभव नहीं किया, जैसे इस समय कर रहा हूँ। आँसू उसके चेहरे पर बह रहे थे।

मैं जानता था कि वह सही है। मैंने कभी भी पवित्र आत्मा की उपस्थिति व अभिषेक को किसी सभा में इतने शक्तिशाली रूप से महसूस नहीं किया था।

दोपहर के भोजन का अवकाश

सभा के पश्चात् मुझे रिश्ते की एक बहन के घर , दोपहर के भोजन के लिये जाना था, जो डेट्राइट में रहती थी। मैं उससे कुछ समय से नहीं मिला था, तथा उसके साथ भोजन करने को उत्सुक था।

मेरे पहुँचने पर मेरे रिश्ते की बहन व उसके पति ने मेरा स्वागत किया। हम एक साथ मेज पर बैठ गये व अपने परिचय को ताजा करने लगे। हमारा दोपहर का भोजन बड़ा सुखद था, और हमारा वार्तालाप जीवन्त व रूचिकर था।

यकायक, जब हम अपने भोजन का आनन्द ले रहे थे, मैंने महसूस किया कि प्रभु मेरे हृदय से कुछ कह रहा है। मैं इस भावना को अच्छी तरह जानता था। वह कोमलता से कह रहा था :'जाओ और प्रार्थना करो'। मैं भौचक्का रह गया और अपने मन में प्रत्युत्तर दिया, प्रभु, मैं अभी नहीं जा सकता। मैं इन लोगों के साथ भोजन कर रहा हूँ। मेरा होटल यहाँ से 45 मिनट दूर है, और मेरे पास कोई साधन नहीं है कि मैं वहाँ पहुँच सकूं। इसके अलावा, मैं कैसे भोजन के मध्य में उठकर चला जाऊँ? खमोशी!

हमारा भोजन समाप्त हुआ तथा वह व्यक्ति जो मुझे यहाँ लाया था, उसी ने मुझे वापस मेरे होटल पहुँचाया। मैं इतना थक चुका था कि कमरे में पहुँचते ही मुझे झपकी आ गई।

उस सन्ध्या जब मैं सभा में पहूँचा तो पाया कि सुबह के मुकाबले दोगुनी भीड़ थी। परमेश्वर की सामर्थ इतनी विस्मयकारी थी, कि लोग अभी तक उत्तेजना में थे, व संध्या की सभा की उत्सुकता से प्रतिक्षा कर रहे थे। जब प्रातःकालीन सभा इतनी शक्तिशाली थी, आज रात्रि की सभा कैसी होगी?

वह भिन्न थी

मैं प्रचार करने को खड़ा हुआ, परन्तु जब मैंने अपना मुँह खोला तो कुछ नहीं हुआ– केवल शब्द ! आत्मा का अभीभूत करने वाला अभिषेक नहीं था। कोई सामर्थ नहीं थी।

मैं संघर्ष करता रहा। मैं नहीं जानता था कि अब क्या करूँ। लोगों के चेहरे भावों से मैं बता सकता था कि कई यह सोच रहें हैं कि क्या हो रहा है। सत्य यह है कुछ भी नहीं हो रहा था।

केवल कुछ ही घंटों पूर्व, मैंने बस 'यीशु' शब्द बोला था, और परमेश्वर की सामर्थ सभागार में भर गई थी। लोगों ने परमेश्वर के स्पर्श को अनुभव किया था, जब वह उसकी उपस्थिति में रो रहे थे। परन्तु अब.. ..... मैं सब कुछ कर रहा था जो मैं सोच सकता था और कुछ भी नहीं हो रहा था।

अन्ततः सभा समाप्त हुई। वह एक असफल सभा थी।

मैं अपने होटल के कमरे में इतनी तेजी से नहीं पहुँच सकता था। मैंने कमरे में घुस कर तेजी से द्वार बंद किया व ताला लगा लिया। कितनी राहत ! सभा लगता था अनन्तकाल तक चलती रही!

मैं पलंग में बैठ गया और मेरा मस्तिष्क सारी घटनाओं पर गौर करने लगा, मैं उलझन में व भ्रमित था, 'परमेश्वर यह क्या हुआ? आज प्रातः आपकी उपस्थिति इतनी अभिभूत करने वाली व आपकी सामर्थ इतनी वृहत थी, कि मैं आपकी महिमा में मुश्किल से खड़ा रह पाया। और भावाभिभूत हो आँसू बहा रहे थे।'

मेरे मुख से शब्द निकलते रहे। 'वह बिलकुल स्वर्ग समान था। लेकिन आज रात! क्या गलत हो गया? सभा इतनी खाली क्यो लगी? आपके बिना, इतनी खाली।' अंत में मैं चुप हो गया। और पवित्र आत्मा की कोमल सौम्य आवाज ने कहा, 'आज दोपहर याद है मैं तुम्हें जाकर , प्रार्थना करने के लिये प्रेरित कर रहा था, तुमने अपनी रिश्ते की बहन के पास रहने का फैसला किया। जो स्थान मेरा था वह तुमने अपनी बहन व उसके पति को दिया। तुमने उन्हें मुझसे पहले रखा।'

काफी संयत हो, पर अपना बचाव करते हुये मैंने प्रत्युत्तर दिया,'लेकिन, प्रभु, मैं उन्हें छोड़ नहीं सकता था। मेरी बहन क्या सोचती?'

आवाज अभी भी कोमल व सौम्य थी, 'यह तो मूल्य का एक हिस्सा है बेनी। क्या तुम अभिषेक का मूल्य चुकाने को तैयार हो?'

मुझे पहिले ही बता दिया गया था

हाँ,पवित्र आत्मा की उपस्थिति में सामर्थ है, जिसके विषय में मैंने 'शुभ – प्रभात पवित्र आत्मा ' में लिखा था। और अभिषेक की समार्थ है, जिसके विषय में मैं इस पुस्तक में आपको सिखाना चाहता हूँ । और उसके लिये एक मूल्य है जिसे हममे से प्रत्येक को चुकाना है। डेट्राइट की इस घटना ने एक बार पुनः इन तीन सच्चइयों को स्पष्ट कर दिया। पवित्र आत्मा की उपस्थिति, हमें अभिषेक की सामर्थ में रहने के लिये अग्रसर करती है, यदि हम आज्ञाकारिता का मूल्य चुकाने को तैयार हैं।

कैथरीन कुलमैन ने जो पवित्रआत्मा और आत्मा की उपस्थिति व अभिषेक दोनों ही सच्चाइयों के साथ मेरा परिचय कराने में इतनी महत्वपूर्ण थी,'उस मूल्य ' की चर्चा की जो उसने चुकाया था।

मैं इंग्लैंड में एक व्यक्ति से अपनी भेंट को कभी नहीं भूला, उसके जीवन पर आत्मा का अभिषेक बहुतायत से था। हर बार जब मैं उसके

निकट जाता , मेरी टांगे कांपती कभी कभी मैं दुर्बल महसूस करता, केवल उसकी ओर देखने से ही।

एक दिन मैंने प्रार्थना की, 'प्रभु, तेरा अभिषेक मेरे ऊपर भी वैसा ही हो,जैसा उसके ऊपर है'।

प्रभु ने मुझे प्रत्युत्तर दिया , 'मूल्य चुकाओ और मैं तुम्हें भी दूँगा।'

'मूल्य क्या है?' मैंने पूछा ।

उत्तर एकदम नहीं आया। परंतु एक दिन वह यकायक पवित्रआत्मा द्वारा प्राप्त हुआ! उसने मुझे वह प्रेरितों 4:13 में दिखाया, 'जब उन्होंने पतरस और युहन्ना का हियाव देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया, फिर उनको पहचाना कि ये यीशु के साथ रहे हैं'

कुंजी यही है–यीशु के साथ रहना – बार–बार,–बार–बार,लगातार , दिन में कुछ मिनिट नहीं , कभी – कभार नहीं । डेट्राइट में शनिवार रात को मैं यीशु के साथ था। परंतु बाद में जब उसने कहा , तो मैंने एकांत में उसके साथ रहना अस्वीकार कर दिया।

उपस्थिति और अभिषेक। जैसे–जैसे आप पढ़ते जायेंगे, आप सीखेंगे कि कैसे पवित्र आत्मा आपकी अगुवाई करेगा कि हर दिन परमेश्वर की भरपूरी व सामर्थ को आप अनुभव कर सकें। एक बार जब आप जान जायेंगे कि अभिषेक आपके लिये क्या अर्थ रखता है, उस बहुमूल्य स्पर्श की भरपूर वास्तविकता व गहराई का अनुभव करने के द्वारा, आप कभी भी पहले जैसे नहीं रहेंगे।

अध्याय 2

सबसे बहुमूल्य वरदान

'एक मसीही के नाते आपके लिये सबसे कीमती क्या है?' लोगों ने वर्षों से मुझसे यह प्रश्न किया है। और हर बार मेरा उत्तर एक ही होता है। मेरे उद्धार के अलावा , अभिषेक मेरे लिये सबसे कीमती है।

'अभिषेक' शब्द आप में से कुछ लोगों के लिये अनजान हो सकता है। यह पुस्तक इस स्थिति को बदल देगी।

जैसा मैंने अपनी पिछली पुस्तक 'शुभ – प्रभात–पवित्रआत्मा' में लिखा था, जब से परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा के बहुमूल्य अभिषेक से प्रथम बार मेरे जीवन को अनुग्रहित किया, तब से मैं पहले जैसा न रहा। 'पवित्रआत्मा का अभिषेक '– यह शब्द महत्वपूर्ण है। अभिषेक, पवित्र आत्मा का अभिषेक है, और यह प्रभु यीशु मसीह द्वारा किया जाता है। कोई मनुष्य इसे नहीं कर सकता।

उस महिमामय भेंट होने के बाद , जिसकी चर्चा मैं अगले अध्याय में करूंगा, मैं एक दिन भी उसके बिना जीने के बदले मरना पसंद करूंगा। हमारे इस स्वार्थवादी व मानवतावादी युग में यह नाटकीय जान पड़ता है, परंतु यही सच्चाई है। मेरी निरंतर प्रार्थना केवल यही है और मैं विश्वास करता हूं कि वह आपकी भी हो जायेगी,'परमेश्वर, कृपया अपना अभिषेक मुझसे कभी वापस न लेना। अपने जीवन पर तेरे स्पर्श के बिना, भविष्य का सामना करने के बजाय मैं मर जाना उचित समझूंगा। मैं एक दिन भी न देखूं तेरे पवित्रआत्मा के अभिषेक के बगैर।'

अभिषेक के विशेष स्पर्श के बारे में, जो भी परमेश्वर ने मुझे सिखाया, उसने मुझे हमारे सदा उपस्थित साथी पवित्र आत्मा के साथ अपने संबंध को और भी अधिक बहुमूल्य समझने के लिये प्रेरित किया। अब मैं जानता हूं कि अभिषेक विभिन्न प्रकार का होता है और मैं अगामी अध्यायों में इसका वर्णन करूंगा। और मैं जानता हूं कि यह मेरे लिये संभव है, कि स्वामी को त्याग दूं तथा इस अंतरंग संबंध से वंचित हो जाऊं, जिसका मैं अपने संपूर्ण अस्तित्व से सम्मान करता हूं। यह भी कि मैं स्वेच्छा से किये गये कार्य से, उससे पीठ मोड़ लूं और स्वयं को संगति

से दूर कर लूं। परंतु मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा। जैसा मैने पहले कहा, मैं मरना बेहतर समझूंगा, बजाय इसके कि उसके स्पर्श को खो दूं।

मेरा उद्देश्य, परमेश्वर के साथ अपने संबंध को गहरा बनाना तथा अभिषेक के विस्तृत परिमाण तक बढ़ना है। क्योंकि अविश्वसनीय अनुभवों के बावजूद, जो उसने मुझे दिये हैं, मैं जानता हूं , कि उसके पास और बहुत कुछ है अपने बच्चों के लिये मैं इस अविश्वसनीय, अपूर्व अनुभव में आपको भागी बनाना चाहता हूं।

प्रिय मित्र, मैं चाहता हूं कि आप जाने कि परमेश्वर का विशेष स्पर्श है आज आपके जीवन के लिये। 'यह आपका दिवस है,' जैसा हम दैनिक टेलीविजन कार्यक्रम में घोषणा करते हैं। वह आज हो सकता है और आपके जीवन का हर दिन हो सकता है यदि आप चाहें तो। एक दिन, आपके साथ पवित्रआत्मा की वास्तविकता का – अभिषेक।

आपकी इच्छा पूर्ण हो सकती है

सम्भवतः आप उन बहुतों के समान हैं, जिन्होने कहा है, 'बैनी, मैं परमेश्वर की सामर्थ अपने जीवन में अनुभव करना चाहता हूं, परन्तु मैं वास्तव में नहीं जानता कि इसे कैसे सम्भव करुं। मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूं और मैं जानता हूं कि वह मुझ से प्रेम करता है। वर मेरी तीव्र इच्छा है एक गहरे व घनिष्ठ सम्बन्ध की। मैं 'उसके विषय में' नहीं जानना चाहता, मैं 'उसे' जानना चाहता हूं, और उसकी सामर्थ की वास्तविकता को नियमित रुप से अनुभव करना चाहता हूं।'

विश्वास रखिये कि आपकी आकाँक्षा पूरी हो सकती है। उसने आपकी पुकार को सुना है। पहली बात जो वह चाहता है कि आप जाने, वह है कि उसकी तीव्र इच्छा है कि उसके बच्चे, सभी, उसकी उपस्थिति को अनुभव करें, एक, दो बार नहीं, परन्तु प्रतिदिन उसकी उत्कंठा उनके लिये यह है कि वे न केवल उसकी उपस्थिति, पर उसकी सहभागिता, और सामर्थ को भी जानें।

फिर भी मेरे मित्र, आप परमेश्वर के आभिषेक की सामर्थ को नही जान सकते, जब तक आप परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव न कर लें।

अनेकों ने अभिषेक के सार व वास्तविक अर्थ को गलत समझा है। वे सोचते हैं वह कोई रोंगटे खड़े कर देने वाला अनुभव है, जो केवल भावनाओं पर आधारित है, अतः क्षणिक है, यह सत्य नही है। जब आत्मा का अभिषेक आपके जीवन पर आता है, सारा भ्रम गायब हो जायेगा। आप सदैव के लिये रुपान्तरित हो जाएंगे।

मैं स्मरण कर सकता हूं, प्रथम बार जब वह मीठी, विस्मयकारी, सामर्थी, वेग से आती हुई अभिषेक की नदी मुझमें प्रवाहित हो रही थी। ऐसा लगता था कि जैसे मैं उसके प्रेम के आवरण में लिपट गया था। वह अनुभव त्रुटिहीन था। उसकी उपस्थिति की गर्माहट से मैं घिर गया था। मेरे आसपास सब कुछ धूमिल हो गया, जब मैं पवित्र आत्मा की उपस्थिति का आनन्द उठा रहा था।

इस बारे में कोई संदेह नहीं था कि वह कौन था? मैं उसके प्रेम व निकटता से अभिभूत हो गया। मैं सम्पूर्ण शांति का अनुभव कर रहा था और साथ ही साथ परमआनन्द से फूट पड़ना चाहता था।

आप भी परमेश्वर को इतनी निकटता से जान सकते हैं, जब आप उसके आत्मा की सामर्थ व अभिषेक का अनुभव करते हैं – आज, कल तथा सर्वदा।

क्या आप स्वयं के लिये मरे हुए हैं

जब आप स्वयं का त्याग करते हैं व अपने आप को पूर्ण रुप से रिक्त कर देते हैं, केवल तभी आप परमेश्वर की उपस्थिति से भर सकते हैं। तभी और केवल तभी, आप प्रेरितों 1:8 – सामर्थ की प्रतिज्ञा जिसकी चर्चा मैं बाद में करुँगा, को अपने जीवन में पूरा होते देख सकते हैं। क्योंकि जब उसकी उपस्थिति आपको ढक लेती है तभी उसकी सामर्थ, आप में से बह कर बाहर आना आरम्भ हो सकती है।

इस पुस्तक में मैं आपको बताऊंगा, स्वयं के मरने के बारे में, जो कि अत्यन्त भयभीत करने वाला असम्भव जान पड़ता है। और मैं बताऊंगा कि मैनें प्रथम बार कैसे अभिषेक का अनुभव किया और कैसे उस क्षण ने मेरे जीवन में क्रॉंति ला दी। जैसा मैनें ''शुभ – प्रभात पवित्र आत्मा'' में

लिखा, सब बदल गया – मूल रुप से। उस प्रथम दिन से लेकर, मेरा सम्बन्ध परमेश्वर के आत्मा के साथ निरन्तर गहरा होता गया। वह मेरे हर दिन व हर घन्टे के अस्तित्व का हिस्सा बन गया। मैं कभी अपनी सुबह की शुरुआत नही करता, उसको आमन्त्रित किये बिना, कि वह आये ओर मुझे सारा दिन अपने साथ चलने की शक्ति दे।

यह भी आवश्यक है कि आप समझ लें कि आत्मा आपके जीवन के हर पहलू में सक्रिय रुप से रुचि रखता है। वह बातों को आत्मिक व साँसारिक में नही बांटता। साँसारिक कुछ भी नही, वह हर चीजों में शामिल होना चाहता है और वास्तव में वह है भी।

पुस्तक के प्रथम भाग में, मैं आपको इस व्यक्ति के विषय में बताऊँगा, जिसे पवित्र आत्मा कहते हैं। बहुत से लोग उसके विषय में बहुत कम जानते हैं और वह परमेश्वर है। वह उसकी उपेक्षा करते हैं उससे कभी बात नही करते, कभी उससे नही कहते कि प्रतिदिन, प्रतिक्षण वह उनके अस्तित्व का हिस्सा बने। वे अनुनय – विनय करना व याचना करना अधिक ठीक समझते हैं फिर भी जब उत्तर नहीं मिलते, तो वे क्षुब्ध हो जाते हैं।

कितना गलत है यह! बाइबल कहती है – ''परमेश्वर के निकट आओ, तो वह तुम्हारे निकट आएगा''। (याकूब 4:8) यह करने का समय आ गया है। यह कहने का समय आ गया है, ''मैं यहाँ हूँ'' पवित्र आत्मा आइये, मेरे साथ चलिये पिता के पास जो मेरे लिये हैं, वह प्राप्त करने में मेरी सहायता करिये। प्रभु क्या कह रहा है वह सुनने में मेरी सहायता करिये।''

जब मैं कहता हूँ, ''पवित्र आत्मा, आइये'', तो साँसारिक जीवन की अस्तव्यस्तता व भ्रम सब समाप्त हो जाते हैं। अंधकार प्रकाश में बदल जाता है। मेरा सूना हृदय भर जाता है और मेरे कान पिता की आवाज सुनने के लिये खुल जाते हैं। क्योंकि पवित्र आत्मा की उपस्थिति के घेरे के बिना पिता की आवाज भी नही होगी।

आप पूछ सकते हैं, कि ''यदि पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं और सब कुछ जानता है, तो वह हमारी सहायता क्यों नही करता और जो हमें चाहिये, क्यों नहीं देता?''

उत्तर है कि वह एक सज्जन है और बल पूर्वक हमारे जीवन में नहीं घुस आयेगा। परन्तु जिस क्षण आप कहते हैं ''पवित्र आत्मा मैं जो माँग रहा हूँ उसे पाने में मेरी सहायता कीजिये'' वह आता है और आपकी सहायता करता है, यीशु के द्वारा वह प्राप्त करने में जो आपने पिता से माँगा है। आप देखें कि वह आपके साथ सहभागिता व संगति चाहता है। वह क्षण प्रतिक्षण का सम्बन्ध चाहता है, ऐसा सम्बन्ध, जिसमें आप के अन्दर वास्तव में मसीह का मन हो (1 कुरि0 2:16)

जब पवित्र आत्मा आपके जीवन में एक वास्तविकता हो, वह एक मार्ग प्रदान करता है जिसके द्वारा अभिषेक, सामर्थ बह सके।

क्या आपको स्मरण है, जब पतरस, याकूब और युहन्ना रुपान्तरण के पर्वत पर प्रभु के साथ थे (मत्ती 17:1)? एक बादल ने उन्हे छा लिया। यह बादल क्या है? यह पवित्र आत्मा हैं। जब आप पुराने नियम में पढ़ते हैं कि बादल मिलापवाले तम्बू पर छा गया (निर्गमन 40:34), आप पवित्र आत्मा के विषय में पढ़ रहें हैं।

और जब यीशु अपने जी उठने के पश्चात् स्वर्ग पर चला गया, एक बादल ने उसे ले लिया (प्रेरितों 1:9)। पुनः, यह पवित्र आत्मा था इसी रीति से, जब यीशु आएगा, वह उसी बादल पर सवार हो कर आएगा (प्रेरितों 1:11)।

इन उद्धरणों में, जब प्रभु बोला, आवाज कहाँ थी? वह बादल में थी। पवित्र आत्मा ही हैं, जो परमेश्वर की आवाज को आपके हृदय में स्पष्ट रुप से लाते हैं।

ऐसा दैनिक जीवन, जिसमें यह बातें वास्तविकता हैं। यदि आपने अनुभव नही किया है, आपको यह समझने की आवश्यकता है कि उपस्थिति और अभिषेक क्या हैं? मैं परमेश्वर को सीमित नही करना चाहता तथा इसे भी कि वह आपके जीवन में क्या करेगा, परन्तु मैं यह जानता हूँ कि जब आप आत्मा की उपस्थिति को प्राप्त करते हैं, सात बातें

जो रोमियों की पुस्तक के सुन्दर आठवें अध्याय में पाई जाती हैं, आपके जीवन में घटित होंगीं। उनका मूल्य अपने आप में ही सब कुछ है।

- आप पाप से स्वतंन्त्र हो जाएंगें। अन्य बहुतों के समान आपने भी, अपने जीवन के किसी क्षेत्र में संघर्ष किया होगा, जिसे आप वर्षों से विजित न कर पायें हो। बाइबल कहती है आप पाप की व्यवस्था से तब तक स्वतंन्त्र नही हो सकते, जब तक आप आत्मा के चलाये हुए न चलें।
- धार्मिकता आपके जीवन में स्वाभाविक रुप से आ जायेगी, जब आप 'आत्मा के चलाये हुए' चलना सीखेंगें। उसे बल पूर्वक लाना न पड़ेगा। धार्मिकता के लिये आपके संघर्ष के स्थान पर उसका स्थायी, सरल बहाव होगा।
- आपकी मानसिकता बदल जायेगी। शरीर की बातों पर मन लगाने से आप स्वतंन्त्र किये जाएंगे, ताकि आप आत्मा की बातों पर मन लगायें।
- आप सम्पूर्ण शाँति में होगें। क्योंकि पौलुस कहता है कि आत्मा पर मन लगाना शाँति है।
- आप अपने सिर से पैरों तक चंगाई प्राप्त करेंगें। क्योंकि "जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया वह तुम्हारी मरणहार देहों को भी .... जिलायेगा," जिसकी बड़ी

आवश्यकता मसीह की देह में अधिकांश लोगों को है, स्वयं की पूर्ण रुप से मृत्यू और परमेश्वर के लिये पूर्ण जीवन आप प्राप्त करेंगें। क्योंकि पौलुस कहता है, "यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।" आपको पिता के साथ घनिष्ठता प्राप्त होगी, जब आप आत्मा के द्वारा उसके चेहरे पर द्रष्टि करके कहेंगें, "अब्बा, पिता – डैडी"।

इन सब के ऊपर, सर्वशक्तिमान् की सेवा करने के लिये आप सामर्थ पाएंगे, जिसकी मैं जानता हूँ कि आप लालसा रखते हैं। क्योंकि आप में से बहुतों से मैं व्यक्तिगत रुप से देश भर की आश्चर्यकर्म सभाओं में मिल चुका हूँ। मुझे मालूम है कि प्रथम अध्याय में वर्णित दाम चुकाने के लिये आप तैय्यार हैं।

मैं उत्तेजित हूँ कि मैं आप के साथ यह अनुभव व जानकारी बाँट रहा हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि पवित्र आत्मा की उपस्थिति और उसका अभिषेक जब परमेश्वर के लाखों लोंगों के मध्य में बहुगुणित होगा तो इसी माध्यम से प्रभु इस युग के आवश्यकता में पड़े संसार तक पहुँचेगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस बारे में आप भी उतने ही उत्तेजित हों, जितना मै हूँ।

अध्याय – 3

आरम्भ में

1973 में दिसम्बर की उस रात्रि को, अपने शयनकक्ष के फर्श पर बैठा हुआ, मैं शब्दों से मल्लयुद्ध कर रहा था, जिन्हे मैने कुछ घन्टों पूर्व सुना था। रहस्यमयी शब्द शक्तिशाली शब्द मैने पहले उन्हे क्यों नहीं सुना?

मुझे थका हुआ होना चाहिये था, क्योंकि ग्यारह बजे से अधिक का समय था। सूर्योदय से काफी पहले से, मैं जागा हुआ था। परन्तु मेरा मस्तिष्क, उस जीवन को हिला देने वाले दिन की घटनाओं पर बार – बार चक्कर लगाने से रुक ही नहीं रहा था।

एक मित्र मुझे पिट्सबर्ग में होने वाली एक सभा में ले गया था, जो एक चंगाई देने वाली प्रचारिका द्वारा की गई थी, जिसके विषय में मैं बहुत कम जानता था। उसका नाम कैथरीन कुलमन था। पिट्सबर्ग में मैंने ऐसी बातों को देखा, सुना तथा अनुभव किया, जो मेरे जीवन की दिशा सदा के लिये बदलने वाली थी।

मुझे उद्धार पाये एक या दो वर्ष हुए थे तथा हाल ही में विद्यालय के कुछ मित्रों द्वारा मेरा परिचय चमत्कारिक आन्दोलन से हुआ था। मैं आत्मा द्वारा संचालित जीवन के विषय में लगभग कुछ भी नहीं जानता था। मैं तरस रहा था। मैं हताश था। परन्तु मुझे अपनी आत्मा के परिपोषण के लिये बहुत कम उपलब्ध था। अब यह क्या? उस दिन उसका क्या तात्पर्य था? एक बार पुनः,मैनें कुलमन सभा पर विचार किया। उसके संन्देश का शीर्षक था, ''पवित्र आत्मा की गुप्त सामर्थ।'' इस असाधरण महिला की प्रथम छाप जो मुझ पर पड़ी, वह मुझे याद थी, वह अपने लम्बे, श्वेत परिधान में, मंच के एक सिरे से दूसरे सिरे तक नाच रही थी, तैर रही थी, जैसे किसी अद्रश्य शक्ति के साथ सम्बद्ध हो। मुझे यह भी स्मरण आया कि कुछ शर्मिन्दा करने वाली थरथराहट व कम्पन जो मैनें सभा से दो घन्टे पूर्व तथा एक घन्टा सभा के दौरान महसूस किया, जिसके पश्चात मैं ऐसे हर्षातिरेक में डूब आराधना करने लगा, जिसकी कल्पना मैं स्वप्न में ही कर सकता था। उन घन्टों में, निःसन्देह

मैं जानता था कि प्रभु बिल्कुल वहाँ उपस्थित हैं। उसकी उपस्थिति निश्चित थी।

मेरा प्रार्थना का जीवन, उस समय तक औसतन गम्भीर मन वाले मसीही जैसा था। परन्तु पिट्सबर्ग में उन चन्द घन्टों में केवल मैं प्रभु से बातचीत नहीं कर रहा था, वह भी मुझ से बात कर रहा था। वह मुझे अपना प्रेम दिखा रहा था। वह मुझे अपनी दया व करुणा का विश्वास दिला रहा था। और वह क्या सहभागिता थी।

कुछ समय बाद, मैंने अपनी गहन सहभागिता से देखा, मिस कुलमन सुबक रही थी, उसका चेहरा उसकी हथेलियों में छिपा हुआ था। वह बुरी तरह सुबक रही थीं और कुछ ही समय में सब कुछ शांत हो गया। संगीत थम गया। स्वगतकर्ता जम से गये। ऐसा कुछ क्षणों तक रहा। पाषाण जैसा सन्नाटा।

फिर एक पल में, उसने अपने सिर को एक झटके से पीछे फेंका, उसकी आँखें चमक रहीं थी, प्रज्वलित थीं। प्रज्वलित! मैंने ऐसा कभी नहीं देखा था। उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में निर्भीकता टपक रही थी। तब, एक तीर की तरह उसने अपनी लम्बी उंगली से इशारा किया। उसमें से सामर्थ निकलती हुई प्रतीत हुई। परन्तु उसमें कुछ और भी था – हाँ, पीड़ा और भावना, सब उस क्षीणकाय उंगली से फूट पड़े थे।

क्षण भर के लिये वह पुनः सुबकी, फिर बोली। शब्द 'बोली', वास्तव में उसकी आवाज में निहित वेदना व नाटकीयता को नहीं दर्शाता, पर इससे यथेष्ठ शब्द और नहीं है।

''कृपया'', उसने बिनती की। शब्द जितना खिंच सकता था उतना खिंच गया, ''कृ......प......या, पवित्र आत्मा को शोकित मत करो''। वह पुनः बोली, ''कृपया, पवित्र आत्मा को शोकित मत करो''।

कोई न हिला। मैं तो निश्चित रुप से नहीं, यद्यपि मैनें महसूस किया कि उसकी उंगली का इशारा बिल्कुल मेरी ओर था, जिसने मुझे घबरा दिया और मुझे निश्चय है कि अन्य लोग भी ऐसा ही अनुभव कर रहे थे।

तब ऐसी आवाज में, जिसमें सिसकी शामिल हो, वह कहती गई, ''क्या आप समझते नहीं?'' शब्द हवा में अटक गये, ''मेरे पास केवल वही है।'' मैं न जानता था कि वह किसके विषय में बोल रहीं थीं, परन्तु मैनें सब कुछ आत्मसात कर लिया।

उसने समाप्त नहीं किया थाः ''कृपया, उसे घायल मत करो। मेरे पास केवल वही है। मैं जिससे प्रेम करती हूँ उसे, घायल मत करो!''

मैने पुनः यह दृश्य आपके लिये प्रदर्शित किया – एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात आपके मनों में बैठाने के लिये, जिसे हम मसीहियों को समझ लेना चाहिये, विशेष रुप से जब हम पवित्र आत्मा की उपस्थिति व आभिषेक की प्राप्ति की ओर बढ़ रहे हैं। कैथरीन कुलमन एक व्यक्ति के विषय में बात कर रहीं थीं, एक व्यक्ति जो आप जो आप व मुझसे अधिक वास्तविक है – एक व्यक्ति जो 'वस्तु' नहीं, कोई धुन्ध नही, कोई शक्ति नहीं, न ही कोई भूत जैसा, भयोत्पदक, तैरता हुआ पदार्थ है जिसके साथ – साथ वाद्य – यंत्र व वीणा बजते हैं। पवित्र आत्मा एक व्यक्ति हैं, जिसमें एक व्यक्तित्व है, एक स्वभाव है। और वह परमेश्वर है, त्रिएक ईश्वरत्व का बराबर का सदस्य जिसमें ईश्वरत्व का सम्पूर्ण स्वभाव है। एक अविभाजित परमेश्वर, जो सृष्टि में, छुटकारे में व सशक्तिकरण में कार्यरत था। यह सत्य आप कभी न भूलें।

उस दिसम्बर की रात्रि, टोरन्टो के अपने कमरे में, मैं केवल इतना ही जानता था, कि मुझे वह चाहिये जो कैथरीन कुलमन के पास था। जो भी उसका आशय हो, जब उसने कहा, ''मेरे पास सिर्फ वही है''– वह ही मुझे चाहिये था।

और वह वहाँ था

उस रात्रि में किसी समय, मैने प्रार्थना करने के लिये दबाव महसूस किया, जैसे कोई घुटनों पर आने के लिये खींच रहा था। और पहले शब्द जो मेरे मुँह से निकले वह थे – ''पवित्र आत्मा''। ऐसा मैने पहले कभी नही किया था। अब अनुभव करना कठिन है, लेकिन आपको स्मरण रखना चाहिये कि मैनें कभी यह सोचा भी नही था कि पवित्र आत्मा एक व्यक्ति

हैं जिससे बात की जा सकती है, मैनें केवल पिता और पुत्र से ही बात की थी।

मैनें अपना साहस बटोरा व कहा, ''पवित्र आत्मा, कैथरीन कहती है आप उसके मित्र हैं। मैं नही सोचता कि मैं आपको जानता हूँ। आज से पूर्व मैं सोचता था कि मैं जानता हूँ। परन्तु उस सभा के पश्चात मैंनें जाना कि वास्तव में, मैं आपको नहीं जानता। मैं नही सोचता कि मैं आपको जानता हूँ। क्या मैं आपसे मिल सकता हूँ? क्या मैं सचमुच में आपसे मिल सकता हूँ?''

ऐसा लगा, कुछ भी नही हुआ। पर जब मैं आँखे बन्द करके स्वयं से प्रश्न कर रहा व स्वयं पर संन्देह कर रहा था विद्युत जैसा कुछ मुझ में से होकर प्रवाहित हुआ और मैनें थरथराना शुरु कर दिया, ठीक वैसा ही जैसे पिट्सबर्ग में हुआ था। अन्तर केवल इतना था कि मैं पाजामा पहने हुए टोरन्टो स्थित अपने माता – पिता के घर में, अपने शयन कक्ष के फर्श पर बैठा हुआ था। और काफी रात बीत चुकी थी, पर मैं परमेश्वर की आत्मा की सामर्थ से सिहर रहा था। वह मेरे कमरे में उपस्थित था। मेरा जीवन अब कभी भी पहले जैसा नही रहेगा।

न ही आपका, मेरे मित्र, यदि आप उस पर कार्य करें जो मैं यहाँ कर रहा हूँ।

एक साल भर का पाठ

मेरा परिचय इतना वास्तविक था कि अगली सुबह बड़े सबेरे जागा, मैनें वह किया जो संसार में सबसे स्वाभाविक बात जान पड़ी, ''शुभ–प्रभात पवित्र आत्मा'', और मैं अब भी हर प्रातः यही करता हूँ। वह उपस्थित है और प्रतिदिन प्रातः जागने के प्रथम क्षण से हमारे जीवनों में सम्भागी होने का इच्छुक है।

प्रथम प्रातः काल को गत रात्रि का महिमामय वातावरण बड़ी स्पष्ट रीति से लौट आया, परन्तु कम्पन या सिहरन नहीं थी। मैं केवल उसकी उपस्थिति से ढक गया।

इसके साथ ही, पवित्रात्मा की मधुर उपस्थिति के तीव्र अनुभव का एक वर्ष आरम्भ हुआ। संगति व सहभागिता का एक वर्ष, आत्मा निर्देशित बाइबल अध्ययन का, उसकी सुनने का जिसे परमेश्वर के वचन में शिक्षक, सलाहकार व शाँति देने वाला कहा गया है।

मैने अपनी गत पुस्तक में अपनी उन समस्याओं के विषय में बताया है, जो प्रभु यीशु द्वारा परिवर्तित होने के पश्चात् मेरे परिवार की ओर से आई। इस्त्राएल में एक यूनानी परिवार में जन्म लेने के कारण, जहाँ मेरे पिता याफा के मेयर थे और रोमन कैथलिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने के कारण, (मेरे परिवार ने पूरी तरह मेरा बहिष्कार कर दिया), जब मैनें सार्वजनिक रुप से प्रभु यीशु को ग्रहण कर लिया, परिस्थिति इतनी खराब हो गई, कि मेरे पिता मुझसे बात भी नहीं करते थे और दूसरे नातेदार मेरा तिरस्कार या मेरी उपेक्षा करते थे।

गंम्भीर रुप से हकलाने के कारण मैं धराप्रवाह बोल सकने में असमर्थ था, जिससे स्थिति और खराब हो गई। इसका अर्थ यह था कि मैं घन्टों, अकेले अपने कमरे में बिताता था। परन्तु पवित्र आत्मा के साथ मेरे परिचय के बाद, यह मेरे भले के लिये ही हुआ, जिससे मुझे उसकी उपस्थिति की अगणनीय सम्पन्नता में आनन्द करने का अवसर मिल गया।

बहुत समय बीता न था, कि मैं मिस कुलमन के समान ही उस उपस्थिति को जीवन में सबसे अधिक मूल्यवान समझने लगा। मैं एक ऐसी अनुभूति की बात कर रहा हूँ, जो पवित्र आत्मा के बपतिस्मे, अन्य भाषा बोलने तथा अन्य सामान्य चमत्कारिक मसीही जीवन के पहलू, जो मैनें अनुभव किये, से कहीं बढ़कर है। जी हाँ, मैं अन्य भाषा में बोलता था और एक चमत्कारिक कलीसिया में विश्वासयोग्यता से जाता था। लेकिन इस अनुभव में इन सब से बढ़कर कुछ था।

पवित्र आत्मा मेरे लिये वास्तविक हो गया। वह मेरा साथी बन गया। जब मैं बाइबल खोलता, मैं जानता था, वह मेरे साथ है मानो वह मेरे पास बैठा है। उसने धैर्य से मुझे सिखाया व मुझ से प्रेम किया। यद्यपि मैंने उसका चेहरा नहीं देखा, परन्तु मैं जानता था कि वह कहाँ है। और मैं उसके व्यक्तित्व को जानने लगा।

यीशू ने कहा था, वह अपने शिष्यों – आपको व मुझे असहाय नहीं छोड़ेगा, परन्तु एक को भेजेगा, जो हमारे साथ रहे व हमारा मार्ग दर्शन करे। और अब मैं प्रत्यक्ष रुप से जानता था कि उसने अपना वचन पूरा किया है।

उद्देश्य प्रगट किया गया

यह आवश्यक है कि मैं ''शुभ – प्रभात पवित्रआत्मा'' से एक प्रसंग को दोहराऊं, इन महत्वपूर्ण अनुभवों को परिपेक्ष्य में रखने और यह दर्शाने के लिये कि मसीही जीवन का अभिप्राय, ''आशीषित करो, मुझे दे दो, क्लब'' बनना नहीं है।

प्रभु से बार – बार पूछने के बाद कि वह मुझे अपनी उपस्थिति की वास्तविकता का अनुभव क्यों दे रहा है, मैनें एक भयावह दर्शन देखा। मैनें देखा, कोई मेरे सामने खड़ा है, लपटों से घिरा हुआ और अनियन्त्रित रुप से हिलता हुआ। उसके पैर फर्श को नही छू रहे थे। उसका मुँह खुल व बंन्द हो रहा था, जैसे ''दाँत पीसना'' बाइबल में वर्णित है।

उसी क्षण प्रभु ने, सुनी जाने वाली आवाज में कहा ''सुसमाचार प्रचार कर''। मैनें प्रत्युत्तर दिया : लेकिन प्रभु, मैं बोल नहीं सकता।''

दो रात्रि पश्चात् मैनें एक स्वपन देखा। मैनें एक स्वर्गदूत देखा जिसके हाथ में एक जंजीर थी, वह एक द्वार से जुड़ी हुई थी जो स्वर्ग को भरता प्रतीत होता था। उसने उसे खींच कर खोला और जहाँ तक आँख देख सकती थी वहाँ लोग ही लोग थे। वे सब एक बड़ी, गहरी खाई की ओर बढ़ रहे थे और वह खाई एक नरक था। हजारों अग्नि में गिर रहे थे। अगली पंक्तियों वाले लोग संघर्ष करने का यत्न कर रहे थे, परन्तु इतने मनुष्यों का दबाव उन्हे लपटों में धकेल देता था।

पुनः प्रभु नें मुझ से कहा, ''यदि तू प्रचार नहीं करेगा, मैं तुझे उत्तरदायी ठहराऊँगा।'' मैनें तत्काल ही जान लिया कि सब कुछ मेरे जीवन में, हाल ही के महिनों में हुए मेरे अविश्वसनीय अनुभवों सहित, एक ही उद्धेश्य के लिये था – मुझे प्रचार करने के लिये अग्रसर करना।

एक प्रभावशाली परिवर्तन

दिसम्बर 1974 के आरम्भ में मैं, स्टैन व शर्ली फिलिप्स से मिलने ओशावा गया, जो टोरन्टो से लगभग 30 मील पूर्व की ओर है, और मैनें अब तक प्रचार करने के दर्शन का आज्ञापालन नहीं किया था। वास्तव में मैनें अपने अनुभवों, स्वपनों व दर्शनों के विषय में किसी को नहीं बताया था। पर अब यह स्थिति बदलने वाली थी।

''क्या मैं आपको कुछ बता सकता हूँ? मैने पूछा उन दोनों ने उत्सुकता से सिर हिलाया और मैनें अपना हृदय उनके समक्ष उंडेल दिया, कम से कम जहाँ तक मेरे हकलाने ने मुझे बोलने दिया। वे बहुत धीरजवान थे और लगभग तीन घन्टे तक सुनते रहे।

अन्ततः स्टैन बीच में बोला और उत्साहपूर्वक कहा, ''बैनी, आज रात्रि तुम हमारी कलीसिया में चलो और सबको यह बताओ।''

ओशावा में''ट्रिनिटी असेम्बली ऑफ गॉड'' में लगभग सौ लोंगों का समूह था जो शीलोह कहलाता था, स्टैन, शर्ली उसी समूह का हिस्सा थे। सो उस संध्या मैं उनके साथ गया – लम्बे बाल, अनौपचारिक परिधान, हकलाती हुई जिव्हा और भी बहुत कुछ मैं न जानता था कि क्या होगा। मैं जानता था कि मुझे सुसमाचार प्रचार करने को कहा गया था, परन्तु मैं यही सोचता था कि प्रचार करना शायद छोटी पुस्तिकाओं द्वारा होता है।

आराधना सभा के पूर्वार्द्ध में जब श्रोताओं में बैठा था, मैं अब तक न जानता था कि क्या होने जा रहा है। मैं अत्यन्त घबरा गया व भयभीत हो गया। मैं स्वयं को मूर्ख सिद्ध करने जा रहा था और हरेक मुझ पर हंसेगा। मैं यह सब और अधिक नहीं चाहता था।

शीघ्र ही, स्टैन ने जो उसी क्षेत्र के नाभिकीय केन्द्र में एक वैज्ञानिक था, मेरा परिचय कराया और मैं पुलपिट की ओर जा रहा था। मैं कभी किसी पुलपिट के पीछे नहीं खड़ा हुआ था।

स्टैन ने कहा था,''अपने अनुभवों को बताओ'', और यही मैं करने जा रहा था। मैनें अपना मुँह खोला अत्याधिक भयभीत होकर, और किसी वस्तु नें मेरी जीभ को छुआ व उसे सुन्न कर दिया। मैं नें बोला,

धाराप्रवाह तेजी से, वास्तव में कुछ अधिक ही तेजी से। मुझे स्वयं से कहना पड़ा कि धीमें हो जाओ।

मैं सुसमाचार प्रचार कर रहा था। यह असम्भव जान पड़ता था परन्तु मैं स्पष्टता व निर्विध्न रुप से बोल रहा था। और मैं रुका नहीं।

मैंनें उन्हे बताया – उनमें अधिकाँश युवा लोग थे – अपने कमरे में पवित्र आत्मा से मिलने के बारे में और तब लगभग एक वर्ष तक उससे बातचीत करने, उससे प्रश्न पूछने तथा उसकी सुनने के विषय में।

''आप पवित्र आत्मा से कैसे मिलते हैं?'' मैनें वाकपटुता से पूछा। ''अपने घुटनों पर, सीघे लेटे हुए, कमरे में चलते हुए, प्रार्थना करते हुए। आप केवल गीत गाते हुए ही उससे नहीं मिलते हैं।''

मैं कहता गया, ''केवल एक ही रास्ता है पिता, पुत्र व पवित्र आत्मा तक पहुँचने का – वह है प्रार्थना द्वारा।

इस प्रकार बातचीत मैं लगभग एक घन्टे तक करता रहा, तब मुझे बोध बोध हुआ कि मुझे समाप्त करना चाहिये परन्तु मै उन्हे मूसा के विषय में बताना चाहता था, क्योंकि पवित्र आत्मा ने मुझे ऐसी अतंर्दृष्टि दी जो मुझे आज भी चकित कर देती है, और यकायक ही मैं निर्भीक होता जा रहा था।

''मूसा ने यहोवा से कहा; अब कोई भी यह कह नहीं सकता जब तक कि वह महापवित्र स्थान में न हो'' मैने कहा। ''वह समय था, चालीस दिन के बाद, इससे पहले कि वह कह सकता, स्मरण कीजिये, परमेश्वर ने उसे स्पर्श किया था, उनकी संगति से फूट पड़ी थी आराधना, सुन्दरता व परम आनन्द, सर्वशक्तिमान् की उपस्थिति, उसमें साहस आ गया था, तभी वह कह सका, 'मुझे अपनी महिमा दिखा'।

''उसने मूल्य चूकाया था,'' मैने कहा, ''वह कह रहा था, ''यहोवा, मै यहाँ तेरे पास गत चालीस दिन से हूँ। मेरा शरीर कुछ भी नही रह गया। मुझे अपनी महिमा देखने दे।'' और यहोवा उसके सामने से होकर गुजरा। और यद्यपि उसने केवल उसकी पीठ ही देखी, उसने महिमा देखी, परमेश्वर का अद्‌भुत तेज।''

मै चुप न हुआ। ''क्या आप परमेश्वर की उपस्थिति चाहते हैं?'' ''मैनें पूछा।'' तब अपनी खो दीजिये। स्वयं को दृष्टि से ओझल कर दीजिये और आप परमेंश्वर को देखेंगें।''

मैने समाप्त किया और सोचा कि, ''मैं प्रार्थना करने जा रहा हूँ।'' अपने कमरे में, जब भी मैंनें पवित्र आत्मा को आमंत्रित किया है मैं सदैव लड़खड़ा जाता और गिर भी जाता था, इतना कि मैं सुरक्षित स्थान को तलाश करता, खड़े होने या घुटने टेकने के लिये, यहाँ तक कि मैं अपनी पीठ दीवार के साथ लगा लेता। परन्तु मुझे कोई अपेक्षा नहीं थी कि ऐसा कुछ एक आम सभा में होगा।

अतः मैनें अपने हाथ उठाये व कहा, ''पवित्र आत्मा, आपका यहाँ स्वागत है, कृपया करके आइये।''

तुरन्त परमेश्वर की सामर्थ उस स्थान पर उतर आई। लोग रोने व फर्श पर गिर पड़े।

''ओह, प्रिय परमेश्वर, अब मैं क्या करुं?'' मैनें पूछा। मैं उस व्यक्ति कि ओर मुड़ा, जो सभा की अगुवाई कर रहा था, इस आशा से कि वह आएगा और सभा को मेरे हाथों से ले लेगा। पर जैसे मैं मुड़ा व उसकी ओर इशारा किया, वह कई फुट दूर, पीछे की ओर गिर पड़ा। मैं उसे बुलाना चाहता था कि वह मेरे निकट आये और अचानक वह दूर चला गया। कोई मेरे निकट नहीं आ पा रहा था। तब मुझे महसूस हुआ कि, गत एक वर्ष में ऐसे सब समयों पर, यदि कोई मेरे कमरे में होता तो सामर्थ के प्रभाव से गिर गया होता। अगुवे ने मेरे निकट आने के कई प्रयत्न किये, पर हर बार वह दीवार से टकरा गया।

अन्त में मैं लोगों से बातें करता रहा। कई अपने घुटनों पर थे, अभी भी रो रहे थे। मैनें उन्हे पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के विषय में और बताया। अन्त में और प्रार्थना न करते हुए मैने समाप्त कर दिया।

यशायाह 10:26 कहता है कि ''जुआ तोड़ा जायेगा अभिषेक के कारण।'' और वास्तव में यही हुआ। शैतान का अधिकार जीवनों पर से नष्ट किया जाता है जब अभिषेक आता है। यह मेरे व मेरी जीभ के साथ था और यही सत्य था मंडली के लोगों के लिये।

जैसा मैने बाद में और अधिक महसूस किया,''धार्मिक'' क्रियाकलाप, उच्चस्वर में बोलना, रोना, विलाप करना, यह सब परमेश्वर की सामर्थ प्रगट होने के लिये आवश्यक नही हैं। अधिकाँशतः ये बाधा ही बनते हैं, क्योंकि ये शरीर से भी आ सकते हैं और परमेश्वर वास्तविक सामर्थ दर्शाना चाहता है। हमारी सबसे बड़ी इच्छा आत्मिक वरदान पाने की नहीं, परन्तु परमेश्वर की उपस्थिति व सामर्थ पाने की होनी चाहिये। वरदान हो सकता है आपका आत्मिक जीवन परिवर्तित न करें, परन्तु उपस्थिति व सामर्थ अवश्य करेंगें। और यही है जिसका स्वाद मैं प्रथम बार उस रात ओशावा में चख रहा था।

इन सब वर्षों में जैसा मैंने सैकड़ों बार कहा है परमेश्वर कभी देर नहीं करता। वह बहुत जल्दी भी नही करता परन्तु वह कभी बहुत देरी भी नही करता। जब सुन्नपन आता है मैं कहता हूँ, ''यह वही है'' और आवेशित हो जाता हूँ। पवित्र आत्मा का अभिषेक आया, मैं चंगा हो गया और मेरे प्रचार में एक सामर्थ आ गई।

आश्चर्यजनक रुप से से मरी सेवा आरम्भ हुई और तत्काल ही उसमें तीव्र वृद्धि हुई। वास्तव मे हर दिन सेवा करने के निमंत्रण आने लगे, कलीसियाओं से, मंडलियों से।

यह ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बात है कि मैं ने पवित्र आत्मा की उपस्थिति एक वर्ष अनुभव की थी और यह कि उसने मुझे एक पूरे वर्ष अति सावधानी से, प्रेम पूर्वक सिखाया, मुझे आश्वस्त किया, उत्साहवर्धन किया, मुझ से प्रेम किया। मेरी समझ की सम्पूर्ण भरपूरी तक, मैनें उसका पूरी तरह आज्ञापालन किया और मुझे आभिषेक प्राप्त हुआ, बिलकुल ऐसा ही आपके लिये भी होगा। यह हर एक के लिये है। एक बार आप यह समझ लें, कि अभिषेक आपके लिये क्या अर्थ रखता है, उसके अनमोल स्पर्श की गहराई व बहुमूल्य वास्तविकता को अनुभव कर लें, तो जीवन आपके लिये नया अर्थ ले लेगा जब आप उस सेवा के स्थान पर जायेंगें, जो प्रभु ने आपके लिये रखी है।

एक कड़ी चेतावनी

उस रात्रि ओशावा से घर जाना मैं कभी नही भूलूंगा। मैं स्तभित था। एक घन्टे पश्चात जब मैं अपने पंलग पर लेटा हुआ था, मैं अब तक सुन्न व उस संध्या की घटनाओं से दुविधा में था। मैंने परमेश्वर की सच्ची सामर्थ को देखा था। कैथरीन कुलमन के कथन कि, ''यदि तुम्हे सामर्थ मिल जाये, – यदि तुम्हे सामर्थ मिल जाये – तुम्हे स्वर्गीय खजाना मिल जायेगा'' के उत्तर की झलक, एक क्षणिक झलक मुझे मिल गई थी। वह केवल एक संकेत था, मुझे और समझने की आवश्यकता थी। मैं कितना अनुभवहीन था।

''प्रभु आज रात्रि तूने क्या किया?'' मैनें अंधेरे में पूछा।

सहसा मुझे एक तत्काल उत्तर मिला, ''विश्वासयोग्य रहो।'' बस यही। ''विश्वासयोग्य रहो।''

अगली सुबह उठने के कुछ समय बाद मैने रेडियो को चालू किया, अपनी आदत के अनुसार जब मैं गिरजे जाने के लिये तैय्यार हो रहा होता, तो मैं गिरजों में चल रही आराधना सभाओं को सुनता था। पहली बात जो मैनें सुनी और मुझे कोई सुराग नही है कि वक्ता कौन था – ''सावधान रहो जो सामर्थ तुम्हारे पास है उसका तुम क्या करते हो''। तब उसी घड़ी कार्यक्रम का प्रसारण बन्द हो गया। मैं इसे समझ नहीं सकता। मैनें रेडियो चालू किया, एक आवाज ने कहा, ''सावधान रहो, जो सामर्थ तुम्हारे पास है उसका तुम क्या करते हो।'' और आवाज लुप्त हो गई। मब मैनें नॉब घुमाकर दोबारा ढूढ़ने की कोशिश की, वह आवाज मुझे नही मिली।

निस्संदेह, अब मैं महसूस करता हूँ कि पिछली रात के शब्द ''विश्वासयोग्य रहो'' और अगली सुबह रेडियो पर कड़ी चेतावनी, दोनो जुड़े हुए थे। उनका साराँश यही था, ''जो सामर्थ मैने तुम्हे दी है उसके विषय में सावधान रहना। उसके साथ खेल न खेलना। उसका दुरुपयोग न करना।''

यह चेतावनी उन सभों के लिये है जो आत्मा के अभिषेक के इच्छुक हैं तथा उसे पा लेते हैं। आप इस योग्य हों कि परमेश्वर आप पर भरोसा कर सकें।

उसकी तीव्र इच्छा रहती है कि हम उसकी उपस्थिति व उसके अभिषेक को जाने व अनुभव करें। जब हम स्वयं को त्याग देगें, हम उसकी उपस्थिति को जानेंगें। केवल तभी उसकी सामर्थ – पवित्र आत्मा के अभिषेक का अनुभव कर सकेंगे। परन्तु भरोसा कर सकने का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण है। परमेश्वर जो भी इतनी उदारता से देता है उसके लिये हमें विश्वासयोग्य रहना है।

अध्याय – 4

अन्ततः उत्तर मिला

जब मैं अपने बीते जीवन पर दृष्टि डालता हूँ और देखता हूँ कि कितनी ही तरह से यह भिन्न हो सकता था, मैं परमेंश्वर के अनुग्रह व दया पर आश्चर्यचकित रह जाता हूँ।

जरा सोचिये! मैं एक अत्याधिक पारम्परिक मध्य – पूर्वीय परिवार में उत्पन्न हुआ, जिसमें अनुशासन व परम्परा पर बड़ा जोर दिया जाता था और व्यक्तिगत परमेश्वर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था। मैं इस्त्राएल में एक यूनानी के रुप में पैदा हुआ व पला – बढ़ा और रोमन कैथलिक विद्यालयों में नन्स द्वारा शिक्षित किया गया। बचपन के आरम्भ में ही मैं बुरी तरह हकलाने लगा, जिसने मौखिक वार्तालाप को अविश्वसनीय रुप से कठिन, लगभग असम्भव ही कर दिया। 15 वर्ष की आयू में, मैं अपनी जन्मभूमि से उखाड़ दिया गया, जब मेरा परिवार टोरन्टो आया। मैं एक चौथी भाषा – अंग्रेजी सीखने पर विवश किया गया, अरबी, इब्रानी व फ्राँसीसी के बाद जिन्हे मैं पहले कैथलिक विद्यालयों में बोला करता था। मैं कैथलिक विद्यालय की सीमित चार – दीवार से टोरन्टो के पब्लिक स्कूल में ले जाया गया। मैं एकान्त प्रिय, शाँत, लज्जालु व अनिश्चय में रहने वाला व्यक्ति था।

पथ प्रदर्शिकाएं व परम्पराएं

जब मैं 19 वर्ष का था, प्रभु ने अद्‌भुत रीति से, मेरे साथ के कुछ विद्यार्थियों द्वारा, मुझे बचाया। यद्यपि उसके साथ मेरी बड़ी महिमामय मुलाकातें हो चुकी थीं, जैसे स्वपनों व दर्शनों में।

मेरे पुनः जन्म से पूर्व, मैं अपने ऊपर के अधिकारियों के सब निर्देशों व मार्गदर्शन के अनुरुप करने की चेष्टा करता था। कैथलिक शिक्षा के साथ जो भी रीति – रिवाज सम्बन्ध हैं, उन्हे मैं पूर्ण करता और ईमानदारी से उन सब की आज्ञापालन करने का प्रयत्न करता था, जिन्हे मैं अपने जीवन में परमेश्वर का प्रतिनिधी समझता था। मैं एक अच्छा

विद्यार्थी था और जैसा नन्स ने बताया, वह सब करता था (कैथलिक गिरजाघर के पास से गुजरते हुए क्रूस का चिन्ह बनाना, निरन्तर प्रार्थना करना और इसी प्रकार की अन्य बातें)। मुझे निश्चय है कि मैं स्वयं को मसीही समझता था, परन्तु मुझे सम्पूर्णता या भरपूरी की अनुभूति नहीं थी।

उद्धार के अनुभव के तुरन्त बाद, मैंने टोरन्टो के मध्य में स्थित 3 हजार युवाओं की एक कलीसिया में जाना आरम्भ कर दिया। मैं उस प्रकार की चमत्कारिक सभा का अभ्यस्त नहीं था, जहां लोंगों के प्रत्युत्तर पूर्वानुमानित नहीं, पर स्वतः उत्पन्न व विभिन्न स्तरों पर होते थे। मुझे अधिक आदत थी संयमी, समझी – बूझी और पूर्वानुमानित क्रिया कलापों की।

ये अलग प्रकार के लोग थे। वे एक दूसरे को गले लगाते व आनन्द उनके चेहरों से झलकता प्रतीत होता था। निःसन्देह उस समय मैं चमत्कारिक आन्दोलन के विषय में कुछ भी नहीं जानता था। मैं केवल यह जानता था कि मैं एक अपरिचित वातावरण में हूं।

आँशिक रुप से, आत्मिकता का गलत मूल्याँकन करने के कारण, मेरी सबसे गम्भीर प्रतिक्रिया, कुछ समय पश्चात हुई, जब मैंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लिया। मैं एक विशेष व्यक्ति को ध्यान से देखता, जिसे मैं कलीसिया में सबसे आत्मिक व्यक्ति समझता था। मैं उसे हाथ ऊपर उठाते हुए देखता, वह उन्हे लगभग निरन्तर ही ऊपर रखता। उसका शरीर तनिक – सा हिलता। उसके होंठ कांपते, जबकि उसकी आँखे स्वर्ग की ओर देखती। और जब वह इस अनजानी भाषा – अन्य भाषा में प्रार्थना करता – वह सदैव एक ही बात कहता जैसे किसी बात को बार – बार दोहरा रहा हो। हर बार जब मैं उसे प्रार्थना करते सुनता, वह समान होती। वह हिलता, वह एक ही बात कहता।

अनभिज्ञ व परमेश्वर की बातों के लिये लालायित, मैं एक दिन उसके पास गया और पूछा कि क्या मैं उससे बात कर सकता हूँ। वह काफी मैत्रीपूर्ण लगा ''मैं और पाने के लिये भूखा हूँ।'' मैने कहा, ''जो मैं तलाश कर रहा हूँ उसे कैसे पा सकता हूँ? उसने मेरी ओर देखा और पूछा, ''क्या तुम्हे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला?''

''हाँ'' मैंने उत्तर दिया, मार्ग दर्शन पाने को उत्सुक होकर।

''क्या तुम अन्य भाषा बोलते हो?'' उसने पूछा।

''हाँ'' मैनें उत्तर दिया।

उसने मेरी ओर देखा और स्वाभाविक रुप से कहा —''फिर और क्या चाहिये?'' मैं स्तब्ध रह गया और एक क्षण सोचने के पश्चात चुपचाप चला गया। मैं और अधिक क्या चाहता हूँ? मैनें सोचा। यदि यही सब कुछ है, तो मै नहीं सोचता कि ये बहुत कुछ है।

परमेश्वर को पाने की तीव्र इच्छा मुझ में थी, मैं अपनी आत्मा में निश्चयपूर्वक जानता था कि अभी और भी है। बाइबल के पृष्ठ ऐसा कहते हैं, परन्तु मैं नही जानता था कि क्या करुँ। मैं नही जानता था कि परमेश्वर क्या देना चाहता है, अथवा उसे कैसे प्राप्त करुं। कोई मेरी सहायता करता प्रतीत न होता था।

1973 में मैनें कलीसियाएं बदलीं और एक अद्भुत व्यक्ति से मिला जिसका नाम जिम पॉयन्टर था। वह फ्री मैथोडिस्ट का सेवक था, जो मेरा प्रिय मित्र बन गया व जिसने एक दिन मुझे कैथरीन कुलमन सेवकाई से परिचित कराया। इसी से वे सब घटनाएं आरम्भ हुई जिनका वर्णन मैनें पिछले अध्यायों में किया है। वर्ना मैं परमेश्वर की अद्भुत उपस्थिति और पवित्र आत्मा के अभिषेक के विषय में न जान पाता, जिनमें से दोनों ही प्रत्येक विश्वासी के लिये हैं।

प्रभु हमको उससे कहीं अधिक देना चाहता है जितना हममें से अनेक लोग विश्वास करते हैं कि असम्भव है। मैं आपको बताना चाहता हूँ किन — किन तरीकों से प्रभु नें मुझे सिखाया, उस विस्मयकारी दिन से, जब उसने मेरी जीभ को खोल दिया और मुझे सेवा के लिये शक्ति देना आरम्भ किया। ये अद्भुत सम्भावनाएं आपके लिये भी हैं। और मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर आपको प्रेरित करे, और आगे ले कर चले ताकि इस असाधारण समय के लिये, जिसमें हम रहते हैं, हम एक साथ उसकी योजना को पूरा करें।

वह कैसे आरम्भ हुआ

इससे पूर्व कि मैं बताऊँ उन तरीकों के बारे में, जिनसे प्रभु ने मुझे सिखाया व सेवकाई के लिये सामर्थी किया, मैं आपको वापस ले जाकर, पिट्सबर्ग में उस महिमामय दिन जो हुआ, उसे और गहराई से दर्शाना चाहता हूँ, जब कैथरीन कुलमन की एक सभा में मेरी भेंट पवित्र आत्मा से हुई।

दिसम्बर 21,1973 का दिन प्रातः 5 बजे आरम्भ हुआ, जब मैं और मेरा नया मित्र जिम पॉयन्टर एक बड़े समूह के साथ, टोरन्टो से पिट्सबर्ग एक अनुबन्धित बस द्वारा बर्फ के भयंकर तूफान में से होते हुए आये। होटल में अपने बिस्तरों पर हम केवल चार घन्टें पूर्व ही पड़े थे।

जिम ने जोर दिया कि पिट्सबर्ग के मध्य में स्थित ''फर्स्ट प्रेसबेटेरियन चर्च हमें 6 बजे तक पहूँच जाना चाहिये, अन्यथा हमें बैठने का स्थान नहीं मिलेगा। अत्एव, घोर अधंकार था जब हम वहाँ पहुँचे। फिर भी वहाँ सैकड़ों लोग उपस्थित थे और द्वार दो घन्टे तक खुलने वाले नहीं थे। जमा देने वाली सर्दी थी और मैं जो भी मेरे पास था सब कुछ पहने हुए था — जूते, दस्ताने और बहुत कुछ

छोटे होने के भी कुछ लाभ हैं। मैनें इंच — इंच करके द्वार की ओर खिसकना आरम्भ किया, जिम को अपने साथ घसीटते हुए। भीड़ देख कर मुझे विश्वास न हुआ ''हर सप्ताह ऐसा ही रहता है'' एक स्त्री बोली।

जब मैं वहाँ खड़ा था, यकायक मैनें काँपना शुरु कर दिया — जैसे किसी ने मेरे शरीर को जकड़कर हिलाना शुरु कर दिया था। एक क्षण के लिये मैनें सोचा कि मैं भयंकर हवा की चपेट में हूँ। परन्तु मैने अच्छी तरह गर्म कपड़े पहने हुए थे और निश्चित रुप से मुझे सर्दी नही लग रही थी। अनियन्त्रित कम्पन ने मुझे छा लिया था। ऐसा कुछ पहले कभी नही हुआ था। और वह रुक भी नही रहा था। लज्जा अनुभव करने के कारण मैनें जिम को नही बताया, परन्तु मैं महसूस कर रहा था। कि मेरी हड्डियाँ तक बज रहीं हैं। इसे मैनें अपने घुटनों में महसूस किया। मुँह में महसूस

किया। मुझे क्या हो रहा है? मैने सोचा। क्या यह परमेश्वर की शक्ति है? मैं समझ नहीं पाया।

आगे के लिये दौड़

इस समय तक द्वार खुलने ही वाले थे और भीड़ आगे की ओर बढ़ती आ रही थी, यहाँ तक कि हिलना मुश्किल हो गया। अभी तक कम्पन रुका नही था।

जिम बोला, ''बैनी, जब ये द्वार खुलें जितनी तेज दौड़ सको दौड़ना।''

''क्यों?'' मैनें पूछा।

''यदि नहीं दौड़ोगे, तो लोग तुम्हारे ऊपर से दौड़ लगा देंगें।'' वह पहले भी वहाँ आ चुका था।

मैनें कभी नहीं सोचा था कि चर्च जाने के लिये मुझे दौड़ लगानी पड़ेगी, पर मैं वही कर रहा था। और जब द्वार खुले, मै ओलम्पिक धावक की तरह दौड़ पड़ा। मैनें सब को पीछे छोड़ दिया, बूढ़ी स्त्रियां, युवा, पुरुष सभी को। वास्तव में, मैं सबसे आगे की पंक्ति में पहुंच गया और बैठने लगा। एक स्वागतकर्ता ने मुझे बताया कि प्रथम पंक्ति आरक्षित है। बाद में मैनें जाना कि मिस कुलमन के कार्यकर्ता चुने हुए लोंगों को प्रथम पंक्ति में बैठाते हैं। वह आत्मा के लिये अति संवेदनशील थीं, कि वे केवल सकारात्मक, प्रार्थनामय सहयोगियों को ही अपने एकदम सामने चाहती थीं।

मेरे गम्भीर रुप से हकलाने की समस्या के कारण, मै जानता था कि कि स्वागतकर्ता से बहस बेकार था। द्वितीय पंक्ति भर चुकी थी, परन्तु जिम व मैंने तीसरी पंक्ति में खाली स्थान पा लिया।

अभी एक घन्टा शेष था, सभा के आरम्भ होने में, अतः मैने अपना कोट, दस्ताने व जूते उतार लिये। जब मैं सुस्ता रहा था, मैनें पाया कि मैं पहले से अधिक थरथरा रहा था। वह रुक नहीं रहा था। तंरगें, मेरी बाहों व टागों में से होकर गुजर रहीं थीं, जैसे मै किसी प्रकार की मशीन से

जुड़ा हुआ हूँ। यह अनुभव मेरे लिये अजनबी था। सत्य कहूँ, मैं भयभीत था।

जैसे ही ऑर्गन बनजे लगा, मैं सिर्फ अपने ही कम्पन के बारे में ही सोच सका। वह कोई 'अस्वस्थता' की अनुभूति नहीं थी। ऐसा नही लग रहा था कि मैं सर्दी व वाइरस से बीमार हो रहा हूँ। वास्तव में, जितनी ज्यादा दे रवह चलता रहा, उतना ही सुन्दर होता जा रहा था। वह एक असाधारण अनुभूति थी जो कतई भी शारीरिक नहीं जान पड़ती थी।

उसी क्षण, कैथरीन कुलमन प्रगट हुई, मानो कहीं से भी निकल कर नहीं आई हों। पलभर में, उस इमारत का वातावरण उत्तेजनामय हो गया मैं न जानता था कि किस बात की अपेक्षा करुँ। मैं अपने आस – पास कुछ भी महसूस नहीं कर रहा था। आवाजें नहीं। स्वर्गीय स्वर्गदूतों का गान नहीं। कुछ भी नहीं। मैं केवल यही जानता था कि मैं तीन घन्टों से काँप रहा हूँ।

तब, जब गीत गाना आरम्भ हुआ, मैनें स्वयं को वह करते पाया जिसकी मैनें कभी अपेक्षा नहीं की थी। मैं अपने पैरों पर खड़ा था। मेरे हाथ ऊपर उठे हुए थे व अश्रु मेरे चेहरे पर से बह रहे थे, जब हम गा रहे थे, '' प्रभु महान, कितना महान''।

ऐसा लगता था मानो मैं फूट पड़ा था। पहले कभी भी मेरी आँखो से आँसू इतनी तेजी से नही बहे। परम आनन्द की क्या बात! वह भावना तो महिमा की चरम सीमा थी।

मैं ऐसे नही गा रहा था जैसे मैं साधारणतयः चर्च में गाता हूँ। मैं अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से गा रहा था। और जब हम उन शब्दों पर आये – '' प्रशंसा होवे प्रभु यीशु की, कितना महान, कितना महान'', मैनें अक्षरशः अपनी आत्मा से गाया।

मैं उस गीत के भावों में इतना खो गया था कि मुझे कुछ क्षण, यह महसूस करने में लगे कि मेरी कंपकंपी थम गई है।

परन्तु सभा का वातावरण वैसा ही बना रहा। मैनें सोचा मैं स्वर्ग पर उठा लिया गया हूँ। मैं जिस प्रकार आराधना कर रहा था, वह मेरे सारे अनुभवों से कहीं बढ़ कर था। वह अनुभव ऐसा था जैसे शुद्ध

आत्मिक सत्य से आमना सामना हो जाये। बल्कि किसी ने महसूस किया या नही, मैनें तो किया।

अपने लघु मसीही अनुभव में, परमेश्वर ने मेरे जीवन को स्पर्श किया था, पर ऐसे कभी नहीं जैसे वह उस दिन छू रहा था।

लहर की तरह

जब मैं वहाँ खड़ा, प्रभु की आराधना कर रहा था, मै ने अपनी आँखो को खोला, चहुँ ओर देखने के लिये, क्योंकि अचानक मुझे हवा का एक झोंका महसूस हुआ। मैं नही जानता था कि वह कहाँ से आ रहा है। वह कोमल व धीमा था, पुरवाई की तरह।

मैने रंगीन काँच की खिड़कियों की ओर देखा, पर वे सब बन्द थीं। और वे, ऐसे झोंके के आने के लिये बहुत ऊँची थी।

असाधारण वायू जो मैनें, अनुभव की, एक तंरग की तरह थी। मैने महसूस किया कि वह एक बाँह से नीचे जाती व दूसरी से ऊपर आती थी। मैनें वास्तव में उसे गति करते हुए महसूस किया।

क्या हो रहा था? क्या मुझमें कभी इतना साहस होगा कि मैं किसी को बता सकूँ, जो मैने महसूस किया? वे सोचेगें मेरा दिमाग खराब हो गया है।

लगा, मानो दस मिनट तक उस वायू की तंरगें, मुझे भिगोती रहीं। और तब मैनें अनुभव किया जैसे किसी ने मेरे शरीर को निर्मल कम्बल में लपेट दिया हो – गर्माहट के कम्बल में।

कैथरीन ने लोंगों की सेवकाई आरम्भ की, पर मैं आत्मा में इतना खोया हुआ था, कि मेरे लिये उसका कोई महत्व न था। प्रभु पहले कभी इतना निकट न था।

मैनें पाया कि मुझे प्रभु से बात करनी चाहिये, पर मै केवल यही फुसफुसा सका, ''प्यारे यीशू, कृपा करके मुझ पर दया करना'' मैने पुनः कहा ''यीशु कृपया, मुझ पर दया करना''

मैने स्वयं को इतना अयोग्य पाया। मैने अपने को यशायाह की तरह महसूस किया, जब उसने परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश किया था।

हाय मुझ पर, कि मैं नाश हुआ!
क्योंकि मैं अशुद्ध होंठों वाला मनुष्य हूँ
और मैं अशुद्ध होंठों वाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ
क्योंकि मेरी आँखों ने राजा को देख लिया है।
सेनाओं के यहोवा को (यशायाह 6:5)

यही होता है जब लोग मसीह को देखते हैं। उन्हे तुरन्त अपनी गन्दगी व शुद्ध किये जाने की आवश्यकता नजर आती है।

यही है, जो मेरे साथ हुआ। ऐसा लगता था, मानो एक बड़ी रोशनी मेरे ऊपर केन्द्रित थी। मैं केवल अपनी कमजोरियाँ, अपनी गलतियाँ और अपने पाप ही देख पा रहा था।

बार – बार मैनें कहा, ''प्यारे यीशु, कृपा करके मुझ पर दया करना।''

तब मैने एक आवाज सुनी, जो मैं जानता हूँ कि प्रभु की होगी। वह अति कोमल थी परन्तु सुस्पष्ट थीः उसने मुझसे कहा, ''मेरी दया तुझ पर बहुतायत से है।''

मेरा प्रार्थना का जीवन उस समय तक एक सामान्य औसत मसीही का था। पर उस क्षण उस सभा में केवल मैं प्रभु से बात नहीं कर रहा था, वह मुझ से बात कर रहा था। और ओह! वह क्या सहभागिता थी!

मुझे इसका पूर्ण बोध नहीं था कि पिट्सबर्ग में स्थित फर्स्ट प्रेसबेटेरियन चर्च की तीसरी पंक्ति में बैठे हुए, जो मेरे साथ हो रहा है वह केवल एक पूर्वानुभव मात्र है, उन बातों का जो परमेश्वर ने मेरे भविष्य के लिये योजनाबद्ध की है।

वे शब्द मेरे कानों में गूँजने लगे–''मेरी दया तुझ पर बहुतायत से है।''

मैं बैठ गया – रोते व सुबकते हुए। जो मैं महसूस कर रहा था मेरे जीवन में ऐसा कुछ नहीं था, जिससे मैं उसकी तुलना कर सकता। मैं आत्मा से इतना परिपूर्ण व रुपान्तरित हो गया था कि किसी और बात का महत्व न रहा। मुझे कोई परवाह नही थी यदि पिट्सबर्ग पर एक नाभिकीय बम गिर जाये व सारा संसार नष्ट हो जाये। उस क्षण मैं ऐसा

अनुभव कर रहा था, जैसा वचन में वर्णित है, शाँति ..... जो सारी समझ से बिलकुल परे है (फिलि. 4:7)।

मिस कुलमन की सभाओं में होने वाले आश्चर्यकर्मों के बारे में जिम ने मुझे बताया था। परन्तु मुझे कतई अनुमान नहीं था कि अगले तीन घन्टो में मैं क्या देखने जा रहा हूँ। लोग जो बहरे थे, यकायक सुनने लगे। एक स्त्री अपनी पहियेदार कुर्सी से उठकर खड़ी हो गई। ट्यूमर, जोड़ों के दर्द, सिर दर्द, और भी अनेक प्रकार की चंगाई की साक्षियां थीं। उसके तीव्र आलोचक भी यह स्वीकार करते थे, कि उसकी सभाओं में वास्तविक चंगाईयां मिलती हैं।

सभा लम्बी थी, पर लगा एक पल में गुजर गई। अपने जीवन में कभी भी मैं परमेश्वर की सामर्थ द्वारा इतना भावाभिभूत व प्रभावित नहीं हुआ था।

बाद की एक सभा

पवित्र आत्मा के साथ उस आश्चर्यजनक भेंट के कुछ समय पश्चात, मैं एक और कुलमन सभा के लिये लौटा, जिसमें उसने अपनी सेवकाई पर अभिषेक के लिये चुकाये गये मूल्य व पवित्र आत्मा की सामर्थ के भेद के विषय में बताया। उसने स्वयं के लिये मरने, क्रूस उठाने, मूल्य चुकाने के विषय में बात की। बहुधा उसने इस प्रकार की बातें कहीं जैसे आप में से कोई भी सेवक वह पा सकते हैं जो मेरे पास है केवल यदि आप दाम चुकायें तो।

उस सभा में मैनें यह समझना आरम्भ किया कि एक और ऊँचा अनुभव भी है, पवित्र आत्मा की उपस्थिति मात्र से बढ़कर। एक आभिषेक है, सेवा के लिये शक्ति पाना और वह मिलता है मूल्य चुकाने पर।

मूल्य को समझना

दाम क्या है? मुझे कई वर्ष लग गये इसे समझने में और मैं आपको बताना चाहता हूँ। भजन संहिता 63 में दाऊद कहता है –

''हे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है,

मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा;
सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर,
मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर
तेरा अति अभिलाषी है।
इस प्रकार से मैनें पवित्र स्थान में
तुझ पर दृष्टि की,
कि तेरी सामर्थ और महिमा को देखूँ।''

उसने परमेश्वर की सामर्थ व महिमा की एक झलक देखी थी। वह उसकी लालसा कर रहा था। पर वह उसे कैसे प्राप्त कर सकता था?

यहाँ पर पवित्र आत्मा ने मेरी आँखों को खोलना और मुझे समझाना आरम्भ किया, कि मिस कुलमन का क्या अर्थ था, जब उसने मूल्य की व मरने की बात की।

दाऊद कहता है कि उसका शरीर परमेश्वर का ''अभिलाषी'' है जब कि उसका मन ''प्यासा'' है। इस बीच यशायाह 26:9 में कहता है कि अपनी आत्मा के साथ वह परमेश्वर को ''ढूंढेगा''। सो हमारे पास शरीर है जो परमेश्वर की अभिलाषा करता है, मन प्यासा है व आत्मा ढूंढ़ती है। ध्यान देने योग्य बात है कि मूसा ने जिस तम्बू का वर्णन किया है, उसमें हम पाते हैं: बाहरी प्राँगण, जो शरीर को दर्शाता है, पवित्र स्थान जो मन को दर्शाता है, और महापवित्र स्थान, जो आत्मा को दर्शाता है। अभिलाषा एक व्यक्ति को बाहरी प्राँगण तक ले जाती है; प्यास उसे पवित्र स्थान तक ले जाती है, और खोज उसे महापवित्र स्थान की ओर अग्रसर करती है।

अतः जब हम परमेश्वर की अभिलाषा करते हैं, हम प्रार्थना में जाते हैं जो वह स्थान है जहाँ परमेश्वर हमसे बातचीत करना व हमारे शरीर को क्रूस पर चढ़ाना आरम्भ करता है। वह एक संघर्ष का स्थान है जहाँ पर, जब हम प्रतिदिन घुटनों पर आते हैं, आरम्भ में केवल हम अपने दोष, अपनी असफलताओ, अपनी महान आवश्यकताओं के विषय में ही सोच सकते हैं। हम स्वयं को बार – बार दोहराते हैं और परमेश्वर लाखों मील

दूर प्रतीत होता है। हम सोचते हैं कि क्या हम कुछ कर पा रहे हैं। हम नींद में पड़ जाना, एक अवकाश लेना, कुछ भी करना चाहते हैं।

हमें तत्काल ही जिस बात का बोध नहीं होता, वह यह है कि, जितनी देर अधिक हम अपने घुटनों पर रहे हैं, उतना ही कम शरीर बचता है। एक मृत्यू आरम्भ हो जाती है, जब हम घुटनो पर रहते है।

शीघ्र ही, जब परमेश्वर शरीर को क्रूस पर चढ़ाना समाप्त कर देता है, एक परिवर्तन आता है – जिसे आप महसूस करते हैं – और यकायक आपकी प्रार्थना वास्तविक हो जाती है। आपके अन्तर से एक नदी वेग से प्रवाहित हो उठती है और आपके शब्द सार्थक हो जाते हैं। परमेश्वर की उपस्थिति आती है और कुछ वास्तविक आपके साथ होता है यहाँ तक कि आप रोना भी आरम्भ कर सकते हैं।

स्मरण रखिये, यह प्रतिदिन का मामला है। परिवर्तन सदा के लिये एक ही बार नही आता "मै हर दिन मरता हूँ" पौलुस 1 कुरिन्थियों 15:31 में कहता है। एक संघर्ष होगा, हर बार जब हम इस प्रकार की प्रार्थना में जायेंगें। उपस्थिति व अभिषेक आज नही आयेंगें, क्योंकि आप (20) बीस वर्ष पूर्व मरे थे। वे आज आएंगें क्योंकि आप आज सुबह ही मरे थे। परमेश्वर बची हुई वस्तुओं का प्रयोग नही करता।

जब बदलाव आयेगा, आप उसे ऐसे जानेंगें कि दोष – भावना गायब हो जायेगी। दोष – भावना की अनुपस्थिति का अर्थ है कि आप वहाँ पहुँच गये हैं। आप ने उसे खोजा व पा लिया।

एक बिन्दु पर, तब उनके लिये "प्यास" आयेगी। आपका मन परमेश्वर के लिये प्यासा होगा। दाऊद ने भजन संहिता 42:1–2 में कहा है –

> जैसे हिरणी नदी के जल के लिये हाँफती है
> वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हाँफता हूँ।
> जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं प्यासा हूँ,
> मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखाँऊगा?

बिलकुल यही हमारे साथ भी होता है। हमारा मन प्यासा होता है जीवते परमेश्वर के सामने जाने के लिये। वह उसकी उपस्थिति का प्यासा होता है।

दाऊद की कल्पना बड़ी पूर्ण है। एक हिरण जल को खोजता है – दो कारणों से, प्रथम, क्योंकि वह प्यासा है और दूसरा क्योंकि एक अन्य पशु उसका पीछा कर रहा है। वह जानता है उसकी गंध समाप्त हो जायेगी यदि वह पानी में उतर जाये। वह सुरक्षित होगा। ऐसा ही हम विश्वासियों के साथ है। हम परमेश्वर की उपस्थिति के लिये प्यासे रहते हैं, क्योंकि वह हमारे मनों को सन्तुष्ट करती है और कोई शत्रु हमें छू नही सकता शैतान हमें ढुंढ़ नही सकता। इसलिये दाऊद ने यह भी लिखा "तू मेरे छिपने का स्थान है।" (भजन संहिता 32:7)

अतः जब आप वह जल पा लेते हैं जिसके लिये आपका मन लालायित था, आप में प्रशंसा फूट पड़ेगी। आप जान जायेंगें कि आप पवित्र स्थान में हैं, जहाँ स्तुती सच्ची है। वहाँ पर नित्यक्रम और स्वाभाविक बातें जैसे, "प्रभु की स्तुती हो, प्रभु तेरा धन्यवाद हो" बिलकुल न होगीं। वह वास्तविक हो जायेगी। आपके अस्तित्व का हर भाग उसे धन्यवाद दे रहा होगा – यहाँ तक कि उन बातों के लिये, जिनके लिये एक घन्टा पूर्व आप उसे घन्यवाद नहीं दे सकते थे। सब कुछ सुन्दर बन जायेगा।

अब महापवित्र स्थान

क्या आपको स्मरण है कि भजन संहिता 63:2 में दाऊद परमेश्वर की सामर्थ व महिमा देखने की इच्छा करने के बारे में कहता है। यह दाम के तीसरे चरण के साथ आता है, ढुंढ़ना व स्वयं के लिये मरना, यह अभिषेक से पूर्व आना आवश्यक हैं। यह महापवित्र स्थान में मिलता है। जो आत्मा का प्रतीक है। यह वह स्थान है जहाँ आप कुछ नही कहते, कुछ नही करते। आप प्रार्थना नहीं करते आप नहीं गाते। आप प्राप्त करते हैं।

दाऊद का अर्थ इसी स्थान से था जब उसने भजन संहिता 42:7 में कहा – ''तेरी जल धाराओं का शब्द सुन कर, जल, जल को पुकारता है। तेरी सारी तरंगों और लहरों में मैं डूब गया हूँ।

बाहरी प्राँगण में, मेरा मुख परमेश्वर से बात कर रहा था। पवित्र स्थान में, मेरा मन बात कर रहा था। महापवित्र स्थान में, मेरी आत्मा बोलती है – जल, जल को पुकारता है। यही वह स्थान है, जहाँ निरन्तर प्रार्थना का जन्म होता है – जहाँ आप परमेश्वर की महिमा से सराबोर हो जाते हैं। आप आभिलाषा नहीं करते आप प्यासे नहीं हैं। आप पी रहें हैं।

''शाँत रहो और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ।'' दाऊद ने भजन संहिता 46:10 में लिखा। आप इतने भरे हुए हैं कि आप बता नहीं सकते। शब्द असमर्थ हैं। आप सम्पूर्ण रुप से उसकी उपस्थिति में हैं। वह आपके लिये क्या कर सकता है इसमें आपकी रुचि नहीं है, आप उसे जानने में रुचि रखते हैं।

जो ऐसा अनुभव करते हैं, वे ही हैं, जिन्हें परमेश्वर आभिषेक देने का भरोसा कर सकता है, जैसा कि आप बाद में देखेंगें। परमेश्वर उन को अभिषेक देने का भरोसा नही कर सकता जो उससे प्रेम नहीं करते, जो उसे प्रथम स्थान पर नही रखते।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जब आप प्रतिदिन महापवित्र स्थान में प्रवेश करेंगें, यह आधिक स्वाभाविक, शीघ्र हो जायेगा। बदलाव आने में आपको आधा घन्टा नहीं लगेगा, पाँच मिनट भी लग सकते हैं। ऐसे भी समय आये हैं कि, जिस क्षण मैंनें कहा, ''प्रभु!'' वह वहाँ था। एक और बात, जितना अधिक आप परमेश्वर की उपस्थिति में बितायेंगें, उतना ही प्रभाव आप पर दिखाई देगा। उपस्थिति गहरी होती जायेगी, आप ऐसा कह सकते हैं।

उदाहरणार्थ, प्रथम बार जब आप उसकी उपस्थिति को पायें, आप कमरे से बाहर आ कर, अपनी पत्नी से कह सकते हैं – ''प्रिय कैसी हो?'' जब आप बात करेंगें, वह जान जायेगी कि आप परमेश्वर की उपस्थिति में रहे हैं। एक सप्ताह पश्चात, जब आप अधिक और अधिक समय प्रभु के साथ बिताएंगे, आप बाहर आयेंगें और आपके कुछ कहने से पूर्व ही, वह

महिमा को महसूस कर लेगी। आपको कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

पतरस प्रेरित के साथ यह इस सीमा तक पहुँच गई कि पतरस की परछांई पड़ने से ही लोग आशा रखते थे कि चंगाई मिलेगी (प्रेरितों 5:15)

सामर्थ धारण करना

इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए, अब हम यशायाह 52:1–2 को देखेंगें।

''हे सिय्योन, जाग, जाग!
अपना बल धारण कर
हे पवित्र नगर यरुशलेम
अपने शोभायमान वस्त्र पहन ले
क्योंकि तेरे बीच खतना रहित और अशुद्ध लोग
फिर कभी प्रवेश न करने पाएंगें
अपने ऊपर से धूल झाड़ दे
हे यरुशलेम उठ, हे सिय्योन की बन्दी बेटी
अपने गले के बन्धन को खोल दे।''

''जागने'' का तात्पर्य वचन में, प्रार्थना करने का है। जब वह कहता है ''जाग'', ''जाग'', उसका अर्थ है '' प्रार्थना कर, प्रार्थना कर''। आप स्मरण करेंगें कि जब प्रभु गतसमनी के बाग में अपने धोखा देने वाले की प्रतीक्षा कर रहा था, तब उसने शिष्यों को सोता हुआ पाकर कहा, ''जागते रहो व प्रार्थना करते रहो, (मत्ती 26:41) अथवा जाग्रत रहो व प्रार्थना करते रहो, सतर्क रहो।''

यह एक आज्ञा है; हमें प्रार्थना करना चाहिये। यिर्मयाह 10:25 दर्शाता है कि परमेश्वर प्रार्थना रहित लोंगों का न्याय करेगा – ''जातियाँ जो तुझ से प्रार्थना नही करतीं'' – संसार के साथ हमें आज्ञा दी गई है कि परमेश्वर को खोजें।

अतएव, वचनाँश आरम्भ होता है हमें बताते हुए कि जाग, जाग, अपने को झिंझोड़ कर आलस्य को दूर करें, दाम चुकायें, अपनी सम्पूर्ण शक्ति से प्रभु को खोजें, गहन प्रार्थना में, गहन प्रेम में प्रविष्ट हो, उसे अपनी सर्वप्रथम प्राथमिकता दें। तब छः बातें घटित होंगी –

1) हम आत्मिक शक्ति धारण करेंगें – शैतान के विरुद्ध, शक्ति – पाप के विरुद्ध, शक्ति परीक्षा के विरुद्ध। निर्बलता समाप्त होगी।
2) हम नवीन पवित्र वस्त्र धारण करेंगें, धार्मिकता के वस्त्र। पाप हमें छूने नही पायेगा।
3) खतना रहित व अशुद्ध हमारा भाग नहीं होंगें। हम अब दुष्ट के संग संगती नहीं रखेंगें।
4) हम यहाँ वहाँ दौड़ना बन्द कर देंगें कि काई हमारे लिये प्रार्थना करे या हमें मुसीबत से निकालें। हम स्वयं को झटका देकर धूल में से उठ खड़े होंगें – अपनी दुर्दशा से, अपनी अस्त – व्यस्त स्थिति से। हम उठ खड़े होंगें तथा हम स्वतंत्र होंगें।
5) और तब हम बैठ कर आराम कर सकते हैं। हमारे पास शाँति होगी – सच्ची शाँति, यीशू की शाँति।
6) हम स्वयं को शैतान तथा पाप के चंगुल से छुड़ा लेंगें, जो बार – बार हमारे पास आता है।

सिक्के का दूसरा पहलू

यदि हम यशायाह 52:3–2 पढ़ते जायें, तो हम, न जागने अथवा प्रार्थना न करने के परिणामों को पाते हैं। यह निश्चय ही हममें से प्रत्येक को हिला कर जगा देगा :–

क्योंकि यहोवा यों कहता है, तुम जो सेंतमेंत बिक गये थे इसलिये अब बिना रुपया दिये छुड़ाये भी जाओगे। प्रभु यहोवा यों भी कहता है, मेरी प्रजा पहिले तो मिस्त्र में परदेशी होकर रहने को गई थी, और अश्शूरियों ने भी बिना कारण उन पर अत्याचार किया। इसलिये यहोवा

की यह वाणी है कि मैं अब यहाँ क्या करुँ जबकि मेरी प्रजा सेंतमेंत हर ली गई है? यहोवा यह भी कहता है कि जो उन पर प्रभुता करते हैं वे उधम मचा रहे हैं, और, मेरे नाम की निन्दा लगातार दिन भर होती रहती है।

प्रार्थनारहित जीवन के छः दुष्परिणाम हमें दिखाई देते हैं :–

1) क्योंकि हम जागते नहीं हैं, हम बिना किसी दाम के शैतान के हाथों बिक जायेंगें।
2) हम मिस्त्र को चले जायेंगें अर्थात वापस संसार में।
3) हम पर अत्याचार किया जायेगा।
4) हम गुलामों के समान ले जाये जायेंगें।
5) हम रोयेंगें व चिल्लायेंगें, उस दासत्व में जिसमें हम हैं।
6) दुष्ट परमेश्वर की निन्दा करेंगें, एक स्थिति जो हम आज अपने देश में देखते हैं, क्योंकि हम मसीही प्रार्थना नही करते।

और इसी बिन्दू पर, यशायाह जागृत होने अथवा प्रार्थना करने के सुपरिणामों की ओर मुड़ता है। वह बताता है कि

परमेश्वर क्या कहता है :–

इस कारण मेरी प्रजा मेरा नाम जान लेगी;

वह उस समय जान लेगी कि जो बातें करता है वह यहोवा ही है; ''देखो, मैं ही हूँ।'' (यशायाह 52:6)

आवश्यक रुप से, वह कहता है कि सच्ची प्रार्थना से एक सातवीं आशीष यह है, कि हम परमेश्वर को व उसकी सामर्थ को जानेगें।

अन्त में, जो मूल्य चुकाता है, वह प्रभु के लिये महानतम सेवा के लिये प्रयोग किया जायेगा, यशायाह 52:7 के शब्दों में :–

''पहाड़ों पर उसके पाँव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो बातें सुनाते है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, तेरा परमेश्वर राज्य करता है।''

निर्णय करने का समय

पवित्र आत्मा के सिखाने से जब एक बार मैंने समझ लिया कि जिस मूल्य की बात मिस कुलमन कर रही थी, वह केवल ''जागने, दूसरे शब्दों में प्रार्थना पर आधारित है – मैनें निर्णय किया कि मैं मूल्य चुकाऊँगा। अन्ततः, मैने जान लिया कि मुझे उत्तर मिल गया है उस बात का जब वह कह रही थी कि, ''यदि तुम्हें सामर्थ मिल जाये, तो तुम्हे स्वर्ग का खजाना मिल जायेगा''

मूल्य चुकाने व प्रार्थना करने का निर्णय हर मसीही को स्वयं अपने आप करना है कोई उसके लिये निर्णय नहीं ले सकता। पौलुस 1 कुरि. 9:27 में बड़े मर्मस्पर्शी ढंग से लिखता है – ''मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूं ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरुं'' (अथवा ''व्यर्थ हो जांऊ'')

परमेश्वर हमें प्रार्थना करने के सारे अवसर देता है और उसके लिये हमें बुलाता है। परन्तु वह हमें बलपूर्वक नहीं कराएगा। निर्णय हमारा हैं।

जिस क्षण आप प्रार्थना को 'न' कहते हैं – ''मैं बहुत थका हुआ हूँ ''या'' मेरा मन नहीं है'' – आपका वास्तविक रुप है एक मूर्तिपूजक का आपने निम्न स्वभाव के सामने समर्पण कर दिया है और आपके शरीर ने परमेश्वर का स्थान ले लिया है।

आपको सच में यह समझने की आवश्यकता है। परमेश्वर आपसे प्यार करता है। वह आपकी सहायता करेगा, परन्तु वह आप पर बल प्रयोग नहीं करेगा। प्रभु सदा अगुवाई करता है पर शैतान सदा धक्के से करवाता है। यह आप पर निर्भर है कि आप उस शरीर को गर्दन से पकड़ कर कहें कि ''नही, मैं प्रार्थना करने जा रहा हूँ।''

उत्पत्ति के आरम्भ के अध्यायों में शरीर के सामने समर्पण करने का अत्यन्त गम्भीर खतरा दर्शाया गया है। परमेश्वर ने पुरुष (तथा स्त्री) को आत्मा, प्राण, देह का प्राणी बनाया पर शैतान ने हव्वा व आदम की परीक्षा द्वारा मनुष्य को उलटी दिशा में फेर दियाः देह, प्राण व आत्मा।

शरीर विजयी हुआ और हम यह दुखद शब्द उत्पत्ति 6:3 में पाते हैं – ''और यहोवा ने कहा, मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है।'' शैतान ने मनुष्य को उल्टा कर दिया।

शरीर के आगे समर्पण करना परमेश्वर से विद्रोह करना है। वह आपको मार डालेगा। और आप यही करते हैं, जब आप प्रार्थना करने से इन्कार करते हैं। परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति का प्रयोग नहीं करेगा जो उल्टा कर दिया गया हो और निश्चित रुप से वह उसका अभिषेक नहीं करेगा।

परमेश्वर को खोजना आरम्भ करिये। मूल्य चुकाइये। अपने जीवन को सही दिशा में ऊपर करिये और वह आपको सिर से पाँव तक अभिषेक करेगा।

परमेश्वर का दूरभाष नम्बर है यिर्मयाह 33:3 और वह आपकी प्रतीक्षा कर रहा है – ''मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी – बड़ी और कठिन बातें बताऊँगा, जिन्हे तू अभी नही समझता।''

उसकी यह प्रतिज्ञा है, यदि आप उसे पुकारेंगेंः प्रथम, वह आपको उत्तर देगा, वह आपसे बोलेगा। द्वितीय, वह आपको नया दर्शन देगा और आप उसकी महिमा देखेंगें। तीसरा, वह आपको नया ज्ञान देगा, बातें जो आपने उसके बारे में कभी नही जानीं।

अध्याय – 5

न तो बल से

अपनी सेवा में पहली बार बीमार पर हाथ रखना एक आश्चर्यजनक अनुभव था। मैं जानता था कि सुसमाचार प्रचार के हिस्से के रुप में प्रभु ने मुझे रोगियों के लिये प्रार्थना करने को कहा है, जैसा उसने शिष्यों से मरकुस 16:18 में कहा था – ''वे रोगियों पर हाथ रखेगें व रोगी चंगे हो जाएंगे।''

परन्तु मेरे लिये ये नया था और शैतान कुछ समय से मेरे मस्तिष्क में व्यर्थ बातें भर रहा था। वास्तव में, मैं बस स्टाप पर खड़ा था जब मैं दूसरी बार प्रचार करने जा रहा था और बीमारों पर हाथ रखने की योजना बना रहा था जब उसने बड़ी विशिष्ट रीति से मेरे विचारों में कहाः ''कुछ नही होगा। कोई थी चंगा नहीं होने वाला। यह नही हाने वाला – कुछ भी नहीं – कुछ भी नहीं।''

जैसा आप अपेक्षा कर सकते हैं, मुझमें यह भयंकर अनुभूति, यह भय समा गया कि अभिषेक नहीं आयेगा। पर तब मैं रुक नहीं सकता था।

सभा में, यह चिन्ता अभी भी मुझे जकड़े हुए थी, जब मैं प्रचार किया व लोगों को चंगाई के लिये, आगे आंमत्रित किया। आरम्भ के वर्षों में, साधारणतयः मैं लोगों के लिये एक – एक करके प्रार्थना करता था, जैसा आज कल अधिकांशतः मेरी आश्चर्यकर्म सभाओं में होता है, उसके विपरीत।

सो यहाँ वह व्यक्ति था, प्रतीक्षा में, कि मै प्रार्थना करुं। मुझे यह भयंकर अनुभूति हो रही थी। मैं भयभीत था। ''प्रभु तू कहाँ है?'' मैंने सोचा। ''अब क्या करुँगा? तूने ही यह करने को कहा था।

मैनें अपना हाथ इस व्यक्ति के चेहरे की ओर बढ़ाया, और तत्काल ही पवित्र आत्मा का अभिषेक आ गया। मैं जान गया। वह डगमगाया और नचे गिर गया, जैसे ही पवित्र आत्मा की सामर्थ उसमें से हो कर गुजरी। वह अपने रोग से चंगाई पा गया।

जैसा मैंने अपने प्रथम सुसमाचार प्रचार के साहसपूर्ण कदम और अपने हकलाने की तत्काल चंगाई की घटना में देखा था, परमेश्वर कभी भी समयपूर्व नही आता, परन्तु वह कभी भी विलम्ब नही करता। ऐसा प्रतीत होता है कि वह तब तक प्रगट नहीं होता, जब तक आपका हाथ व्यक्ति के ऊपर रखा न जाये, अथवा जब तक आपका मुँह बोलने के लिये खुल न जाये। ठीक जिस समय आप सोचते हैं कि अब आप मरने वाले हैं, वह प्रगट होता है।

क्यों? वह आपके विश्वास को बढ़ा रहा है। वह आपको आगे आने वाले और कठिन कार्यों के लिये तैय्यार कर रहा है। याकूब कहता है कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है – या सहन शक्ति और लगन। और तुम ''धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे।'' (याकूब 1:3 – 4)

उन आरम्भिक पाठों में, मैं किस दबाव से हो कर गुजरा, आप कभी न जान पाएंगें। मैं बहुधा घर जाना चाहता था ''हे परमेश्वर, मैं सोचता, ''वे मुझ पर हंसने वाले हैं। मैं बड़ी गड़बड़ करने वाला हूँ।''

और तब अभिषेक आता, क्योंकि बहुत परीक्षण व परिपक्वता की आवश्यकता थी, यदि मैं परमेश्वर का इच्छित व्यक्ति बनने जा रहा था।

आपके साथ भी ऐसा ही है। जब आप पवित्र आत्मा की उपस्थिति व आभिषेक के लिये तैय्यार होते हैं, उस कार्य को करने के लिये, जिसके लिये प्रभु ने आपको बुलाया है, आपको आवश्यकता होगी – परीक्षण की, और विस्तार की और पूर्ण होने की कल का अभिषेक, आज का अभिषेक नही होगा।

शाँत रहने की आशीष

कैथरीन कुलमन की सभाओं में हमेशा बहुत गीत संगीत होता था, और अक्सर वह गाने में बड़े जोश और आनन्द से शामिल होतीं। और तब

ऐसे भी समय आते जब वह श्रोताओं से कहतीं, ''धीमे से, अब धीमें से।'' मैं अपने आप सोचता कि वह ऐसा क्यों कह रहीं हैं।

तब एक बार जब मैं वहाँ था, वह बोली, ''हर एक जन कृपया शाँत हो जाए।'' स्पष्ट था कि वह गम्भीर थी और प्रत्येक जन एकदम शाँत हो गया। चार्ली, संगीत बजाने वाला इतने धीमें बजा रहा था कि उसके लिये चार्ली के समान कोई न बजा सकता था। बाकी सब कुछ और हर जन शाँत था।

यह लगभग दस तिनट तक चलता रहा। शाँति तब इस व्यक्ति ने जो आगे की ओर बैठा था, अपने हाथों में, जिन्हे उसने अपने न मुँह व नाक के ऊपर रखा हुआ था, फुसफुसाना आरम्भ किया, ''यीशु, तेरी स्तुती हो। यीशु, तेरी स्तुती हो।'' मैं नही सोचता कि कोई उसे सुन सकता था, और मुझे निश्चय है कि उसे स्वयं भी उसका ज्ञान न था।

एकदम मिस कुलमन जोर देते हुए बोली, ''महाशय, मैनें कहा शाँत हो जाइये।'' सम्पूर्ण शाँति हो गई सिवाय चार्ली के कई मिनट बीत गये। और अन्त में वह बोली, कठिनाई से सुन सकने वाली आवाज में, सिर्फ एक फुसफुसाहट, ''वह आता है जब आप शाँत होते हैं।'' उसने दोहराया और भी धीमें स्वर में, ''वह आता है जब आप शाँत होते हैं।''

मैं भयभीत था! मै न जानता था कि क्या होने वाला है, पर मैं प्रतीक्षा करता रहा.....और प्रतीक्षा करता रहा.....2

और तब वह हुआ!

सारे सभागार में, आश्चर्यकर्म होना आरम्भ हो गये, जिनकी पुष्टि आगामी एक घन्टे में हुई, जब मिस कुलमन ने सबके सामने लोंगों से बातचीत की।

मैं सेवकाई में केवल तीन माह से था और मैनें ऐसा कुछ कभी नहीं देखा था। आश्चर्यकर्म पूरे सभागार में हो रहे थे। और वह शाँत रहने के समय आरम्भ हुए।

मैं कनाडा वापस लौट गया और इसके विषय में सोचता रहा। मैं इसे करने का प्रयत्न करँगा, ''मैनें कहा। मैनें कैथरीन की सभाओं से बहुत कुछ सीखाा व अनुभव कर लिया है। परमेश्वर ने निश्चित रुप से उसे पूरे

संसार में आश्चर्यकर्मों के लिये प्रयोग किया है, और उसने उसे बड़ी कृपा से व करुणा से मुझे उन आरम्भिक दिनों में सिखानें व प्रेरित करने के लिये स्तेमाल किया।

मेरी सेवकाई के आरम्भिक दिनों में, मेरे पास एक बड़ी जोशीली व प्रशंसनीय गायन मंडली थी, जिनमें से आधे से अधिक लोग जमैका व हेटी के थे। वे उत्साह से भरे हुऐ थे, वे सुन्दर थे, पर प्रभु की आराधना करते समय, वे अपने उल्लास में कोलाहलपूर्ण भी हो सकते थे।

अतः, इस एक सोमवार की संध्या, सभागार ठसाठस भरा हुआ था, मैनें पहले ही से कह दिया था कि निर्णायक क्षण में, मैं चाहता हूँ कि वे शाँत रहें। पर , मुझे बीस मिनट लग गये शाँत करने में, क्योंकि वह कहते जा रहे थे – ''धन्यवाद प्रभु, प्रभु की स्तुति हो'', इस तरह की बातें जो पूर्णतया स्वाभाविक हैं, एक उत्तेजित, चमत्कारिक मसीही के लिये।

मैने कहा, ''अब शाँत रहो। अब अगर तुम हिले तो मैं तुम्हे नीचे भेज देने वाला हूँ। और उन्होने पूरी कोशिश की, शाँत रहने की।

मैनें अपने गायन – अगुवे की ओर देखा, उसके चेहरे से ऐसा प्रतीत होता था कि वह सोच रहा है, कि यह सब, क्या हो रहा है! और सच पूछो तो, इस समय तक मैं स्वयं भी यह सोचने लगा था कि मैं क्या कर रहा हूँ। ईमानदारी से मैं नहीं जानता था, कि मैं कुछ सही कर रहा हूँ या नहीं। मैं केवल इतना जानता था कि कैथरीन ने यह क्या किया था और प्रभु ने कार्य किया मैनें सोचा कि यदि कुछ भी नही हुआ, तो मैं इसे भूलकर आगे बढ़ता जाऊँगा। ''एक दम शाँत हो जाइये,'' मैनें प्रत्येक से पुनः कहा।

अतः गायन मंडली को शाँत होने में बीस मिनट लगे। तब सारे कक्ष में सम्पूर्ण शाँति छा गई। वास्तव में वहाँ सन्नाटा था। मैं न जानता था कि आगे क्या करुँ, अतः मैं प्रतीक्षा करता रहा व शाँत रहा।

बड़ी शीघ्रता से चालीस मिनट व्यतीत हो गये। मैं अपनी आँखें बन्द करके प्रतीक्षा करता रहा, क्योंकि मुझे कोई अन्दाजा न था कि क्या होने वाला है – यदि कुछ हुआ तो। और इतने लम्बे समय बाद, मैं देखना भी नही चाहता था।

तब धड़ाम! वह क्या था? तब एक और धड़ाम और एक और ऐसा लगता था सारे सभागार में हो रहा था। मैं अपनी आँखें खोलने की इच्छा को और दबा न सका। तीन व्यक्ति कमरे के भिन्न – भिन्न भागों में गिर गये थे। और जब मैं देख ही रहा था, दो और नीचे गये।

तब बूश! किसी वस्तु से सभागार भर गया। मैनें तीव्र विद्युत आवेश को महसूस किया, ''जैसे मेरी समझ में बिजली गिरने से होता होगा। मैनें एक जड़ता अपने शरीर के अधिकांश भाग मे से होकर जाती महसूस की, और वही मेरी आँखों के सामने, लगभग प्रत्येक व्यक्ति फर्श पर ढ़ेर हो गया था। वास्तव में कोई भी खड़ा नहीं था सिवाय मेरे।

मैं स्तंभित रह गया। मेरा गायन अगुवा फर्श पर पड़ा रो रहा था। संगीतकार, स्वागतकर्ता, हर एक नीचे पड़ा था। मैनें पुलपिट को कस कर पकड़ लिया और मैनें परमेश्वर की आवाज सुनी। मैं जानता हूँ, केवल मैं ही था जो उस क्षण उसे सुन रहा था – ''मैनें तुझे खड़ा रहने दिया कि तू देख सके।'' मैनें एक पाठ सीख लिया था। परन्तु परमेश्वर ने समाप्त नहीं किया था।

कुछ दिन पश्चात पीटर नामक, एक मित्र ने मुझे बुलाया वह शुक्रवार की रात्रि थी और कहा, ''मैं कल तुम्हे कहीं ले जाना चाहता हूँ, परन्तु तुम्हें सुबह पाँच बजे तक तैय्यार हो जाना चाहिये।''

मुझे कभी भी सुबह का समय अच्छा नही लगा ''किस लिये?'' मैनें पूछा। ''कोई बात नहीं। मैं तुम्हें पाँच बजे लेने आऊँगा।''

वह एक कठिन संघर्ष था, पर पीटर अच्छा मित्र था। मैं उसे पाँच बजे मिला और हम उसकी कार में चल पड़े, किसी जंगल में पहुँचने लिये

आपको टोरन्टो से बहुत बाहर नही जाना पड़ता और हम शीघ्र ही वहाँ थे।

उसने गाड़ी लगाई और हम कई मिनिटों तक जंगल में चलते रहे। मेरा मतलब है, हम गहन वन में थे, एकदम अलग, जहाँ कुछ भी नही था केवल वृक्ष, पशु, पक्षी और गिलहरियाँ।

हम रुक गये और वह बोला, ''मैं अभी आता हूँ।'' मैनें सोचा उसे शौचालय जाना है, सो मैं खड़ा प्रतीक्षा करने लगा। मैं प्रतीक्षा करता रहा।

करता रहा दस मिनट। बीस मिनट। वहाँ बहुत शाँति थी और मुझे आवाजें सुनाई देने लगी; जो मैनें पहले कभी नही सुनी थीं। यहाँ तक कि मैं अपना हृदय धड़कता सुन सकता था। मुझे निश्चय था कि मैं अपने कानों को भी सुन सकता था। बहुत सन्नाटा था।

मैनें सोचा उसे अब तक वापस आ जाना चाहिये था। वह केवल शौचालय के लिये नहीं गया होगा।

अतः मैं चीखा, इतना ऊँचा जितना मैं चीख सकता थाः ''पी.....टर.... .।'' और सन्नाटा और तब अकस्मात् एक झाड़ी के पीछे से कूद कर मेरे सामने आया – और डर के मारे मेरी जान निकल गई।

''इसी के लिये मैं तुम्हे यहाँ बाहर लाया था।'' वह बोला ''मुझे डराने के लिये?''

''नही। तुम्हें सिखाने के लिये, कि तुम्हे यह पता नही कि शाँत कैसे रहा जाता है। तुम हरदम बोलते रहते हो अथवा घूमते रहते हो व शोर मचाते रहते हो। मैं तुम्हे जंगल में सिखाने के लिये लाया हूँ।''

मैं प्रभावित नहीं हुआ या कम से कम मैने कहा मैं प्रभावित नहीं हूँ।

''क्या तुम जानते हो,'' पीटर बोला, ''कि डी. एल. मूडी ने कहा है, कि यदि मैं एक अविश्वासी को लेकर, पाँच मिनट तक उसे शाँत रख सकूँ और उन क्षणों में उसे अनन्त काल के बारे में सोचने पर प्रेरित करूँ, मैं उसे बचा सकता हूँ। मुझे कुछ भी कहना नही पड़ेगा।''

शाँति! मैने उसकी सामर्थ के बारे में सीखा। पवित्र स्थान शाँत है। आपको परमेश्वर के सामने शाँत रहना है और खामोशी में उसकी आराधना करना सीखना है। आप अभिषेक की खोज कर लेंगें।

प्रतिज्ञा निभाना

जैसा मैनें कई वर्षों से कहा है, कि कैथरीन कुलमन, सुसमाचार सेविका थी, जिसका मैनें बड़े निकट से अनुसरण किया है। बिना जाने ही, उसने मुझे बहुत कुछ सिखाया है।

परन्तु मैं स्वीकार करुँगा कि प्रथम बार जब मैंनें उसे पिट्सबर्ग में देखा था, मैंने उसे इतना नही सराहा था, जितना अब। फर्स्ट प्रेसबेटेरियन चर्च भवन की तीसरी पंक्ति से, मैंने उसे फिसलते हुए, जैसे पंजों पर चलते हुए, मंच पर आते देखा था। बाहें फैलाये, अपने फर्श तक लम्बे, लेस के बने, लम्बी आस्तीनों व ऊंचे गले वाले परिधान में वह तेजी से मंच पर आ गई। तब, जैसे ही खचाखच भरी भीड़ 'कितना महान'' गीत में फूट पड़ी, यह दुबली – पतली, सुनहरे बालों वाली महिला अक्षरशः दौड़ कर मंच के मध्य में पहुँच गई और शक्तिशाली गीत के अन्तिम भाग को गाने में काफी ऊँची आवाज में अगुवाई करने लगी, तो उसकी अद्‌भुत सेवकाई की एक छाप है।

प्रथम शब्द जो उसने माइक में कहेः है........लो........क्या आप लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे?''

खेद का विषय है कि दबे स्वर में मेरा प्रत्युत्तर था एक स्पष्ट ''नहीं''। लेकिन मैं अकेला ही नही था, जो मिस कुलमन के आचार – व्यवहार से ठोकर खा गया हो। तिरस्कार के विरुद्ध बाइबल की चेतावनियों से एक सबक सीखना चाहिये। क्योंकि मैं अपेक्षाकृत उन चन्द लोगों मे से था, जिन्हे बहुत निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ कि बाहय् दिखावा, किसी भी तरीके से उस महिला के हृदय, आत्मा व सामर्थ को प्रगट नहीं कर रहा था। मैने बहुत सीखा और अब भी अनुभवों से सीख रहा हूँ।

उसकी सेवकाई के दौरान अपने समय में, मैंनें ऐसा कभी नहीं देखा कि जब वह प्रभु से यह शब्द कह रही हो तो उसकी आँखों में आँसू न हो व उसके होठों में न भाँपने योग्य हल्का – सा कम्पन न होः ''मैं तुझे महिमा देने की प्रतीज्ञा करती हूँ, और मैं इसके लिये तेरा धन्यवाद करती हूँ। मैं इसके लिये धन्यवाद देती हूँ।'' कभी – कभी वह बहुत सादा व अन्तरंग होता था ''प्रिय यीशु, लाखों बार धन्यवाद।''

मैं बताता हूं प्रिय, कि कोई दूसरा रास्ता हो ही नहीं सकता। जब आप अभिषेक को खोजते व पाते हैं, महिमा किसी और को नही पर प्रभु को देना चाहिये। मैं आपसे बिनती करता हूँ कि आप केवल परमेश्वर के

गिरे हुए सेवकों के बारे में सोचें, बीते वषों में, जो इस बात से ठोकर खा कर गिर पड़े। दिखावा, यहां तक कि भड़कीलापन एक बात है। गर्व व अकृतज्ञता दूसरी। ''मैं तुझे महिमा देने की प्रतिज्ञा करती हूँ और प्रिय यीशु, लाखों लाख धन्यवाद।''

प्रार्थना के विषय में एक पाठ

1976 के आरम्भ में मिस कुलमन की मृत्यू के उपरान्त 1977 में मुझे कुलमन फाउन्डेशन द्वारा कहा गया, कि उसके लिये पिट्सबर्ग में एक स्मृति सभा का आयोजन करुँ उस समय तक, उसकी सेवाकाई के लिये मेरे कार्यों में छोटी – छोटी बातें थीं, जैसे गायन मंडली का संगीत वितरित करना। अतः मैं स्तब्ध था, कि मुझे ऐसे महत्वपूर्ण अवसर में भाग लेने के लिये कहा गया। मैं बहुत छोटा और मसीही के रुप में अपरिपक्व था और यह एक बड़ी घटना होने वाली थी।

कार्लटन हाउस के दफ्तरों में जब मैं पहुंचा, तो मैगी हार्टनर जो कैथरीन का निकटतम विश्वासपात्र थी और जिसे मैं बहुत प्यार करता हूँ मुझे एक ओर ले गई और कुछ ऐसा कहा जिससे मैं विस्मित हो गया।

''अब जा कर प्रार्थना मत करने लगना और अपनी आवश्कताओं में इतने न बंध जाना व घिर जाना कि परमेश्वर तुम्हे आज रात इस्तेमाल न कर सके,'' वह काफी सख्ती से बोली। ''जाओ, थोड़ी नींद ले लो या ऐसा ही कुछ करो।''

जो मैं सुन रहा था उस पर विश्वास न कर सका। ''यह सब से अनाध्यात्मिक बात है जो मैंनें कभी सुनी है।'' मैंनें सोचा ''और यह सबसे अनाध्यात्मिक महिला है जिससे मैं कभी मिला हूँ।'' मैं जाकर प्रार्थना करुँगा, चाहे वह पसन्द करे अथवा नही।

जिम्मी मैकडोनाल्ड, गायक आकर मुझे ''कारनेजी म्यूजिक हॉल ले गया, व संध्या का कार्यक्रम मुझे बताया। गायन मंडली यह और यह गीत गायेगी, वह बोला और उसके बाद वह गायेगा ''जब मैं गाने की अगुवाई करुँ, ''जीजस, दैर इज समथिंग अबाउट दैट नेम'' तुम बाहर आ जाना'' मैंनें सिर हिलाया, ''ठीक है''।

तब उन्होने लास वेगस में, कैथरीन की एक बड़ी शक्तिशाली सभा की फिल्म दिखाई, जिसका अब भी बहुत प्रभाव होता है वह जब– जब दिखाई जाती है, तब जिम्मी ने गीत गाया।

मैने मंच के पीछे से भीड़ को देखा और मैं जड़ हो गया। मैं हिल ही नहीं सका। जिम्मी ने गीत को एक बार पुनः गाया, फिर तीसरी बार गाया और अन्त में बोला, ''जब हम इसे अगली बार गाएंगें, बैनी हिन्न बाहर आ जाएंगे।'' उसने चंन्द प्रशंसा के शब्द भी मेरे लिये कहे। अधिकाँश लोग नहीं जानते थे कि मैं कौन हूँ। उसने फिर से गीत गाया। मैं भय से अभी भी जड़ था। अन्ततः मैं बाहर निकल कर मंच पर आया।

जिम्मी फुसफुसाया, ''तुम कहाँ थे?'' और उसने मंच छोड़ दिया। इससे मुझे कोई आसानी नहीं हुई।

मैनें उन्हे पुनः गीत गवाने की कोशिश की, पर मैं बहुत ऊँचा शुरु किया और वह बहुत खराब था। किसी ने मेरे साथ न गाया। मैं स्वयं ही प्रयत्न कर रहा था। मैं केवल यही सोच पा रहा था, कि यहाँ से निकल कर घर चला जाऊँ।

ऐसा प्रतीत हुआ जैसे आधा घन्टा व्यतीत हो गया। मैं केवल इतना ही कर पा रहा था कि अपनी बाहों को ऊपर हवा में फेंक कर पुकार उंठू, ''मैं नहीं कर सकता प्रभु, मैं नहीं कर सकता।'' उसी क्षण मैनें अपने अन्तर में एक आवाज सुनी, ''मुझे प्रसन्नता है कि तुम नही कर सकते, अब मैं करुँगा।''

मैं पूरी तरह तनाव मुक्त हो गया और ऐसा था जैसे कोई नर्क से स्वर्ग में चला जाये। बिना किसी सन्देह की छाया के जब एक बार मैनें जान लिया कि मैं नही कर सकता तत्काल ही मैं मुक्त हो गया। परमेश्वर की सामर्थ उतरी और भवन में हर व्यक्ति उससे छुआ गया – मेरे द्वारा नहीं परमेश्वर द्वारा। वह एक आश्चर्यजनक द्रवित करने वाली सभा थी।

मैगी बाद में मेरे पास आई और ऐसा कुछ कहा जिसे मैं कभी नहीं भूलूँगा : ''कैथरीन ने हमेशा कहा, यह तुम्हारी प्रार्थनाएं नही हैं, यह तुम्हारी योग्यता नहीं हैं, यह तुम्हारा समर्पण है, समर्पण करना सीखो, बैनी''।

पर मैं इस पूरे अनुभव से इतना स्तंभित था कि मैं सिर्फ इतना ही कह पाया, ''मैगी, नहीं सोचता कि मैं जानता हूँ कैसे।''

''आज रात्रि तुम्हे इसका प्रथम अनुभव हुआ'' वह बोली। वापस होटल के कमरे में मैनें प्रार्थना की, '' प्रभु मुझे सिखा, यह कैसे करना है''। मैं जानता था कि कुन्जी मैगी के दोपहर को कहे गये शब्दों में थी। परन्तु केवल गत कुछ वर्षों में ही, मैं पूरी तरह समझ पाया कि वह क्या कह रही थी : तुम्हे एक सभा में जाना है केवल इसलिये ही प्रार्थना मत करो। मैं अपनी पत्नी से केवल तब ही बात नही करता जब मुझे उस की आवश्यकता होती है। मुझे उसके साथ एक सम्बन्ध बना कर रखना चाहिये। यही प्रभु के साथ है। तुम प्रार्थना करो, हर समय, जिससे कि सम्बन्ध बना रहे। तुम नही कर सकते, ''मैं तुम से बात करुँगा, जब मुझे तुम्हारी आवश्यकता होगी'' और तब कुछ समय के लिये उसकी उपेक्षा कर दो। परमेश्वर कहेगा, ''संम्बन्ध नही तो अभिषेक नही।''

प्रार्थना पर तुम्हारा जीवन निर्भर है।

भरोसे का मामला

मैं जानता हूँ कि मैगी हार्टनर के मन में सम्बन्ध और भरोसे की बात थी, इस अति व्यक्तिगत कहानी के समय, जो मैं आपको बताना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि आप समझ सकेंगें।

एक सभा के पश्चात, काफी रात गये, मैं व मैगी पिट्सबर्ग की सड़कों से गुजर रहे थे। सड़कें खाली थीं और जब हम लाल बत्ती पर आये मैगी मुड़ कर मुझ से बोली, ''तुम बायें हाथ पर उस इमारत को देखते हो? यही है जहाँ मैं व मिस कुलमन अपने आरम्भिक दिनों में कई वर्षों तक रहे।

वह एक पुरानी आवासीय इमारत थी। एक क्षण की शाँति के बाद मैनें उससे कहा ''मैगी, मुझे बताओ, उन दिनों में कैथरीन कैसी थी?''

जैसे मैगी ने एक क्षण के लिये सोचा, पवित्र आत्मा का अभिषेक उस पर आ गया और ऐसा लगा मानो परमेश्वर कार के भीतर आ गया हो। और वह बोली ''बैनी, मैं अभी तुम्हे कुछ बताने जा रही हूँ .... और

इसे कभी भी भूलना नहीं।'' मैगी एक अति प्रभावशाली व्यक्ति थी और मेरा पूरा ध्यान उसकी ओर था। ''तुम्हारे पास बहुत कुछ है, उसकी तुलना में जो उसके पास था, जब वह तुम्हारी आयू की थी। कैथरीन के ऊपर जो तुमनें परमेश्वर की सामर्थ देखी, वह उस पर उसके जीवन के केवल अन्तिम दस वर्षों में था।''

मैं स्तब्ध रह गया। ''मैगी, मैं सोचता था कि कैथरीन पर यह अभिषेक सदा से था।''

''अरे नहीं,'' वह बोली ''शुरु के दिनों में उस पर कोई अभिषेक नही था उसकी तुलना में, जो उस पर था जब उसकी मृत्यू हुई।''

मद्धम प्रकाश में उसने तीव्र दृष्टि से मुझे देखा। ''क्या तुम जानते हो, परमेश्वर ने इस प्रकार से उसका अभिषेक क्यों किया?''

मैने सिर हिलाया।

''क्योंकि वह इसके लिये उस पर भरोसा कर सकता था।''

कई क्षणों तक सन्नाटा रहा। और उसने अपने सीधे हाथ की पहली उंगली को बिलकुल मेरे चेहरे के सामने करके सीधे सादे और सशक्त ढंग से कहा : ''और यदि वह तुम पर भरोसा कर सके'' – मुझे महसूस हुआ जैसे परमेश्वर मुझ से बात कर रहा है – ''यदि वह तुम पर भरोसा कर सके।'' उसकी उंगली एक क्षण तक मेरे चेहरे के आगे स्थिर रही। सब कुछ पूर्णतया सन्नाटे में था, जब हम अंन्धेरे रास्तों से चले जा रहे थे।

उस रात्रि अपने होटल में, मैनें मुश्किल से ही कोई बात की मैं हिला हुआ था। मैं ऐसी गंम्भीरता से बोला जैसा अपने जीवन में कभी न बोला था, ''प्रभु कृपा करके मुझे ऐसा अभिषिक्त व्यक्ति बना, जिस पर तू भरोसा कर सके।''

भरोसा।

''मैं तुझे महिमा देने की प्रतिज्ञा करता हूँ, और प्रिय यीशू, लाखों बार धन्यवाद''

और कोई रास्ता ही नही है।

अध्याय – 6

परमेश्वर की एक असाधारण स्त्री

अनेक युवा वयस्क जिनसे मैं मिला हूँ, कैथरीन कुलमन के बारे में बहुत कम जानते हैं, अतः मैं आपको संक्षेप में इस विलक्षण स्त्री के विषय में बताना चाहता हूँ, जिसका मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा और जिसने सम्पूर्ण संसार में बहुत से जीवनों को छुआ। जो परमेश्वर ने उसके जीवन में किया, उससे हम और जान सकते हैं कि वह हमारे जीवनों में अभिषेक के द्वारा क्या कर सकता है।

9 मई 1907 को मिसूरी कॉनकार्डिया के निकट जन्मी कैथरीन, ऊँचे कद की, लाल बालों वाली किशोरी में विकसित हुई, जो शरारती, मजबूत इरादों वाली तथा तीव्र बुद्धी थी। उसने 14 वर्ष की आयु में, एक छोटे मेथोडिस्ट चर्च में हुई मध्य – पश्चिमी प्रकार की जागृति सभा में, बैपटिस्ट प्रचारक की सेवकाई के दौरान यीशु को अपना प्रभु जान कर स्वीकार किया। यह अनुभव कई रुपों में, आने वाले वर्षों का पूर्वसूचक था। अपने परिवार, कलीसिया व शहर में प्रत्येक को स्तब्ध करती हुई, वह पवित्र आत्मा द्वारा अभिभूत हो, सिसकती, काँपती, दोषानुभूति के बोझ तले आगे की पंक्ति में ढ़ेर हो गई।

''सारा संसार बदल गया था'', उसने वर्षों पश्चात कहा। मैं सिसकने और थरथराने को पूरी तरह पहचानता था।

अपने परिवर्तन के केवल कुछ वर्ष पश्चात, उसने अपनी बहन मृटल व उसके पति के साथ मिलकर सुसमाचार प्रचार यात्रा में भाग लिया। बहुत समय न बीता था कि खोये हुओं के लिये अपने बढ़ते बोझ को महसूस करते हुए, वह अपनी स्वयं की यात्रा सेवकाई करने चल पड़ी। पियानो वादक हैनल गलीफोर्ड को साथ लेकर, उसने सम्पूर्ण मध्य – पश्चिम व पश्चिम में कई वर्षों तक सेवा की। अन्त में, वह डैनवर में आकर टिक गई, जहाँ एक गोदाम में की जाने वाली सभाओं में वह शीघ्र ही बड़ी भीड़ को आकर्षित करने लगी।

1933 में, जब मंदी पूरे यौवन पर थी, इन्ही सभाओं में से डैनवर जागृति तम्बू का जन्म हुआ, एक बड़ा कार्य जो फला व फूला इसी दौरान वह सुसमाचार प्रचीरका थी, जो कई – कई सौ लोगों को प्रभु के पास लाई। यद्यपि प्रार्थना द्वारा चंगाईयां होती थीं, जैसे कई मसीही सेवकाईयों में होती है, उसकी शक्तिशाली आश्चर्यकर्म सेवा अभी बहुत दूर थी। परन्तु एक आपदा बड़ी निकट थी। सौभग्य से, कैथरीन की निर्बलताओं पर विजयी होने के लिये परमेश्वर के पास एक योजना थी।

1937 में उसने एक लम्बे, खूबसूरत प्रचारक जिसका नाम बरॉस वॉलट्रिप था, को तम्बू में सेवा करने के लिये बुलाया। वह दो माह तक रहा। यद्यपि वह अब भी विवाहित था, उसने अपनी पत्नी व बच्चों को अप्रिय तरीके से छोड़ दिया था। कैथरीन सही निर्णय करने की शक्ति को खो बैठी और उसके प्रेम में पड़ गई। जब उसने अन्ततः अपनी पत्नी को तलाक दिया, कैथरीन ने उससे विवाह कर लिया, जो लोग उसकी चिन्ता करते थे उनकी अनुनय – विनय तथा चेतावनियों के बावजूद। फिर वह वालट्रिप के साथ आयोवा चली गई।

उसकी बढ़ती हुई सेवकाई नष्ट हो गई, यद्यपि डैनवर का कार्य आँशिक रुप से अन्य अगुवों की देख – रेख में चलता रहा।

वालट्रिप की सेवकाई भी ओयावा में असफल रही। अतः वे उसे छोड़ कर यात्रा पर निकल गये –मध्य – पश्चिमी व पश्चिमी इलाकों के आसपास कभी – कभी वे साथ – साथ सेवकाई करते, लेकिन अधिकाँशतः वह मंच पर खामोश बैठी रहती, जब वह सेवा कर रहा होता। परमेश्वर के अनूग्रह के कारण उन की सेवा के दौरान लोग बहुधा बचते व आशीषित होते रहे। परन्तु उन दोनो में से, विशेष कर कैथरीन में से जीवन समाप्त हो चुका था।

कैथरीन अपने प्रथम वास्तविक प्रेम प्रभु यीशु मसीह से दूर चली गई थी और वह मर रही थी। जेमी बकिंघम – लेखक व पासबान के अनुसार, वह अनेक वर्षों से जानती थीं कि उसे दूसरों से भिन्न होना है। उसकी बुलाहट इतनी गहरी व ऐसी थी जिसे रद्द न किया जा सके, कि

लगभग 6 वर्ष पश्चात वह अपने दुख को और सहन न कर सकी। वॉलट्रिप भी इस बात को जानता था, पर कैथरीन ही थी जिसने कदम उठाया।

''डाटर ऑफ डेस्टिनी'' नामक पुस्तक में, जो बकिंघम ने मिस कुलमन की मृत्यू उपरांत लिखी, उसके जीवन में इस संकटापन्न पर उसी के शब्दों को उद्घृत किया हैः

मुझे एक चुनाव करना था। मैं उस व्यक्ति की सेवा करुं जिसे मैं प्रेम करती हूँ या परमेश्वर की, जिसे मैं प्रेम करती हूँ। मैं जानती थी कि मैं परमेश्वर की सेवा 'मिस्टर' के साथ रहते हुए नही कर सकती। (वह वालट्रिप को पहली बार से ही, जब वह उससे मिली थी 'मिस्टर' बुलाती थी) कोई मरने की पीड़ा को, जैसे मैनें जाना है नही जान पाएगा, क्योंकि जितना मैं स्वयं जीवन से प्रेम करती हूँ, उससे भी अधिक प्रेम उससे करती हूँ। और एक समय के लिये, मैं उसे परमेश्वर से अधिक प्रेम करती थी। अन्ततः मैनें उसे बताया कि मुझे जाना होगा। परमेश्वर ने मुझे कभी भी उस आरम्भिक बुलाहट से मुक्त नही किया था। मैं केवल उसके ही साथ नहीं रहती थी, मुझे अपने अन्तः करण के साथ रहना था और पवित्र आत्मा की दोषानुभूति सहन से बाहर थी। मैं अपनी सफाई देते – देते थक गई थी। थक गई थी। एक दोपहर, मैनें अपना आवास छोड़ दिया – वह लॉस एन्जेल्स के बाहरी इलाके में था – और स्वयं को वृक्षों की छाया भरी सड़क पर चलते पाया। वृक्षों की बड़ी – बड़ी डालियां जो ऊपर फैली हुई थीं उनके बीच में से सूर्य चमक रहा था। ब्लाक के अंत में मैनें एक सड़क चिन्ह देखा। वह इतना ही था 'अंधगली'। हृदय में पीड़ा थी। हृदय की पीड़ा इतनी अधिक थी कि उसे शब्दों में व्यक्त नही किया जा सकता। यदि आप सोचते हैं कि क्रूस तक जाना सरल है, वह इस लिये कि आप कभी वहाँ नही गये हैं। मैं वहाँ गई हूं। मैं जानती हूं। और मुझे अकेले ही जाना था। मैं पवित्र आत्मा की अद्भुत भरपूरी के विषय में कुछ नहीं जानती थी। त्रिएकत्व के सामर्थी तीसरे व्यक्ति की शक्ति के विषय में कुछ नही जानती थी, जे सबको उपलब्ध हैं। मैं केवल इतना जानती थी कि शनिवार दोपहर के चार बजे हुए थे, और मैं अपने जीवन में एक

ऐसे स्थान पर आ गई थी जहाँ मैं सब कुछ, यहाँ तक कि मिस्टर को भी त्यागने और मर जाने को तैय्यार थी। मैनें ऊँची आवाज में कहा, ''प्यारे यीशू, मैं सब कुछ समर्पित करती हूँ। मैं तुझे सब कुछ देती हूँ। मेरा शरीर ले ले मेरा हृदय ले ले मेरा सब कुछ तेरा है। मैं उसे तेरे अद्‌भुत हाथों में रखती हूँ।''

कैथरीन लगभग छह वर्षों से जानती थी कि वह स्वयं को मूर्ख बना रही है। वह प्रचार कर रही थी और परमेश्वर की आशीषों को खोज रही थी, परमेश्वर के नियमों के द्वारा न जीते हुए। उसने पाप किया था। पर उसने पश्चाताप किया, और उस शनिवार की दोपहर वापस मुड़ आई। वह मर गई। वह एक बीज बन गई जो भूमि में गिरकर पड़ा रहने को तैय्यार था। बकिंघम के शब्दों में, ''वह मुड़ी और उसी मार्ग से वापस आई, जिस पर वह गई थी। और वह अकेली थी, सिवाय एक प्रेमी क्षमाशील परमेश्वर के। ''कोई नही'' कई वर्ष पश्चात वह हल्के से रो कर बोली, ''कभी जान पाएगा, कि सेवकाई के लिये मैने क्या मूल्य चुकाया है। केवल यीशू।''

मैगी हार्टनर के साथ वर्षों बाद मैनें कैथरीन के ''मरने'' पर चर्चा की, और उसने मुझे बहुत व्यवहारिक ज्ञान दिया, ऐसा ज्ञान जिसे हम सब को सीखना चाहिये। उस पश्चाताप व वापस लौटने के समय कैथरीन अत्यन्त दुख से भरी व अपराध बोध से दबी हुई थी। एक समय, प्रभु ने उससे पूछा, ''कैथरीन, क्या मैनें तुम्हे क्षमा कर दिया है?'' उसने उत्तर दिया, ''हाँ''। तब परमेश्वर ने कहा, मैनें भुला दिया है और मेरी पुस्तक में वह कभी हुआ ही नहीं।''

उस क्षण से लेकर, अपने जीवन के बहुत बाद के दिनों तक उसने कभी इस विषय की चर्चा नहीं की, उसको वैसा ही लिया जैसा परमेश्वर ने कहा था।

पवित्र शास्त्र के अनुसार परमेश्वर ने पश्चाताप किये हुए पाप अपने पीछे डाल दिये हैं, और उनकी ओर कभी नही देखता। वे उससे इतनी दूर हैं जैसे पूर्व पश्चिम से अगर आप बार – बार उसके पास आकर उससे क्षमा मांगते हैं, तो वह वास्तव में नही जानता कि आप किस बारे में

बात कर रहे हैं। पश्चाताप लहू से धोया जाना क्षमा एक साफ स्लेट कैथरीन कुलमन कौन थी, जो पाप को परमेश्वर के ढंग से विपरीत तरीके से लेती? वह कभी हुआ ही नही।

द्वार खुलता है

दो वर्ष पश्चात, बहुत से उतार चढावों व अस्वीकृतियों के बाद, क्योंकि वह ऐसी स्त्री थी, जिसने तलाक शुदा व्यक्ति से विवाह किया था, मिस कुलमन पश्चिमी पैनसिल्वेनिया के फ्रेन्कलिन में एक बस से उतरी अन्त में द्वार खुलने को तैय्यार था।

गॉस्पल टैबरनेकल में वह काफी लम्बे समय तक ठहरी, और उसी दौरान रेडियो – सेवकाई आरम्भ की, जो फूली – फली व कई चरणों से होती हुई, सम्पूर्ण अमेरिका में फैल गई। वह अन्ततः पिट्सबर्ग में आ पहुंची, जो उसकी अद्‌भुत सेवकाई का मुख्यालय होना था।

फ्रेन्कलिन में रहते हुए वह चंगाई के विषय में संघर्ष करने लगी। वह कभी – कभी चंगाई पर प्रचार करती और लोग चंगें हो जाते थे। परन्तु उसकी सेवकाई में इस पर मुख्य जोर नही था, जो ऐसे नियोजित की गई थी कि लोगों को मसीह के द्वारा नया जन्म पाने को प्रेरित करे। ''मैं अपने हृदय में जानती थी कि चंगाई होती है'', उसने बकिंघम को कई वर्ष बाद बताया। ''मैने इसका प्रमाण उन लोगों से पाया जो चंगें हो गये थे। वह वास्तविक थी, और वह सच्ची थी, पर इसकी कुन्जी क्या थी?''

एक दिन उसने इरी में एक टेन्ट मीटिंग का इश्तहार देखा, ''चंगाई करने वाले प्रचारक'' के बारे में दिया था, और वहाँ जाने का फैसला किया। शायद उसे कुन्जी मिल जाये, पर वह वहां नही मिली, कम से कम उसके लिये तो नहीं। प्रचारक शोरगुल वाला, उतावला, कलाबाज था, जो बातें उसकी सेवकाई से बड़ी दूर थीं। जब वह चिल्लाता, श्रोता जैसे पागल हो जाते, वे चीखते, विलाप करते और छटपटाते। उसने चंगाई का दावा करने वालों में धोखे का प्रमाण देखा और वह केवल रो

ही सकी। लोगों की आलोचना की जा रही थी उनके विश्वास की कमी के लिये, जिससे वह हताश व निराश होकर रह जाते।

परन्तु कैथरीन, इतने टूटे मन के साथ भी परमेंश्वर के वचन पर विश्वास करती थी और वह सहायता के लिये उसा की और मुड़ी।

परिणाम यह हुआ कि अप्रैल 27, 1947 को उसने पवित्र आत्मा पर एक श्रृंखला को सिखाना आरम्भ किया। उस शिक्षा के अंश मैं पुनः यहाँ प्रस्तुत करना चाहता हूँ जैसे वे बकिंघम की पुस्तक में पाये जाते हैं, क्योंकि इसमें वह सच्चाई है जिसने मिस कुलमन की सेवकाई को उसकी आगामी जिन्दगी के लिये एक आकार दिया।

मैं अपने मन में देख सकती हूँ त्रिएकता के तीन व्यक्ति, पृथ्वी के बनने से पूर्व एक विचार – विमर्श की मेज पर बैठे हैं। परमेश्वर पवित्र पिता, दूसरों को यह समाचार देता है कि यद्यपि वह मनुष्य को अपने साथ संगती में रखने के लिये बनायेगा, मनुष्य पाप करेगा – और उस संगती को तोड़ लेगा। केवल एक ही तरीका, जिससे संगति पुनः स्थापित की जाये, यह होगा कि कोई उस पाप का मूल्य चुकाए। क्योंकि यदि कोई और नहीं चुकायेगा, तो स्वयं मनुष्य को उसका मूल्य चुकाते रहना पड़ेगा, दुख, रोग, मृत्यू व उसके बाद नर्क में। पवित्र पिता के यह बताने के बाद, उसका पुत्र – यीशु बोल उठा और कहा, ''मैं जाऊँगा। मैं मनुष्य रुप धारण करके धरती पर उस मुल्य को चुकाने जाऊँगा। मैं क्रूस पर मरने के लिये तैय्यार रहूँगा। ताकि मनुष्य का एक सिद्ध संगति के लिये पुनः हमसे मेल हो सके। तब यीशु पवित्र आत्मा की ओर मुड़ा और बोला, ''पर मैं नहीं जा सकता जब तक तुम मेरे साथ न चलो – क्योंकि तुम ही हो जिसमें सामर्थ है।'' पवित्र आत्मा ने प्रत्युत्तर देकर कहा, ''तुम पहले जाओ। और जब सही समय होगा, मैं तुमसे पृथ्वी पर मिलूँगा।'' अतः यीशु पृथ्वी पर आ गया, एक चरनी में पैदा हुआ और मानव स्वभाव ले लिया। परन्तु यद्यपि वह परमेश्वर का ही पुत्र था, वह सामर्थ विहीन था। तब यरदन नदी पर वह भव्य क्षण आया, जब यीशु बपतिस्मा लेने के बाद पानी के ऊपर आया, उसने ऊपर देखा और पवित्र आत्मा कबूतर के रुप में अपने ऊपर उतरते देखा। यीशु जब इस पृथ्वी पर शारीरिक रुप में

चला, उसके लिये यह महानतम रोमाँचक बातों में से एक होगी। और मैं लगभग सुन सकती हूँ पवित्र आत्मा उसके कान में फुसफुसा रहा है, ''मैं अब यहाँ हूँ। हम बिलकुल सही समय से चल रहे हैं। अब वास्तव में बातें घटित होंगी।'' और वे हुईं। आत्मा से भरा हुआ, वह यकायक सशक्त हो गया – रोगियों को चंगा करने, अन्धों को दृष्टि देने, यहाँ तक कि मृतकों को जिन्दा करने के लिये। वह समय आश्चर्यकर्मों का था। तीन वर्षों तक वे चलते रहे और फिर अन्त में, बाइबल बताती है, ''उसने आत्मा त्याग दिया,'' और आत्मा पवित्र पिता के पास लौट गया। जब यीशु तीन दिन तक कब्र में था, उसके बाद त्रिएकता वह शक्तिमान तीसरा व्यक्ति, पवित्र आत्मा लौटा। उस थोड़े समय में जब वह यहाँ था, उसने कोई आश्चर्यकर्म नही किये, परन्तु अपने अनुयायियों को एक महान प्रतिज्ञा दी – सब प्रतिज्ञाओं में महान – बाइबल उसने कहा, यही पवित्र आत्मा, जो उसमें रहता था लौटेगा, उन सभी में रहने के लिये, जो अपने जीवन उसकी सामर्थ के लिये खोलेंगें। वही कार्य जो उसने – यीशु ने किये उसके शिष्य भी करेंगें। वास्तव में, इससे भी बड़े – बड़े कार्य किये जायेंगें क्योंकि अब पवित्र आत्मा एक शरीर में सीमित नहीं रहेगा, परन्तु स्वतंत्र होगा, हर जगह उन सब में प्रवेश करने को, जो उसे स्वीकार करेगें। अन्तिम शब्द (यीशु द्वारा) जो कहे गये, उसके जाने से पूर्व, थे, ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ पाओगे''। परमेश्वर पिता ने उसको यह वरदान दिया। अब वह उसे कलीसिया को दे रहा है। प्रत्येक कलीसिया को पिन्तेकुस्त के आश्चर्यकर्म अनुभव करने चाहिये। प्रत्येक कलीसिया को प्रेरितों के कार्य पुस्तक की चंगाईयाँ देखनी चाहिये। वरदान हम सब के लिये हैं।

प्रतिक्रिया तेज है

अगली रात्रि, जब कुलमन प्रचार करने खड़ी हुई, एक स्त्री अपना हाथ उठाये हुए तेजी से आगे आई, ''कैथरीन, क्या मैं कुछ कह सकती हूँ?'' उसने पूछा।

मिस कुलमन, इस प्रकार के व्यवधान की अभ्यस्त न होने पर भी, एक ऐसे ढंग से बोली, जिसे हजारों प्रेम करने लगेंगें, ''आओ प्रिय, अवश्य तुम कह सकती हो।'' पिछली रात, जब आप प्रचार कर रहीं थीं, मैं चंगीं हो गई,'' उसने धीरे से कहा।

कैथरीन, शायद पहली बार अपने जीवन में, हक्का – बक्का रह गई। उसने उस स्त्री को छुआ या देखा भी नहीं था, प्रार्थना करने का तो सवाल ही नहीं। ''तुम कहाँ थी?'' वह पूछ सकी। ''वहाँ श्रोताओं में बैठी हुई थी।''

कैथरीन ने कहा, ''तुम्हे कैसे मालूम कि तुम चंगी हो गई?''

''मुझे एक ट्यूमर था। जिसका पता मेरे डाक्टर द्वारा लगाया गया था। जब आप प्रचार कर रहीं थीं, मेरे शरीर में कुछ हुआ। मुझे इतना निश्चय था कि मैं चंगी हो गई हूँ, कि मैं आज सुबह अपने डाक्टर के पास वापस गई और उसका सत्यापन करवा लिया। ट्यूमर अब वहाँ नही है।''

आश्चर्यजनक अभिषेक आ गया था।

आने वाले रविवार को एक और चंगाई हुई, और उसके बाद और, उसके बाद और, और, और होती गई, जैसे – जैसे परमेश्वर की सामर्थ उसकी सेवकाई में से होकर बहती गई, जब तक की प्रभु ने उसे 1976 में घर नही बुला लिया।

हम सभी दूसरों को चंगाई देने के लिये बुलाये नही गये या सामर्थी नहीं किये गये हैं, जैसा कैथरीन करती थी। परन्तु यदि हम परमेश्वर को सब कुछ देने के इच्छुक हैं, मूल्य को न देखते हुए, तब वह हमारे जीवनों को अभिषिक्त करेगा, और अपने प्रतापी आत्मा की सामर्थ के द्वारा, अपने लिये बड़े – बड़े कार्य करने के लिये, वह हमारा मार्ग दर्शन करेगा,।

क्या आप मूल्य चुकाने को तैय्यार हैं? स्मरण रखिये, आप परमेश्वर को कभी भी उससे अधिक नही दे सकते। जो कुछ भी आप मुक्त करेगें और उसे देंगें, वह अभिषेक के द्वारा उसे वापस लौटा देगा, इतना अधिक कि आप कभी कल्पना भी नही कर सकते।

अध्याय – 7

यह क्या है?

लोग बाइबल मे बहुत – सी अवर्णनीय शिक्षाएं व सच्चाईयाँ पाते हैं। ऐसी शिक्षा परमेश्वर की महिमा के बारे में हैं। पर यह महिमा है क्या?

कुछ महिमा को एक अन्तरंग अनुभव के साथ जोड़ते हैं जो उन्हें हुआ हो – एक अनुभव जिसमें परमेश्वर अति निकट प्रतीत हुआ हो। पर वे इसका वर्णन करने के लिये शब्दों को ढूंढ़ते हैं।

सत्य यह है कि परमेश्वर की महिमा, परमेश्वर का व्यक्तित्व व उसकी उपस्थिति है – महिमा, पवित्र आत्मा हैं। जब आप उसकी उपस्थिति का अनुभव करते हैं – यह अभिभूत करने वाला बोध, कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर इतने निकट है कि आप हाथ बढ़ाकर उसे छू सकते हैं – तब आपने परमेश्वर की महिमा को अनुभव किया। आप उसके प्यार की गर्माहट और उसकी शाँति के आराम को महसूस करते हैं। यह एक अभिषेक जो उपस्थिति को लाता है।

उपस्थिति का आश्चर्यजनक अनुभव आपको यह सोचने को प्रेरित करता है; मैं कौन हूँ कि तू ब्रम्ह्मँड का सृष्टिकर्ता मुझे अपनी उपस्थिति में आने देता है?'' यह वही प्रश्न है जो भजनकार दाऊद ने पूछाः

जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चन्द्रमा और तारागण को, जो तूने नियुक्त किये हैं, देखता हूँ,

तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधी ले? (भजन संहिता 8:3 – 4)

आप पूर्ण रुप से विस्म्याकुल हैं जब आप परमेश्वर की उपस्थिति व महिमा का अनुभव करते हैं। कैसे परमेश्वर इतना महान हो सकता है कि सब कुछ जो है, उसे बना सके और फिर भी इतना छोटा व इतना निकट, कि आप – एक धूल का कण जिसमें उसने साँस फूकी – उसकी उपस्थिति व प्रेम की विकटता को जान सकें? आप ऐसा महसूस करते हैं जैसे आप को स्वर्ग के सिंहासन – कक्ष में ले जाया गया है और परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत बातचीत का अवसर दिया गया है। लगता है उसकी

बाहों ने आपको घेर लिया है और अपने प्यार में लपेट लिया है। संसार की चिन्ताएं समाप्त हो जाती हैं।

परन्तु अभी और भी है। जब परमेश्वर की उपस्थिति आती है, परमेश्वर के गुण भी साथ आते हैं। मूसा के अनुभव के बारे में सोचिये जो निर्गमन 33:18 में पाया जाता है। ''उसने कहा, मुझे अपना तेज दिखा दे''। विनती पर ध्यान दीजियेः उसने परमेश्वर की महिमा 'देखने' के लिये कहा, यह विश्वास करते हुए ि कवह अनुभव की जा सकती है व जानी जा सकती है।

और परमेश्वर ने उत्तर दिया, ''मैं तेरे सम्मुख होकर चलते हुए तुझे अपनी सारी भलाई दिखाऊँगा, और तेरे सम्मुख होकर यहोवा नाम का प्रचार करूँगा, और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँ उसी पर अनुग्रह करूँगा, और जिस पर दया करना चाहूँ उसी पर दया करूँगा।''

भलाई, अनुग्रह, दया उसे ठोस, दृश्यरुप में दिखाये जाने वाले थे। उपस्थिति के साथ, स्वयं परमेश्वर का स्वभाव – उसके अपने गुण आते हैं। देखिये पदों पश्चात क्या हुआः

''तब यहोवा ने बादल में उतरके उसके संग वहाँ खड़े होकर यहोवा नाम का प्रचार किया। और यहोवा उसके सामने यों प्रचार करता हुआ चला, कि यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य, हजारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करने वाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करने वाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहरायेगा, वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन पोतों और परपोतों को भी देने वाला है।''

महिमा अथवा उपस्थिति आती है और साथ ही गुण भी : अनुग्रह, दया, क्षमा, करुणा, भलाई।

अनन्तकाल के लिये जीवन बदल जाते हैं। संक्षेप में पवित्र आत्मा, आत्मा के फल को लाता है जैसा गलातियों 5:22 – 23 में वर्णित है। और सेवा के लिये अभिषेक से पहले, फल आना चाहिये।

तब, सामर्थ है

हाँ परमेश्वर की उपस्थिति है उसकी महिमा, उसका व्यक्तित्व, उसके गुण। पवित्र आत्मा, परमेश्वर, एक व्यक्ति है जो प्रेमपूर्वक और इच्छापूर्वक अपनी उपस्थिति से आपको अवगत कराना चाहता है। और यह सम्भव है, अभी और सदा काल तक, उस उपस्थिति में रहना।

मैं चाहता हूँ कि आप इस सत्य का अनुभव करें कि पवित्र आत्मा की उपस्थिति सेवा के लिये अभिषेक की ओर अग्रसर करती है व उसे करना चाहिये। उपस्थिति, अभिषेक से पहले आनी चाहिये।

यह अभिषेक क्या है? यह परमेश्वर की सामर्थ है। जोर से कहियेः अभिषेक परमेश्वर की सामर्थ है। सरल? हाँ – यद्यपि हम उस शक्ति की बात कर रहे हैं जो किसी भी शक्ति से बढ़ कर है जिसे मनुष्य उत्पन्न कर सकता है। यह वह सामर्थ है जो आकाश व पृथ्वी को अस्तित्व में लाई। यह वह सामर्थ है जिसने मनुष्य की सृष्टि की। यह वह सामर्थ है जिसने यीशु को मृतकों में से जिलाया। यह वह सामर्थ है जो यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर से, ठहराये हुए समय पर पृथ्वी पर ले कर आयेगी और सब बातों को नया कर देगी।

मैं चाहता हूँ कि आप समझेंः 'परमेश्वर – पवित्र आत्मा की उपस्थिति, आत्मा के अभिषेक की ओर अग्रसर करती है जो कि परमेश्वर की सामर्थ है, और परमेश्वर की सामर्थ उपस्थिति के प्रगटीकरण को लाती है। अभिषेक स्वयं – पवित्र आत्मा का अभिषेक – देखा नही जा सकता, परन्तु सामर्थ, उसका प्रगटीकरण, उसके प्रभाव, देखे जा सकते हैं व देखे जाने चाहिये। इसलिये मैं इसे ''साकार अभिषेक'' कहता हूँ। यह, वास्तव में निकुदेमुस को युहन्ना 3:8 में प्रभु की शिक्षा के अनुकूल है कि आत्मा वायू के समान बहती है, जिसके प्रभाव देखे जा सकते हैं।

उद्धार के सन्देश के बाद पवित्र शास्त्र के सबसे विस्फोटक शब्द जो मसीह के मुख से निकले, प्रेरितों के काम 1:8 में लिखित हैं। ये अभिषेक की सच्चाई के लिये अनिवार्य हैं।

''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरुशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।''

आश्चर्यजनक! तुम सामर्थ पाओगे – अभिषेक, आत्मिक वरदान – जब पवित्र आत्मा – उपस्थिति, व्यक्ति, फल, तुम पर आयेगा।

क्या आप देखते हैं? आत्मा का फल, जो आज कलीसिया से गायब है, परमेश्वर की उपस्थिति से जुड़ा हुआ है। वरदान व परमेश्वर की सेवकाई भी दुखद रुप से अनुपस्थित है, यह भी परमेश्वर की सामर्थ से जुड़े हुए हैं।

फल क्या है? ये गुण या लक्षण – विशेषताएं हैं – किसी व्यक्ति की, यहाँ पर परमेश्वर की ये आपके भीतर आरम्भ होती हैं जहाँ परमेश्वर है यदि आप एक विश्वासी हैं। परमेश्वर कहता है, ''मैं अन्दर आऊंगा और मेरे साथ मेरा फल भी अन्दर आयेगा। मैं जाऊंगा और मेरा फल भी मेरे साथ जाएगा।''

सामर्थ के साथ ऐसा नही है। परमेश्वर की सामर्थ आप पर वरदान के रुप में आती है। वह आपके साथ रहती है। जैसा पौलुस ने रोमियों को लिखा, यहूदियों की वर्तमान तथा भविष्य की स्थितियों के बारे में बताते हुए: ''परमेश्वर अपने वरदानों से, और बुलाहट से कभी पीछे नही हटता'' (रोमियो 11:29)। हाँ, यह एक सरल सत्य नहीं है, परन्तु यह सम्भव है कि उपस्थिति चली जाये और वरदान रह जायें, कम से कम कुछ समय के लिये। परन्तु यह अन्ततः विनाश की ओर ले जायेगा।

परमेश्वर विभजित नहीं है

आत्मा का फल, जो उपस्थिति के साथ आता है, वह बढ़ने वाला नहीं है, वे तत्काल हैं। ऐसी बात नहीं है कि फल आपके जीवन में प्रवेश करता है और फिर ''बढ़ता'' है। स्मरण रखिये वे 'आपके' फल या गुण नहीं हैं वे 'परमेश्वर' के हैं। और वह स्वयं को विभाजित नही करता जब वह आप में प्रवेश करता है। न ही वह आप में बढ़ता है। वह सम्पूर्णता के

साथ आता है। धार्मिकता के गुण उसी समय आपके जीवन से चमक सकते हैं व चमकने चाहिये। आप उसे पूरा ही प्राप्त करते हैं।

उसके फल, अतएव, आप में से चमकने चाहियें जब आप उसके राजदूत बन जाते हैं। वे प्रत्येक जीवन को छुएं व प्रभावित करें जिसकी ओर आप बहें, क्योंकि संसार में सुसमाचार का राजदूत होने के लिये निर्भीकता व ऊँची आवाज के अलावा और भी किसी चीज की आवश्यकता होती है।

एक क्षण के लिये रुकिये व सोचिये। ईमानदारी से सोचिये क्या यह आपके जीवन का हाल है? यदि नहीं, तो मुद्दा अभिषेक और सामर्थ नही है। मुख्य है पवित्र आत्मा की उपस्थिति क्या आप उसे दिन – प्रतिदिन, क्षण – प्रतिक्षण अनुभव कर रहें हैं?

मुझे निश्चय है कि आप में से कुछ कह रहे हैं, ''अरे बैनी, फलों को बढ़ने में समय लगता है।'' नहीं मेरे मित्र, आप गलत हैं। पौलुस प्रेरित की ओर देखिये, जो पहले शाऊल कहलाता था, एक व्यक्ति जो दमिश्क के मार्ग पर परमेश्वर के आत्मा द्वारा धराशायी किया गया। वह गिरा व उसमें से निकला – एक नया व्यक्ति वह एक हत्यारा था और परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा, परमेश्वर पुत्र की उपस्थिति के साथ, उसके अनुभव के तुरन्त बाद वह एक हत्यारा न रहा। इससे पूर्व उसके पास परमेश्वर का वास्तविक ज्ञान नहीं था। अकस्मात, वह परमेश्वर को जान गया और उसके साथ रहने लगा। वह परमेश्वर के लिये मरने तक को तैय्यार था। उसे परिवर्तित होने में दस वर्ष नही लगे।

पौलुस सामर्थ के अधीन था और उसने परमेश्वर की आवाज को सुना। यहेजकेल सामर्थ के अधीन था और उसने परमेश्वर की आवाज को सुना। क्यों? क्योंकि प्रभु उपस्थित था और उसने गुणों को उत्पन्न किया। पूरे पवित्र शास्त्र में ऐसी ही घटनाएं हैं।

मेरे मित्र, परमेश्वर की आवाज उसकी उपस्थिति में सुनी जाती है और यह बात अभिषेक के नियन्त्रण में आपको इस योग्य करती है कि आप 'अपने शब्द' बोलें, जिनका परिणाम आये। मुझे एक बार फिर कहने दीजिये। परमेश्वर की उपस्थिति 'उसकी आवाज' को लाती है परमेश्वर के वरदान 'आपकी' आवाज को अतः प्रेरितों के काम 1:8 में यीशु ने कहा, सामर्थी शिष्य उसके 'गवाह' होगें। सामर्थ सेवा के लिये थी, केवल रोमाँच के लिये नहीं।

सामर्थ – आरम्भ से ही

मसीही, पवित्र आत्मा को नये नियम के संदर्भ में ही सोचना पसन्द करते हैं, और यह एक भूल है। पवित्र आत्मा की प्रबल सामर्थ सृष्टि की रचना में अभिव्यक्त हुई। तथा कई बार छुटकारे के इतिहास में भी।

उत्पत्ति 1:2 हमें बताता है कि जब पृथ्वी सूनी व बेडौल पड़ी थी और गहरे जल के ऊपर अंधियारा था, ''परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था''। पवित्र आत्मा सृष्टि के समय से उपस्थित था, ईश्वरत्व के अंश के रुप में, वह पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रथम प्रकटीकरण था। वह सदैव आपके जीवन में भी प्रथम प्रकटीकरण होगा।

जब हम पवित्र आत्मा का अभिषेक का अध्ययन कर रहे हैं, जो परमेश्वर की सामर्थ है मैं चाहता हूँ कि आप सदैव याद रखें कि आत्मा कौन है। कभी – कभी वह कबूतर के रुप में दर्शाया जाता है, पर वह कबूतर नही है। कभी – कभी वह आग की लपट के रुप में चित्रित किया जाता है, परन्तु वह अग्नी नहीं है। कभी – कभी वह तेल या पानी या वायू के रुप में देखा जाता है, परन्तु वह इनमें से कुछ भी नहीं।

वह एक आत्मिक प्राणी है। परन्तु भौतिक रुप न होने के बाद भी वह एक व्यक्ति है, मुझसे या आपसे बढ़कर वास्तविक वह ईश्वरत्व की सामर्थ है।

क्या यह विचित्र नही है कि सम्पूर्ण इतिहास में मनुष्य सामर्थ की खोज में रहा है, फिर भी आज पहले की ही तरह, पुरुष व स्त्रियाँ

साधारणतयः अपनी स्वयं की सामर्थ को बनाने व दिखाने की चेष्टा करते हैं, बजाय सबसे सच्ची व सबसे बड़ी सामर्थ को गले लगाने के?

बाबुल के गुम्मट के समय में उनकी कोशिश यही थी(उत्पत्ति 11) और अब भी उनकी कोशिश जारी है। अब परमेश्वर का शक्तिशाली कम्पन होगा (इब्रानियों 11:26), मानव जाति की सबसे बड़ी सामर्थ मिट्टी की तरह ढह जाएगी।

इस भयग्रस्त संसार में बने सारे नाभिकीय बमों को संयुक्त शक्ति, प्रत्येक बाढ़ व तूफान जो संसार में आया उसकी संयुक्त शक्ति, शैतान व उसके हर एक शैतानी दास की संयुक्त शक्ति, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, स्वर्ग व पृथ्वी के सृजनहार की शक्ति के सामने बेहद कमजोर पटाखे के समान है। अब, प्रिय, यही शक्ति है जिससे हमारा प्रभु आपको ढकना चाहता है।

परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह के बावजूद, जो साधारण समाज के अधिकाँश लोगों में पाया जाता है, आप जैसे लाखों लोग, वास्तविकता के भूखे हैं, जो सच्चे परमेश्वर में पाई जाती है। इसी कारण संयुक्त राज्य अमेरिका के विभिन्न भागों में हमारे मासिक आश्चर्यकर्म क्रूसेडों में हर स्थान पर उमड़ती हुई भीड़ आती है। जब हम लगभग पन्द्रह हजार जोशीले विश्वासियों को बैठा देते है, लगभग चार हजार निराश खोजियों को हमें विवश ही लौटाना पड़ता है। आप देखिये, परमेश्वर ने हमारे समय में असाधारण शक्ति के साथ कार्य करने का निर्णय किया है, सुसमाचार के प्रचार चिन्हों व अद्भुत कार्यों द्वारा सम्मानित किया, जैसा कि उसने पवित्र शास्त्र में कहा था कि वह करेगा, स्पष्ट रुप में यह, इतिहास में बड़ा महत्वपूर्ण समय है, और हमें – हम सबको पवित्र आत्मा के अभिषेक की आवश्यकता है, उन भूमिकाओं को पूरा करने के लिये जिनके लिये वह हमें बुला रहा है। और मैं पूरा तरह आशावादी हूँ। जो उसने प्रतिज्ञा की, वह उसे पूरा करेगा।

इस पुस्तक का उद्धेश्य आपके जीवन में उस आवश्यकता की पूर्ति करनें में सहायता करना है।

अध्याय – 8
आपके पास होना चाहिये

यदि आप परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त होना चाहते हैं तो अभिषेक आपके लिये आवश्यक है, चाहे आप किसी भी स्थिति में क्यों न हों। यह परमेश्वर की उपस्थिति से कहीं अधिक भारी जिम्मेंदारी लाता है, पर आप इसके बिना कुछ नहीं कर सकते।

उसकी उपस्थिति आपकी हो सकती है, और बिना किसी सेवकाई के भी आप उसके साथ नियमित संगति रख सकते हैं, उसे प्रेम करते हुए। उसके साथ चलते हुए। पर जिस क्षण आप सेवकाई में कदम रखते हैं, आपको सामर्थ चाहिये शैतानों, रोग और नरक की शक्तियों से लड़ने के लिये। चाहे आप की सेवकाई की बुलाहट कुछ भी क्यों न हो, आपको उसे पूरा करने के लिये अभिषेक की सामर्थ चाहिये। बिना उस सामर्थ के जो परमेश्वर चाहता है आपसे, आप कभी नहीं कर पाएंगें।

मैं इस पर आवश्यकता से अधिक बल नहीं दे रहा हूँ। यदि आप प्रभु की सेवा के लिये बुलाये गये हैं तो अभिषेक अनिवार्य है। इसके बिना आपकी सेवकाई में कोई वृद्धि नहीं, आशीष नहीं, विजय नहीं होगी।

आप देखिये, यह बात बहुत कटु जान पड़ती है, मेरे जीवन में परमेश्वर की अद्‌भुत उपस्थिति हो सकती है – और मैं उसे किसी भी वस्तु से बदलना नहीं चाहूँगा। मैं एक पुलपिट के पीछे खड़े होकर सेवकाई कर सकता हूँ। परन्तु यदि सामर्थ नही है तो एक – मैं ही होंऊगा जो इस का आनन्द ले रहा होऊंगा। लोग बिल्कुल कुछ भी नहीं देखेंगें। सत्य है, वे उसकी उपस्थिति को महसूस कर सकते हैं, पर मसाही होने के नाते हम सभी को वह महसूस करनी चाहिये। कोई भी उद्धार नहीं होगा, कोई चंगाई नहीं, शैतानो को बांधना नहीं, सामर्थ आवश्यक है।स्मरण कीजिये, प्रभु के स्वर्गारोहण से पूर्व, उसके शब्दों पर मैंने कैसे जोर दिया हैः ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे और तुम मेरे गवाह होगे।'' सामर्थ आने के पश्चात तीन हजार बचाये गये, फिर और पाँच हजार, और फिर सारा यरुशलेम हिल गया। यह सामर्थ है जो परमेश्वर की किसी भी सेवा के लिये आपके पास होनी

चाहिये। उपस्थिति के साथ अनुबद्ध होकर यह सबसे बड़ा लाभ होगा, जो आपके जीवन को मिल सकता है।

जब मैं पुलपिट के पीछे खड़ा होता हूँ, मैं सदैव कहता हूँ, ''प्रभु, कृपा करके आज मुझे अभिषिक्त कर नही तो मेरे शब्द मुर्दा होगें।'' बिना किसी प्रश्न के मैं जानता हूँ कि यदि प्रभु मुझे अपनी शक्ति से ढकने का निर्णय न लिया होता, मेरे पास कलीसिया न होती।

कोई भी जीवन नही बदलते, कोई आत्माएं नहीं बचती और कोई भी शरीर चंगाई नहीं पाते।

बढ़ती आएगी

अब आप जैसे – जैसे परमेश्वर द्वारा दिये गये अभिषेक के साथ चलेंगें, वह आपको और भी देने का भरोसा करेगा। आप देखिये, उपस्थिति, जो 1973 में टोरन्टो में मेरे कमरे में मुझ पर आई थी, वह बदली नही हैं। वह अब भी वहीं उपस्थित है। वह अब भी वही आश्चर्यजनक निकटता है। यह सत्य है कि आप प्रभु के और निकट आते हैं, क्योंकि आप उसे और बेहतर रुप से जान पाते हैं। वह आपको और सिखाता है, पर वह उपस्थित वहीं रहती है।

दूसरी ओर, अभिषेक बढ़ता है। वह आपको थोड़ा – सा देता है और आप पर नजर रखता है। फिर वह आपको और देता है। पर इससे पूर्व वह आपको और दे, कुछ और सबक सीखने होते हैं, और लडाईयाँ लड़नी होती हैं।

उदाहरण के लिये, हर बार जब मुझ पर अभिषेक बढ़ता है मैं उसके बारे में व उसके तरीकों के बारे में, नई बातें सीखने के दौर से गुजरता हूँ – कि यह क्यों हुआ और वह क्यों नही हुआ? मैं अन्तहीनवृद्धि व उत्तेजना पाता हूँ।

मेरे मामले में 1974 से 1980 तक, कनाडा में मेरी अपनी सेवकाई में तथा कैथरीन कुलमन फाउंडेशन के साथ सेवकाई में भी, मैनें मुख्य बात यह सीखी कि, अभिषेक पूरी तरह मेरी आज्ञाकारिता पर निर्भर था।

और यह पूर्णतयः निर्णायक है। अभिषेक, सामर्थ, आज्ञाकारिता के द्वारा आती है। जो थोड़ा सा वह आपको देता है, आप उसके साथ क्या करते हैं? आज्ञा मानें तो वह बढ़ता है। अनाज्ञाकारी हों तो वह समाप्त हो जायेगा।

एक बहुत अच्छा उदाहरण कनाडा में मेरी आरम्भिक सेवकाई के दौरान हुआ। मैं एक सभा से पूर्व बैठा हुआ था और जानता था, मैं ही जानता था, कि प्रभु मेरी सेवकाई में कोई नई बात करने जा रहा है। किसी तरह मैं यह भी जानता था कि मुझे पूछना नही है कि वह क्या है। ''मुझसे मत पूछ'' बस यही मैंनें सुना।

सभा जैसे – जैसे आगे बढ़ी, मैने एक व्यक्ति पर हाथ रखे, जिसे सहायता की आवश्यकता थी, और कुछ नही हुआ। एक दूसरा व्यक्ति आया, और कुछ नही हुआ। सामर्थ के प्रभाव में गिरना नहीं – कुछ नही। तीसरे व्यक्ति के बाद, मैं मानसिक रुप से टूट गया।

तब मेरे भीतर कोई फुसफुसाता रहा, ''कहो, आत्मा की सामर्थ तुम में से होकर जाती है।''

''मैं ऐसा क्यों कहूँ?'' चौथा व्यक्ति, कुछ नहीं। तब पाँचवां व्यक्ति, कुछ नहीं। और सुझाव अभी भी वहाँ थाः ''कहो, आत्मा की सामर्थ तुम में होकर जाती है.........''।

अन्ततः मुझे विचार आने लगा। '' प्रभु, क्या तू मुझे कुछ नया सिखा रहा है?''

''जो मैं कह रहा हूँ, वह कहना आरम्भ करो,'' उसने उत्तर दिया।

अन्त में अगला व्यक्ति आया, तो मैंनें कहा, ''आत्मा की सामर्थ तुम में से होकर जाती है।'' धम्म! वह नीचे गिर गया। अगला भी उसी प्रकार से, फिर अगला भी और अगला भी।

''क्या हो रहा है?'' मैंनें स्वयं से पूछा।

अन्त में मुझे बोध हुआ कि अभिषेक 'मेरे' शब्दों पर निर्भर करता है। परमेश्वर कार्य नहीं करेगा, जब तक मैं नहीं बोलूँ। क्योंकि उसने हमें अपने साथ सहकर्मी बनाया है। उसने बातों को इसी प्रकार ठहराया है।

वह सबक उन आरम्भिक दिनों में चलता रहा। उस समय पर, लोंगों को चंगाई प्राप्त हुई, परन्तु तब नही, जब वे अपने स्थानों बैठे रहें। उन्हे आगे आना पड़ता था और मुझे उन पर हाथ रखना पड़ता था, इसके पूर्व कि चंगाई आये। परन्तु एक दिन मैनें अन्दर की आवाज को सुना; ''रोग को सार्वजनिक रुप से डांटो'' जैसा मैनें पहले किया था, मैनें पुनः प्रभु से उसी प्रकार का वार्तालाप किया, फिर अन्त में ऊँची आवाज में कहा, ''मैं इस स्थान पर प्रत्येक रोग को यीशु के नाम से झिड़कता हूँ।''

मेरे भीतर प्रभु ने कहा, ''एक बार फिर कहो''। मैने आज्ञा मानी, मैं इस स्थान पर प्रत्येक रोग को यीशु के नाम से झिड़कता हूँ।''

''एक और बार,'' उसने कहा।

अतः मैनें एक और बार कहा। सबसे विस्मयकारी बात हुई। तत्क्षण मैंने जाना कि बालकनी में किसी ने चंगाई पाई है, और जैसा मैनें सुना था वैसा ही कह दियाः ''किसी के कूल्हे व टाँगें चंगी हुई हैं।''

बड़े लम्बे समय तक कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला। तब अन्त में एक स्त्री नीचे आई और कहा कि वह उसी क्षण चंगी हो गई थी, जब मैने कहा था।

उस क्षण से मैनें सीखना आरम्भ किया, कि अभिषेक नहीं बहेगा, न ही किसी को छुएगा यदि मैं भयभीत हूँ। निर्भीकता आवश्यक है। मुझे प्रभु द्वारा दिये गये अस्त्रों का प्रयोग करना है, उसके शब्द व उसका नाम। उसने कहा है – ''मेरे नाम में करो''।

अब, यह अति महत्वपूर्ण है जो उन अस्त्रों को उसके नाम में प्रयोग करने का प्रयत्न करते हैं और उसकी उपस्थिति और अभिषेक से वंचित हैं, मूर्ख हैं। कोई जो यह उच्चारित करता है कि ''उसके कोड़े खाने से मैं चंगा हुआ'' और उसके पास उसकी उपस्थिति नहीं है, वह अपना समय बरबाद कर रहा है।

मैं पुनः यह कहना चाहता हूँ: उपस्थिति मेरे जीवन में आई और उसके साथ मेरी संगति रही, उस वर्ष जब मैं टोरन्टो में अपने कमरे में पवित्र आत्मा के साथ अकेला था। उसने मेरी सहायता की, मुझे तसल्ली दी और मुझे सिखाया। कुछ समय बाद उसने मुझे अधिकार दिया, सामर्थ

दी, उसके वचन को पूरा करने की: ''मेरे नाम से वे दुष्टात्माओं को निकालेंगें'' ''मेरे नाम से वे रोगियों पर हाथ रखेंगें और रोगी चंगें हो जाएंगें''...... ''मेरे नाम से''।

मै अज्ञानता से नहीं बोल रहा और कार्य कर रहा था, परन्तु ज्ञान व आज्ञाकारिता में मैं उसे जानता था व आज्ञापालन कर रहा था। यही सारी बात है। यदि आपका उसके साथ सम्बन्ध है और आप स्वयं को उसकी आज्ञाओं के अधीन कर दें, आपके जीवन में, उसका नाम सामर्थपूर्ण होगा। अगर आप ऐसा नहीं करते, आप शैतानों द्वारा हंसी में उड़ाये जाएंगें। न, आपको परमेश्वर की इच्छा के साथ बहना होगा, तीकि परमेश्वर की सेवा में परमेश्वर की शक्ति मिले।

निश्चय ही, ऐसे समय थे जब मैंने सोचा कि प्रभु एक दिशा में जा था, पर वह नहीं जा रहा था। मैं उस गलत मार्ग पर गया और हर बार औंधे मुँह गिर पड़ा। पर उसी समय मैं वापस लौटा, सही मार्ग ढूंढा और अभिषेक वापस आ गया।

शक्तिशाली व्यक्ति वाला सिद्धान्त

1980 के दशक में मैं सीखता रहा। मैं रेनहार्ड बॉन्के के साथ था जो चंगाई देने वाला प्रचारक था, जिसकी आफ्रीका में बड़ी अविश्वसनीय सेवकाई थी तथा अन्य लोंगों के साथ, जो सामर्थ में प्रभु की सेवा कर रहे थे। मैनें उन से बहुत कुछ सीखा और अभी भी सीखता हूँ।

उदाहरण के लिये, एक दिन मैनें बॉन्के को पुकारते हुए सुना – ''तुम अन्धेपन के शैतान, मैं तुम्हे यीशु के नाम से आज्ञा देता हूँ कि निकल जाओ।''

''यह क्या है? मैने सोचा। मैनें जाना भी न था कि एक अन्धेपन का शैतान भी है। मैं याद नही कर सका कि मेरी सभाओं में किन्ही अन्धे लोगों को चंगाई मिली है या नहीं, पर उसने अन्धे लोगों को दायें, बायें, सब ओर चंगा किया। ''ओह'' मैनें स्वयं से पूछा, ''क्या यह सच है?''

अतः अपनी सभाओं में मैने इस प्रकार की आज्ञा देने की चेष्टा की और इतने अन्धे व्यक्तियों को चंगाई मिली, जितना मैं कभी सोच भी नही सकता था कि संभव है।

पवित्र शास्त्र के अध्यन में आगे बढ़ते हुए मैनें सीखा, कि प्रभु सदा शक्तिशाली व्यक्तियों के साथ निपटता है। वह कभी छोटे शैतानों से नही निपटता, पर सदैव बड़े – बड़ों के पीछे जाता है – मुखियाओं के पीछे, जिनका साधारण शैतानो पर अधिकार रहता है।

मेरी चंगाई सभाओं में प्रभु अक्सर मुझे शक्तिशाली व्यक्ति दिखाता और मैं उसे सीधे – सीधे कहता – ''तुम दुर्बलताकी आत्मा'' .... ''तुम मृत्यू की आत्मा। और तब ही आश्चर्यकर्म फूट पड़ते। शक्ति अविश्वसनीय होती है जब मैं शक्तिशाली व्यक्ति को पुकारता व आज्ञा देता, ''यीशु के नाम में, लोगों को जाने दो।'' आप वास्तव में सुन सकते हैं। वूश.........! सामर्थ सम्पूर्ण हॉल में बहती है।

मैनें पाया कि लोग जिस क्षण मुक्त होते व चंगे होते, वे एकदम अचम्भे में पड़कर चीख उठते।

इस प्रकार से, मैने अभिषेक के बारे में और अधिक सीखा। और यह बाइबल के ज्ञान के स्तर को और बढ़ाता है। अभिषेक आज्ञाकारिता पर निर्भर करता है, हाँ, परन्तु पवित्र शास्त्र का ज्ञान भी उस आज्ञाकारिता की कुन्जी है। क्योंकि जितना अधिक आप परमेश्वर के विषय में जानते हैं, उतना अधिक वह आपको सामर्थ देने का भरोसा कर सकता है।

मैं बहुधा मिस कुलमन के प्रश्नों के विषय में सोचता हूँ। ''क्या आप वास्तव में उसे जानते हैं? क्या आप जानते हैं कि उसे क्या दुखी करता है? क्या आप जानते हैं उसे क्या प्रसन्न करता है? और मैं सोचता हूँ मैं उसे उत्तर दे सकता हूँ, हाँ, कैथरीन, मैं वास्तव में सोचता हूँ, कि मैं उसे जानता हूँ।'' पर मैं उसे अब तक पूरी तरह नहीं जानता, मैं अब भी सीख रहा हूँ। मैं नही सोचता कि मैं कभी सीखना बन्द करुँगा और मुझे निश्चय है कि आप भी ऐसे ही होंगें।

कई बार मैं ऐसे बिन्दु पर आया, जहाँ मैनें कहा ''मैने पा लिया है,'' और तब उसने कुछ ताजा व नया कार्य किया। वह कुछ समय तक

एक तरीके से कार्य करेगा और तब अभिषेक प्रवाहित होता है। और फिर वह भिन्न तरीके से करता है – हाँ, कभी भी वचन के विरोध में नहीं।

लिस्बन में हँसी

पुर्तगाल के लिस्बन शहर में एक सभा के दौरान मैंनें प्रभु के बारे में कुछ सीखा, जो अभी भी मुझे विस्मित करता है। यह एक स्त्री से संबधित है जो चालीस से पैंतालीस वर्ष की आयू की थी। वह स्त्री एक साधारण, माँ के प्रकार की थी, सिर पर स्कार्फ बाँधे हुए, परन्तु एकदम भावहीन व शाँत। मैनें उसके लिये प्रार्थना करना आरम्भ किया। जिस क्षण मैनें उसे छुआ, वह आत्मा की सामर्थ के प्रभाव में गिर गई और अविश्वसनीय रुप से हँसने लगी। तत्काल उसका चेहरा लाल हो गया और वह खिल रही थी वह हँस रही थी – अप्रिय ढंग से नही परन्तु सुन्दरता से।

तब वह हर्षातिरेक में फर्श पर आगे पीछे लोटने लगी, पूर्णतया परिवर्तित हो गई। यह सामान्य, दीन महिला, शाँत, नीरस चेहरे वाली, बिना श्रंगार के सादी स्त्री, सबसे खूबसूरत हँसी से हँसने लगी जो मैनें कभी देखी हो। वह पीछे और आगे, पीछे और आगे हिलने लगी। मैनें अपने सहायकों से कहा उसे न छुएं; मै इतना भावुक हो गया, कि मैं उसे देखना और पवित्र आत्मा के विषय में कुछ नया सीखना चाहता था। मुझे निश्चय था कि पूरी घटना इतनी खूबसूरत है कि यह ''शरीर'' में नहीं है। मैं सच में उसे रोक कर पूछना चाहता था कि ''आपको क्या हो रहा है?'' पर न पूछ सका वह ऐसे हर्षोन्माद में थी।

जब वह अन्ततः रुकी, वह बात नही कर सकी। वह पूरी तरह भावाभिभूत हो गई थी। अन्त में उसने अनुवादक के द्वारा से कहा, ''उसका वर्णन करना असम्भव है।'' मैं बुरी तरह चाहता था कि मैं पुर्तगाली बोल सकता, तो मैं और जान सकता।

प्रभु ने मुझे उस दिन कुछ नया सिखाया। मैनें कैथरीन को पवित्र हँसी के विषय में बात करते सुना था, पर मैनें कभी नहीं सुनी थी। उस पाठ के बाद से मैनें इसे कई बार अपनी सेवकाई में होते देखा है। जब

यह शरीर में नहीं है, जो कि अप्रिय है, वह हर्षोन्माद का उत्तम उदाहरण है। मैनें बड़ी इच्छा की है, कि प्रभु किसी समय यह मेरे साथ भी करे, क्योंकि वह अपने लोंगों के लिये अपने महान प्रेम में, सच में अद्भुत है।

परमेश्वर स्वामी है

जैसा मैनें कहा, मेरी सेवकाई ने 1990 में बड़ी लम्बी छलांग लगाई, जब प्रभु ने मुझसे ओरलेन्डो क्रिश्चियन सेन्टर में नियमित पासबान सेवकाई के साथ – साथ, देश – भर में मासिक चंगाई सभाएं आरम्भ करने को कहा।

अनेकों असाधारण घटनाएं घटीं। एक बात जो हर सभा में बहुधा दूसरे दिन की प्रातः काल शिक्षा देने की सभा में होती, वह यह थी, कि प्रभु की ओर से मुझे यह निर्देश मिलता, कि लोगों को शाँत करो, उनकी आँखे बन्द और हाथ ऊपर उठे हुए हों। प्रभु मुझसे कहता,''कहो 'अभी' और मैं उन्हे स्पर्श करुँगा।'' केवल यही बात वह मुझ से करने को कहताः ''कहो 'अभी'।''

आश्चर्यजनक है! मैं करता, और एकदम लोगों की हाँफने की आवाज, यहाँ तक की चीखें भी सुनाई देतीं, जैसे ही सामर्थ आती। मैं अपनी आँखे खोलता और निश्चित रुप से दस हजार या उससे अधिक उपस्थित लोगों में से दो तिहाई फर्श पर ढेर हो गये होते। हर प्रकार की चंगाई मिलती और परमेश्वर स्वयं को शक्तिशाली रुप से परिचित कराता।

और भी तरीके हैं जिनमें आत्मा ने हम पर ताजगी उंडेली है। उदाहरणार्थ, मैनें देखना आरम्भ किया कि परमेश्वर नास्तिकों को चंगाई दे रहा है। वह प्रोटेस्टेन्ट, कैथलिक, पेन्टीकोस्टल, गैर – पेन्टीकोस्टल, चामात्कारिक, गैर – चामात्कारिक – हर एक को, यहाँ तक कि जो मेरी राय में नया जन्म प्राप्त नहीं थे, अथवा प्रभु के लिये जीवन नहीं बिता रहे थे, उन्हे भी वह स्पर्श कर रहा था।

स्पष्ट रुप से मुझे तथा हर किसी को सीखना चाहिये – कि हम परमेश्वर को सीमित नही कर सकते। हम उसे नही बता सकते कि

किसके साथ आश्चर्यकर्म होने चाहिये और किसके साथ नही। और हमारा प्रेम उदार होना चाहिये, जितना उसका।

मैनें एक जाने – माने परमेश्वर के जन से पूछा कि अविश्वासियों को क्यों चंगाई मिलती है? और उसने पूछा, ''यीशु ने किन्हे चंगा किया?''

इसके सिवा मेरे पास कोई उत्तर नहीं था, ''तुम सही हो। उसने अविश्वासियों को चंगा किया।'' इस प्रकार मैं सीख रहा हूँ – पुनः सीखता रहा हूँ – कि हम परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा कार्य कर रहे हैं न कि अपने स्वयं के कर्मों के द्वारा। यदि वह किसी पर दया करना चाहता है जो मेरी सभाओं में उत्सुकतावश आता है या शायद उपहास करने को, मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ, ''मैं अभी भी सीख रहा हूँ।''

अध्याय – 9
तीन अभिषेक

पवित्र शास्त्र, पवित्र आत्मा के तीन अभिषेकों को दर्शाता है। उनका ज्ञान एक मसीही के रुप में आपकी सम्भावनाओं को संकेन्द्रित करने में सहायक होगा।

कोढ़ी का अभिषेक

प्रथम है कोढ़ी अभिषेक लैव्यवस्था 14 सिखाता है, कि कोढ़ी छावनी से बाहर रहता था। याजक को बाहर जाकर बलिदान का लहू उस पर लगाना होता था। तब उसे छावनी में लाकर, पुनः लहू लगाना और फिर तेल लगाना, ''उसके लिये यहोवा के आगे प्रायश्चित करना'' होता था।

नया जन्म प्राप्त प्रत्येक विश्वासी ने कोढ़ी के अभिषेक का अनुभव किया है, जो उद्धार से सम्बद्ध है। कोढ़ इस मामले में एक प्रकार का पाप है, स्वाभविक संसार में असाध्य है, पर परमेश्वर द्वारा उपचार योग्य है। पाप भी ऐसा ही है, मनुष्य इसे व इसके प्रभावों को दूर करने के लिये कुछ नहीं कर सकता।

पुराने नियम के औपचारिक शुद्धिकरण में, बलि किये हुए पशु का लहू लगाया जाता था। नये नियम में, हम पाते हैं कि पाप का एक मात्र उपचार – तब और आज, यीशु मसीह का लहू है। लैव्यवस्था के पशु बलिदान, परमेश्वर के मेमने के सिद्ध बलिदान की ओर, मात्र एक संकेत थे। वे एक छाया थे, यीशु वास्तविकता था।

यूहन्ना 1:29 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यीशू को आता देख घोषणा करता है, ''देखो! परमेश्वर का मेमना जो जगत का पाप उठा ले जाता है।'' उनके लिये, जिन्होंने उसे जान लिया। यीशु परमेश्वर का वही मेमना था यीशु ही एक मात्र बलिदान था, जो संसार के पापों का प्रायश्चित कर सकता।

लैव्यवस्था के औपराचिक शुद्धिकरण में, लहू लगाया जाता था, फिर तेल। बलिदान के लहू का लगाया जाना, सांकेतिक है – मसीह के लहू का, जबकि तेल का लगाया जाना सांकेतिक है – एक जीवन पर पवित्र आत्मा के स्पर्श व प्रभाव का।

जिस प्रकार यीशु मसीह का लहू बह कर सब तक पहुँचता है, जो उसके नाम को पुकारते है, ऐसे ही कोढ़ी का अभिषेक सारी राष्ट्रीय व साम्प्रदायिक बाधाओं को तोड़ देता है। क्योंकि जब कोई यीशु मसीह के अनुग्रह का अनुभव करता है, पवित्र आत्मा ही हैं जो उसे पाप के लिये दोषी ठहराता है और उसे परमेश्वर की क्षमा के लिये आश्वासन देता है।

अतः इस प्रकार, उद्धार के समय आप प्रथम अभिषेक – कोढ़ी के अभिषेक का अनुभव करते हैं – जो अभिषेक के तेल द्वारा, जो आप पर उंडेला गया, लहू की सामर्थ को प्रगट करता है।

याजक का अभिषेक

मसीह के बहुमूल्य लहू द्वारा शुद्ध किये गये, नया जन्म पाये हुए व आत्मा द्वारा छाप लगाये गये, एक विश्वासी के रुप में आप दूसरे अभिषेक की ओर बढ़ सकते हैं और बढ़ना चाहिये, वह है – 'याजक का अभिषेक' एक बड़ी संख्या में विश्वासियों को, उनके जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य के इस स्तर का कोई ज्ञान नहीं है, और निश्चय ही उन्हे कोई बोध नहीं है कि इसे कैसे प्राप्त करें। यदि आप उनमें से हैं, जिन्हे इस आशीष का कुछ भी पता नहीं है, पढ़ते जायें और आप परमेश्वर की अतिरिक्त सामर्थ के अभिषेक को खोज लेगें व उसमें प्रवेश कर पाएंगें।

इस कदम के महत्व पर मैं जोर डालूँगा, क्योंकि मसीह की देह के प्रत्येक अंग के पास एक सेवकाई होनी चाहिये। यह अभिषेक है प्रभु की सेवकाई करने के लिये, जिसमें आत्माओं को प्रभु के पास लाना शामिल है। इसमें शैतान व रोगों से युद्ध करने के द्वारा उसकी सेवा करना शामिल नही, अपितु याजकों की भाँति उसकी सेवकाई करना है। क्योंकि हम सब परमेश्वर के याजक हैं। यद्यपि आवश्यक नहीं कि हम सब

पुलपिट के पीछे खड़े होने अथवा सुसमाचार प्रचार और चंगाई सभाएं करने के लिये नियुक्त किये गयें हों।

इस कारण से, यदि हम, परमेश्वर के सेवक हैं और हमारे पास सेवा करने के लिये आत्मा की सामर्थ होनी चाहिये। इसका अर्थ है हमें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लेनें की आवश्यकता है, जो हमारे ऊपर पवित्र आत्मा का याजक वाला अभिषेक है। इसके बिना, हम बहुत थोड़ा कर पाएंगें।

साथ ही – और यह महत्व पूर्ण है, याजक वाला अभिषेक, मसीह की देह में एकता द्वारा प्रमाणित होता है, जैसे परमेश्वर के राज्य में जीवन। बहुत बार इस अभिषेक के स्वनिर्धारित वाहकों से मेरी मुठभेड़ हुई है, जो अकेले भेड़िये हैं। वे सोचते हैं कि ''उनकी'' बुलाहट व ''उनकी'' सेवकाई इतनी श्रेष्ठ है, कि वे मसीह की देह कि उपेक्षा कर देते हैं। वे वास्तव में परमेश्वर की उपेक्षा करते हैं

जब वास्तविक याजक वाले अभिषेक का अनुभव होता है, एकता व समन्वय होता है। स्मरण कीजिये भजन संहिता 133: ''देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें। यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारुन के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर उसके वस्त्र की छोर तक पहुँच गया।''

व्यक्तिगत याजक वाला अभिषेक कोई वस्तु नहीं होती; वह एकत्व में एकता में आता है जब कलीसिया, एक देह की भाँति कार्य करती है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, पिन्तेकुस्त के दिन 120 लोग एक साथ थे – एक मन होकर – ऊपर वाले कमरे में, और पवित्र आत्मा उन पर आया, आग और सामर्थ के साथ। वे उस कमरे से बाहर गये और प्रभु की सेवा की, वहाँ जमा हुई भीड़ के सामने साक्षी दी। तीन हजार बचाये गये। क्या अभिषेक है! स्पष्ट रुप से परमेश्वर वहाँ उपस्थित था।

याजक वाला यह अभिषेक, एक ही बार का अभिषेक नहीं है, जैसा कि कोढ़ी का अभिषेक है। पुरानी वाचा के अन्तर्गत याजको का, प्रतिदिन तेल से अभिषेक होता था। यही बात आपके साथ भी है नई वाचा के अन्तर्गत। आप को दैनिक अभिषेक चाहिये।

याजक वाला अभिषेक पवित्र आत्मा की उपस्थिति, उसकी सहभागिता व उसकी संगति को लाता है। प्रकाशन का ज्ञान आता है, क्योंकि कोढ़ी वाले अभिषेक में हमारा परमेश्वर के साथ बड़े अद्‌भुत व असाधारण तरीके से परिचय होता है और हम अपने लिये यीशु मसीह की पूर्ण आवश्यकता को देख पाते हैं। परन्तु वास्तव में हम बहुत कुछ नहीं समझते।

बड़ी दुखद बात है कि कई मसीही अपनी पसन्द से ही कोढ़ी वाले अभिषेक के स्तर पर ही रहते हैं। वे और की खोज नही करते। वे अपना समर्पण नहीं करते। उनके कान संवेदनारहित हैं, वे परमेश्वर की आवाज नही सुनते।

और बाइबल हमे बड़ी स्पष्ट रीति से बताती है कि यीशु ने कहा, ''मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं।'' यदि सच में आप उसकी भेड़ों में से एक हैं, और याजक वाला अभिषेक पाये हुए हैं, आप उसकी उपस्थिति को जानेंगें और परमेश्वर की कोमल आवाज को नियमित रुप से सुनेंगें। यद्यपि यह एक बार का ही अनुभव नहीं है, यह बार – बार नया करना पड़ता है।

कभी – कभी परमेश्वर अविश्वसनीय सत्य आपके लिये प्रगट करेगा और कभी वह केवल आपको यह महसूस करने देगा कि वह आपसे कितना प्रेम करता है। सम्भवतः वह किसी विषय पर आपको सुधारे अथवा सिखाये। शायद जब आप उसका वचन पढ़ रहे हैं, तो पवित्र शास्त्र का कोई विशेष अंश वह आपके लिये स्पष्ट रीति से दर्शाये।

यद्यपि, आप बहुत कम या कभी भी एक श्रव्य आवाज को न सुनें, उसके पास बहुत से उपाय हैं आपसे बात करने के। परमेश्वर का नियमित वार्तालाप इस पर निर्भर नही करता, कि वह कितनी जोर से बोलता है, परन्तु इस पर कि आप कितनी अच्छी तरह से सुनते हैं।

''जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले!'' मत्ती 11:15 कहता है। आपको हर दिन कुछ समय निकालना चाहिये कि प्रभु के सामने शाँत रहें, ताकि उसकी शाँत धीमी आवाज सुनी जा सके। जब आप बाइबल पढ़ते हैं, पवित्र आत्मा के साथ संगति करते हैं तथा सुनते हैं, आप उस दैनिक ताजगी का अनुभव करेंगें, जो आपके हृदय को स्वामी के प्रति प्रेम से प्रज्वलित रखेगी।

कोढ़ी वाला अभिषेक (उद्धार) एक बार का अनुभव है तथा खो नही सकता, जब तक की स्वेक्षा से आप उससे दूर न चले जायें। परमेश्वर आपको कभी नहीं छोड़ेगा, जब तक आप उसे न छोड़ें। इसके लिये एक निर्णय चाहिये कि बचने के बजाय आप नष्ट होना चाहेंगें।

याजक वाला अभिषेक (उपस्थिति) दूसरे हाथ पर, खोया जा सकता है, क्योंकि जब पाप आपके हृदय में आता है वह चला जाता है। इसी कारण से उसे प्रतिदिन नया करना पड़ता है। वह आपको परमेश्वर की उपस्थिति में लाता है – इतना निकट, इतना वास्तविक कि आँसू आपके गालों से बह निकलेंगें।

राजा का अभिषेक

एक बार आपने कोढ़ी वाले अभिषेक का अनुभव किया और याजक वाले अभिषेक तक भी चले गये, वहीं पर रुक न जायें। ये महत्वपूर्ण व अद्‌भुत हैं, पर और भी अधिक सम्भव है।

राजसी अभिषेक के साथ किसी भी बात की तुलना नहीं हो सकती क्योंकि यह सबसे शक्तिशाली है। यह एक व्यक्ति को परमेश्वर में बड़े ऊँचे अधिकार के स्थान पर उठा देता है। उसे शैतानों पर अधिकार, दुष्टआत्माओं को एक शब्द से निकलने की सामर्थ प्रदान करता है। केवल यही आपको परमेश्वर के शत्रुओं को खदेड़ने की शक्ति देगा जैसा पौलुस प्रेरित ने किया।

राजसी अभिषेक प्राप्त करना सबसे कठिन है। जबकि कोढ़ी वाला अभिषेक 'यीशु को ग्रहण करने' से आता है तथा याजक वाला अभिषेक 'यीशु के साथ सहभागिता' रखने से आता है, राजसी अभिषेक 'यीशु के आज्ञाकारी होने' से आता है।

यह तब होता है जब आप 'रेमा' प्रभु का वचन सुनते हैं जो उसी समय के लिये बोला गया है – जो कहता है, ''प्रभु यों कहता है'' – तब

आप राजसी अभिषेक प्राप्त करते हैं। आप देख लेंगें, 'लोगोस' अथवा लिखित वचन है – बाइबल पर यह आपको अभिषेक नहीं देता, यद्यपि लोगोस बहुत महत्वपूर्ण है, आकाश में स्थिर है और सदा काल तक सत्य है।

सभाओं में बढ़ोत्तरी आती है

यह अभिषेक मेरे जीवन में सबसे अधिक प्रबल हुआ। जब प्रभु ने 1990 में मुझे निर्देश दिया कि मैं मासिक सभाएं पूरे देश में आरम्भ करुं, जो मैं तब से कर रहा हूँ। मैने केवल आज्ञा मानी और मुझे अतिरिक्त अभिषेक मिला, यद्यपि मैं इसमें बड़ी तेजी से बढ़ा हूँ। मैं जानता हूँ कि भारी अभिषेक सीधे आज्ञाकारिता द्वारा आता है।

मैनें इस अभिषेक को पहले भी जाना है। परन्तु बड़ी सभाओं में मुझे तुरन्त सामर्थ प्राप्त होती है कि रोग, कष्ट के शैतानों को निकाल सकूं, तथा विशिष्ट निर्देश पा सकूं, कि प्रतिरात आने वाले बारह से पंद्रह हजार व्यक्तियों की भीड़ में पवित्र आत्मा क्या कर रहा है। सैकड़ों प्रमाणित चंगाईयाँ और हजारों परिवर्तन हुए हैं, जिनमें पहियेदार कुर्सी से उठनेवाले व बैसाखीयाँ छोड़ने वाले लोग भी शामिल हैं। अनेक अन्धी आँखे व बहरे कान खुल गये व प्रमाणित हुए।

तुलसा, ओक्लाहोमा की एक बड़ी सभा में, ओक्लाहोमा नगर की एक स्त्री ने जो पहियेदार कुर्सी पर थी, चंगाई पाई। उसके रोग को 'असफल पीठ संलक्षण कहते हैं', जिसमें नाड़ियाँ क्षतिग्रस्त और हड्डियाँ विकृत हो जाती हैं। यह मंच पर हजारों लोगों के सामने हुआ। उसने बताया कि ओक्लाहोमा सिटी क्लीनिक के डाक्टरों ने उससे कहा था कि नाड़ियों के क्षतिग्रस्त होने के कारण वह कभी भी चल नहीं पाएगी। कुछ समय के अन्तराल पर उसे जाँचा गया, उसने कहा वह ''बढ़िया चल रही है'' और बिना पहियेदार कुर्सी के।

तुलसा में ही, जहाँ अभिषेक बहुत भारी था, न्यू मैक्सिको के हॉब्स से आई एक स्त्री जिसे अलब्यूकर्क के एक डाक्टर ने दीर्घकालिक

ल्यूकीमिया बताया था, चंगी हुई और बाद में उसके पास कागजात थे जो यह बताते थे कि वह ल्यूकीमिया से मुक्त है।

मेरा दैनिक टेलीविजन कार्यक्रम प्रभु से मिले निर्देश का परिणाम था, उसी समय जब मुझे सभाएं आरम्भ करने का वचन मिला। इसमें हम विभिन्न सभाओं के संक्षिप्त दृश्य दिखाते हैं, साथ ही लोगों के लिये सीधे प्रार्थना भी करते हैं। लास वेगस की एक स्त्री, जिसे लिम्फोसाइटिक ल्यूकीमिया बताया गया था, कार्यक्रम देखते हुए चंगी हो गई। उसकी चंगाई को उसे डाक्टर ने प्रमाणित किया, जिसने कहा कि उसने ऐसी बात कभी नहीं देखी। उसकी बीमा कम्पनी ने उसकी दर घटा दी जब उन्हे प्रमाणिक चंगाई के विषय में बताया गया।

और यह चलता रहा : पोर्टलैण्ड ऑरेगान की एक सभा में मिलवॉकी की एक स्त्री को दुर्बल करने वाला पर्यावरण संबंधी रोग था (वास्तव में वह एक एलर्जिक प्रतिक्रिया थी जिसने उसके मुख्य अंगों को अवरोधित कर दिया था)। उसने चंगाई पाई। इस आश्चर्यकर्म को उसके डाक्टर ने प्रमाणित किया। स्पार्अनबर्ग, साउथ कैरोलिना की एक सभा में एक स्त्री चंगी हुई जिसे सीने में एक गम्भीर बीमारी थी। इस चंगाई को भी उसके चिकित्सक ने सत्यपित किया।

और इसमें एक – एक बात प्रभु द्वारा की गई है। वही सारी स्तुति और महिमा और आदर पाता है।

अभिषेक के विषय में, सभाओं के दौरान जब मैं मंच पर होता हूँ, तो निश्चित परिवर्तन मुझ में आता है। मैं जानता हूँ कि जब मैं ऊपर जाता हूँ तो उपस्थिति मेरे साथ है जैसी वह सुबह होटल में थी और दिन भर थी। परन्तु जब मैं मंच पर चढ़ता हूँ, ऐसे प्रतीत होता है जैसे एक भारी अभिषेक व ''घना आवरण'' मुझ पर आ पडा है।

सभा से पूर्व जब मैं एक व्यक्ति के लिये प्रार्थना करता हूँ और वह आत्मा के प्रभाव में गिर जाता है, परन्तु जब मैं प्रभु के सेवक के रुप में युद्ध करने को तैयार, मंच पर जाता हूँ, विस्मयकारी उपस्थिति और सामर्थ होती है जो एक साथ सैकड़ों को गिरा देती है। छोटा – सा बैनी हिन्न ही उसे महसूस नही करता, परन्तु वह पवित्र शक्ति प्रदर्शित की जाती है

– सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शक्ति। आश्चर्यकर्म सभाओं में मैं अपने लिये वास्तव में एक नये स्तर की ओर बढ़ा, जब परमेश्वर ने अपना वचन पूरा किया और सुसमाचार प्रचार के साथ – साथ चिन्हों व अद्‌भुत कार्यो को दिखाया।

मैनें पाया बड़े आश्चर्यकारी ढ़ंग से, कि साधारण रुप से हाथ को हिलाने से ही, सामर्थ निकलती है जो लोगों को फर्श पर गिरा देती है जैसे ही अभिषेक उन्हे स्पर्श करता है। यहाँ तक की साँस फुकना ही बहुधा लोगों को नीचे डाल देता है, जैसे कोई एक पंख से गिरा दिया गया हो। परमेश्वर की शक्ति के असाधारण प्रदर्शन के इन सब मामलों में, मैनें पाया कि मैं अपने हाथ पर एक सुन्नपन को महसूस करता हूँ। मैं जानता हूँ कि सुन्नपन सामर्थ नही है, परन्तु सामर्थ के परिणाम स्वरुप है। न ही लोगों को गिराना सामर्थ है, वह सामर्थ का प्रमाण है।

मैं आश्चर्यचकित था और पहले से कहीं अधिक पवित्र आत्मा के अभिषेक की सामर्थ को पहचान रहा था, जो लोगों को परमेश्वर की वास्तविकता के बारे में कायल कर रही थी, ऐसे ढंग से जिसे मैनें पहले अनुभव नहीं किया था।

हाउसटन से उदाहरण मिले

हाउसटन की एक सभा में, प्रभु ने ठीक समझा कि एक बड़े प्रभावशाली ढंग से इस लहराने (या ''फेकनें'' जैसा कुछ ने इसे कहा) और एक अलग प्रकार से फुँकने के असाधारण स्वभाव को दर्शाये।

ग्लोरिया स्लोसर, एक अच्छे मित्र व सहकर्मी की पत्नी, जिसने पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को अनेक वर्षों से जाना व उसकी सेवा की, 12,500 की भीड़ की प्रथम पंक्ति में बैठी हुई थी। वह आत्मा द्वारा कभी गिराई नहीं गई थी, परन्तु पूर्णतया ऐसी बातों में विश्वास करती थी।

जब सामने के लोग बोलने में काफी मुखर हो गये, कि मैं उनकी ओर लहराऊं या फेकूं, मैनें ऐसा ही किया और ग्लोरिया लगभग दस पंक्तियों के लोगों के साथ, सामर्थ के प्रभाव में गिर गई। बाद में उस ने

कहा, वह एक अद्‌भुत क्षण था, एक प्रसन्न व हंसने का क्षण, जब वह तीव्रता से प्रभु को महसूस करने लगी।

कुछ क्षण पश्चात, मैनें कई सौ लोगों को आगे बुलाया, जो प्रभु के लिये एक गहरा समर्पण करना चाहते थे तथा उसके लिये अभिषेक को पाना चाहते थे। ग्लोरिया लगभग आठवीं पंक्ति में थी। मैनें फेंकने का सोचा, पर मेरे अन्दर एक आवाज ने कहा, ''फूँको''। बस यही ''फूँको''। अतः मैनें माइक में फूँका, और सैकड़ों नीचे गये, ग्लोरिया समेत।

उसने बाद में इसका ऐसे वर्णन किया, ''कुछ ऐसा जिसे तुम शब्दों में नहीं व्यक्त कर सकते, पर वह बहुत अच्छा था'' – साथ ही साथ परमेश्वर की उपस्थिति का महान बोध भी हुआ। बाद में उसने दोनों घटनाओं में रोचक बात देखी, ''मैने सोचा कि लोग आगे से पीछे की ओर जायेगें और मैं धक्के से नीचे गिरा दी जाऊंगी, एक डोमिनो प्रभाव में पर वह ऐसा नही था। लोग पिछली तरफ से पीछे की ओर गिरे और आपको धक्का नहीं लगा। जब मैं गिरी मैं अपने पीछे एक स्त्री पर पड़ी और वह शीघ्र ही कहने लगी, 'उठ जाओ, उठ जाओ'। मैं केवल यही कह पाई ''मैं नही उठ सकती; नहीं उठ सकती मेरे घटने बहुत हिल रहे थे।''

''यह भी'', उसने कहा, ''मैं उसके बाद मुस्कुराना बन्द नहीं कर पाई। वापस होटल तक पूरे रास्ते, मैं सिर्फ मुस्कुराती रही। क्या आनन्द है।

कुछ ने मुझसे पूछा है कि जब मैं फेकता हूं अथवा उन पर फूंकता हूं मैं क्या करना चाहता हूं। मेरे पास एक ही उत्तर है : ''परमेश्वर ने मुझे यह करने को कहा और मैं ने आज्ञा न मानने के बजाया, बेहतर क्या है, जानता हूं।''

मैं हाउसटन की एक और घटना के बारे में मैं आपको बताना चाहता हूं, जो बहुत बार दूसरे स्थानो पर हुई है, पर उस रात विशेष रुप से मर्मस्पर्शी थी। जब हम अभी गा रहे व आराधना कर रहे थे, मैं एक दम्पति को मंच पर लाया, जिनकी एक विशेष आवश्यकता थी। जब वे खड़े थे, स्टीव ब्रोक और मैं गा रहे थे ''नाम सब नामों से ऊँचा'', और

तब गायन मंडली ने कोरस में हमारा साथ दिया, जो अत्यन्त प्रभावशाली रुप से आरम्भ होता है –

''मैं यहोवा हूँ। मैं जो हूँ, सो हूँ।''

इसी समय, यह खूबसूरत दम्पति जो मुझ से और स्टीव से तीन या चार फीट दूर खड़ा था, आत्मा की सामर्थ के प्रभाव में वहीं मंच पर गिर गया। किसी ने उन्हे नही छुआ था। परमेश्वर ने सीधे ही यह किया, बिना अपने किसी मनुष्य सेवक के प्रयोग के क्यों? इस दम्पति को अपने अद्भुत उद्धारकर्ता की उपस्थिति का आश्वासन चाहिये था। मैं इस प्रकार के प्रमाण सब जगह होते हुए देखता हूँ, जब लोग परमेश्वर के प्रेम व सामर्थ का अनुभव करते हैं।

यह घर पर भी होता है

मेरे अपने चर्च ओरलेन्डो क्रिश्चियन सेन्टर में, हम शिक्षा देने व आराधना में बड़ा बल देते हैं, परन्तु समय – समय पर, अकस्मात ही प्रभु अपनी शक्ति को शानदार ढंग से प्रगट करता है।

हाल ही में, एक रविवार की संध्या, मैं अनेक सेवकों के लिये प्रार्थना कर रहा था, और बिना किसी कारण के मैं घूमा और एक स्त्री को मोटरचालित पहियेदार कुर्सी में देखा। मेरे भीतर एक आवाज ने कहा, ''जाओ उसके लिये प्रार्थना करो – अभी!'' वह ताली बजाने जैसा था – अभी!

मैं मंच से नीचे कूद पड़ा – और मुझे निश्चय है कि प्रत्येक व्यक्ति सोच रहा था कि मैं कहाँ जा रहा हूँ : ''फिर पास्टर चल पड़ा''।

मैनें स्त्री को पकड़ा, और कस कर आलिंगनबद्ध किया, और कहा, अपना अभिषेक भेज, प्रभु।''

वह पहियेदार कुर्सी से कूद कर उठ गई। मैं तुरन्त गायन मंडली की ओर मुड़ा और चिल्लाया, ''ऊँचे पर उठाओ और प्रभु की स्तुति करो!'' वह एक अविश्वसनीय क्षण था और जब वे संगीत आरम्भ करने में देर कर रहे थे, मैं फिर से चिल्लाया। वह स्त्री एक अद्भुत आश्चर्यकर्म को पा रही थी, और हमें प्रभु की स्तुति करना आवश्यक था। जैसे ही संगीत की

तीव्रता बढ़ी, स्त्री अपने आप से खड़ी हो गई और उसने भवन के अग्रभाग में चारों ओर दौड़ना शुरु कर दिया। सारा स्थान स्तुति से पागल हो गया।

ऐसा पता चला कि उस स्त्री को मल्टीपल स्कलीरोसिस था। उसका पति वहाँ खड़ा एक छोटे बच्चे की तरह रो रहा था। स्त्री ने मुझे बाद में बताया कि उसने प्रभु से कहा था, ''कृपा कर के आज रात्रि को चंगा कर दीजिये, क्योंकि हम घर जा रहे हैं, और शायद मैं कभी भी वापस न आ सकूं। कृपया, वह नीचे आये, और मेरे लिये प्रार्थना करे।

परमेश्वर की आवाज ने इतना ही कहा, '' जाओ और उसके लिये प्रार्थना करो – अभी!''

आश्चर्यजनक वह जानता है कि आपका ध्यान कैसे आकर्षित करे।

अध्याय – 10
यह कल आरम्भ नहीं हुआ

भजन कार ने लिखा, ''मेरा सींग तूने जंगली साँड़ जैसा ऊँचा किया है, मैं ताजे तेल से चुपड़ा गया हूँ'' (92:10)। इसी रीति से सभोपदेशक का लेखक आग्रह करता है, ''तेरे सिर को तेल की कमी न हो'' (9:8)। चूँकि वह त्रिएकता का तीसरा व्यक्ति है, आत्मा, इतिहास में, परमेश्वर के सामर्थी कामों में कभी भी अनुपस्थित नहीं था। यह दोनो ही पद निश्चित रुप से, पवित्र आत्मा के अभिषेक की ओर संकेत करते हैं, क्योकि बाइबल के लेखों में तेल उसी का एक प्रकार है।

हमारे अपने समय में, आत्मा के अभिषेक को पहचानने तथा समझने में सहायता मिलेगी, यदि हम, बीते समय के कुछ व्यक्तियों की ओर दृष्टि डालें।

उदाहरणार्थ, दाऊद के पास तीन अभिषेक थे, पहला अभिषेक तब होता है जब शमुएल, न्यायी व नबी, यिशै तथा उसके पुत्रों से मिलने बेतलहम को जाता है (1 शमू. 16)। आप स्मरण करेगें कि शमूएल ने कुछ ऐसा कहा, ''अपने लड़के मुझे दिखाओ, यिशै।'' उनमें से सात को देखने के पश्चात उसने कहा, ''परमेश्वर ने इनमें से किसी को नही चुना, तेरे और भी कोई पुत्र हैं?''अतः यिशै ने सबसे छोटे पुत्र को बुलाने भेजा, जो भेड़ों की रखवाली कर रहा था। जब दाऊद आया तो परमेश्वर ने शमूएल से कहा, ''इसका अभिषेक कर, क्योंकि यही है।''

वह पहला अभिषेक था। दूसरा कई वर्ष बाद हुआ, जब दाऊद का हेब्रोन में यहूदा का राजा होने के लिये अभिषेक किया गया (2 शमूएल 2:4)। साढ़े सात वर्ष पश्चात वह इस्त्राएल ऊपर राजा होने के लिये अभिषिक्त हुआ (2 शमूएल 5:3)।

दाऊद राजा का पहला अभिषेक यद्यपि परमेश्वर द्वारा निर्देशित था वह उसे राजा शाऊल के दास की पदवी से ऊपर नहीं ले गया। उसकी जिम्मेदारी वीणा बजाना था ताकि शाऊल को दुष्टात्मा द्वारा दी गई यंत्रणा से छुटकारा दे सके। दूसरे अभिषेक के बाद ही राजा की मृत्यू के पश्चात शाऊल के घराने के साथ उसका भयानक द्वदं हुआ।

केवल तीसरे अभिषेक के बाद ही दाऊद को सम्पूर्ण इस्त्राएल के ऊपर अधिकार व प्रभुत्व मिला। तब उसने हेब्रोन स्थित अपने मुख्यालयों को छोड़ कर सिय्योन पर्वत को अपना लिया तथा सम्पूर्ण सिय्योन पर अपना राज्य स्थापित किया।

विश्वासियों के लिये यहाँ पर यह मुख्य बात है : हम कभी भी अधिकार व प्रभुत्व के स्तर तक नहीं पहुँचेंगे जो परमेश्वर हमारे लिये चाहता है, जब तक हम तीसरा अभिषेक – राजसी अभिषेक न प्राप्त न करें।

इसी प्रकार से प्रेरितों ने तीन अभिषेक प्राप्त किये। पहला तब हुआ जब यीशु ने उन पर फूँका और कहा, ''पवित्र आत्मा लो'' (यूहन्ना 20:22)। दूसरा हुआ जब पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा उन पर आया (प्रेरितों 2)।

परन्तु एक और भी बड़ा अभिषेक आया, जब आरम्भिक कलीसिया कि शक्ति नाटकीय रुप से स्थापित हुई। आप देखिये प्रेरितों के काम के चौथे अध्याय में एक महत्वपूर्ण घटना होती है जिसे बहुधा पिन्तेकुस्त के दिन की मात्र पुनरावुत्ति समझ लिया जाता है, परन्तु ऐसा नही है। यहाँ विशेष उल्लेखनीय है कि यीशु के जी उठने के विषय में प्रेरितों की साक्षी की आश्चर्यजनक शक्ति में वृद्धि होती है। ध्यान दीजिये प्रेरितों 4:31 पर, शिष्यों की इस वचनबद्धता के बाद कि हम मनुष्यों की नही परन्तु परमेश्वर की आज्ञा मानेंगें: जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहाँ वे इकठ्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गये और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।

इस्त्राएल के पुरनियों ने प्रेरितों को धमका कर कहा था, ''मसीह के नाम का प्रचार करोगे तो कैद खाने में डाल दिये जाओगे।'' प्रेरित डटे रहे और परमेश्वर ने एक भारी अभिषेक के लिये सामर्थ का आलौकिक प्रगटीकरण किया। व स्थान हिल गया, वे हियाव से बोलने लगे व बहुत से लोग उन में मिल गये।

और तब आता है प्रेरितों 5:12 – 14, जो बताता है कि, ''प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में दिखायें

जाते थे ......और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रीयाँ प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।''

जहाँ तक पतरस का सवाल है, उस पर अभिषेक इतना अधिक था कि ज बवह गुजरता था और उसकी छाया ही उन पर पड़ती थी तो लोग चंगे हो जाते थे (5:15)।

जी हाँ, तीसरा अभिषेक प्रेरितों के जीवनों में बहुत बड़ी सामर्थ लाया और बहुत, बहुत – सी आत्माओं को राज्य में जमा किया। ठीक इसी की हमें आज आवश्यकता है तकि संसार बचाया जा सके।

शिक्षा की सोने की खान

इन उदाहरणों के साथ – साथ, प्रेरितों के काम की पुस्तक जिसे पवित्र आत्मा के कामों की पुस्तक भी कहा जा सकता है, में अभिषेक के विषय में जानकारी का खजाना है, यह आप पर निर्भर करता है कि आप कहाँ केन्द्रित करना चाहते हैं।

उदाहरण के लिये, पवित्र आत्मा अपने प्रवेश की घोषणा करता है।

आप प्रेरितों के काम के आरम्भ में इसे पायेंगें। सर्वप्रथम, यीशु ने पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरितों की सेवकाई की, उन्हे बहुत – सी बातें समझाई (प्रेरितों 1:2 – 3)। उसने उन्हे आत्मा द्वारा सामर्थ देने की प्रतिज्ञा की 1:5 – 8)। और तब, आत्मा आया, सारे संसार को बताते हुएः ''और एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूंज गया।'' तब सामर्थी बातें हुईं। आग की लपटें हर पर प्रगट हुईं वे अन्य भाषा में बोलने लगे। और वे नीचे सड़कों पर जाकर सारे संसार के लोगों के सामने परमेश्वर के अद्‌भुत कामों की चर्चा करने लगे, (2:2 – 11)। पवित्र आत्मा सौम्य है, हाँ। वह शाँति दायक है, हाँ। पर वह आपको बता देता है जब वह आता है।

दूसरी बात, वह खोई हुई आत्माओं के लिये सदैव बोझ लाता है।

जनसमूह को प्रचार करते हुए, पतरस, एक डरपोंक, जिसने कुछ सप्ताह पूर्व अपने स्वामी को निराश किया था, ने कहा;

''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने – अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारी संतानों और उन दूर दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलायेगा। उसने बहुत और बातों से गवाही दे देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ। सो जिन्होने उसका वचन ग्रहण किया उन्होने बपतिस्मा लिया और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गये।'' (2:38 – 41)

कोई मुझे यह साबित नही कर सकता कि पवित्र आत्मा उसके जीवन में है, यदि उसको किसी व्यक्ति को प्रभु के पास आते देखने का बोझ नहीं है। ''तुम सामर्थ पाओगे और तुम मेरे गवाह होगे'' प्रभु ने कहा आत्मा हमें इस लिये नही दिया गया कि हम आत्मिक पिकनिकें मनाएं। वह दिया गया है कि हन लोंगों को मसीह के विषय में बता सकें।

अगला परिणाम हम प्रेरितों के कार्य में पाते हैं – सम्पूर्ण एकता।

मैं ऐसे किसी भी व्यक्ति से गम्भीरता से प्रश्न करता हूँ, जो कहता है कि उस के पास पवित्र आत्मा है और सदा अपने में ही रहता है यह सोचते हुए कि उसके पास सब कुछ है और उसे किसी और की आवश्यकता नहीं है। सही दृष्टिकोण का स्पष्ट उदाहरण आरम्भिक कलीसिया के लिखत इतिहास में पाया जाता है। जिसमें परिवर्तित लोग, ''प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने में और राटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।'' वे इकठ्ठे रहते थे और उनकी सब वस्तुएँ साझे की थीं। ''वे आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे।'' ''प्रभु उनको प्रतिदिन उनमें मिला देता था।'' (2:42 –47)। एकाकी घुमक्कड़ों का कोई प्रमाण नहीं मिलता।

एक और बात जो आप सीखेंगें वह यह है कि पवित्र आत्मा आश्चर्यजनक रुप से बहकर किसी और तक पहुँचेगा।

प्रेरितों के काम के तीसरे अध्याय में इस बात को अच्छी तरह समझाया गया है। यह दर्शाता है कि पतरस व यूहन्ना मन्दिर में प्रार्थना करने जा रहे हैं, जब उनकी भेंट एक लंगड़े से होती है, जो भीख मांगता

है। पतरस अपनी आँखों को उस व्यक्ति पर गड़ा देता है। मुझे यह बहुत अच्छा लगता है। उसने अपनी आँखें उस पर गड़ा दीं। कैसी भेदने वाली दृष्टि होगी। ''हमारी और देख'' उसने आज्ञा दी। ''वह उनकी ओर ताकने लगा,'' लिखा है। तब पतरस ने कहा, ''चाँदी और सोना तो मेरे पास है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है तुझे देता हूँ, यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।'' जो पतरस के पास था, वह उसमें से बहकर आवश्यकता में पड़े व्यक्ति तक पहुँचा। उसने उसका हाथ पकड़ा, उसे उठाया और वह चंगा हो गया।

क्या कहानी है। पवित्र आत्मा हमें मात्र अपने सुख के लिये नही दिया गया है। वह आता है कि हमें सामर्थ में मसीह की गवाही देने के योग्य बनायें।

बाद के इतिहास में

अपने समय के निकट, हम पवित्र आत्मा के असाधारण कार्य मेरे आपके जैसे लोंगों में पाते है।

जॉनाथन एडवर्डस नामक, अठारहवीं सदी का अमरीकी प्रचारक व धर्मज्ञाता था। ऐसा प्रचारक जिसमें कोई भाव नहीं थे, पुलपिट के पीछे खड़ा होता और अपने भाषण को मोटे शीशे वाले चश्में में से पढता, मुश्किल से आँखें उठाकर लोगों को देखते हुए। इस बीच, उसके भाषणों द्वारा लोग बड़े अपराध बोध से भर जाते।

एक भाषण – ''पापी, एक क्रोधी परमेश्वर के हाथ में'' के द्वारा, जैसा बताया जाता है मंडली से दया की पुकारें सुनी गई। कुछ लोग जब वह पढ़ रहा था परमेश्वर की सामर्थ के प्रभाव से धराशायी हो गये। उस विशेष संन्देश ने एक जाग्रति को जन्म दिया, जो कॉलोनियों में फैल गई, जीवन परिवर्तन करने वाली सामर्थ के साथ। केवल पवित्र आत्मा ने ही ऐसी सामर्थ को उत्पन्न किया होगा।

इसी प्रकार से डी.एल.मूडी ने जिनके पास चमत्कारिक बोलने का ढंग नही थ और जो बोलते समय अनेको गलतियां करने की क्षमता रखते

थे, कितने ही प्रदेशों व राष्ट्रों को अपने सामर्थी संन्देशों द्वारा हिला डाला, जो कि स्पष्ट रुप से परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रभावशाली बनाये गये थे।

और चार्ल्स फिन्नी पर, जो अमरीका में जाग्रति की अग्नी प्रज्वलित करने में सहायक था, इतना अभिषेक रहता था कि जब वह बोलता, मात्र उसकी उपस्थिति से महिमा का बादल शहर के एक पूरे क्षेत्र को ढ़क लेता। परमेश्वर की महिमा सभागारों के अन्दर व बाहर, दोनों स्थानो पर अनुभव की जा सकती थी। लोग परमेश्वर की सामर्थ के प्रभाव में रोते, दया की भीख मांगते, गिर जाते। बहुधा राहगीर, अधिकाँश परमेश्वर में कोई रुचि न रखने वाले, परमेश्वर की सामर्थ के प्रभाव में टूट जाते व अपने पापों का अंगीकार करते।

किस बात से इस प्रकार के परिणाम मिले? निश्चय ही यह कोई भाषण कला या करतब नही था।

कैथरीन कुलमन की सभाओं में प्रथम बार आनेवाले लोगों से उसे बहुत ही हीं, ठीं ठीं सुनने को मिलती, जैसे ही वह अपनी बुढ़िया जूतियों व लहराते हुए परिधान में सभागार में आती।

''क्या दिखावा है'' वे फुसफुसाते पर जिस क्षण वह कहती, ''पिता'', बड़े – बड़े सभागार परमेश्वर की उपस्थिति व सामर्थ से जीवंत हो उठते। लोग ढ़ेर हो जाते, सैकड़ों गम्भीर रोंगों से चंगाई पाते और उद्धार बह निकलता। निश्चय ही वह करतब नहीं था।

इंग्लैंड में जैफरी – बन्धु थे। कुछ ही लोग उनके नामों से परिचित थे, परन्तु उनका अभिषेक इतना भारी था कि वह एक इमारत में घुसते, पुलपिट के पीछे खड़े हो, बड़े सरल ढंग से कहते ''स्वामी यहाँ पर हैं'' और आश्चर्यकर्म होते। विश्वासनीय खबरें थीं लंगड़े, अन्धे, बहरे और यहाँ तक कि लोग जिनके हाथ पैर नही थे वे भी अविश्वसनीय चंगाईयों का अनुभव करते। रेनहार्ड बॉन्के, सामर्थी प्रचारक जो आफ्रीका के अधिकाँश भाग को रुपान्तरित कर रहा है, विश्वास करता है कि उसके जीवन में आत्मा का अधिकाँश कार्य, अनेक वर्ष पूर्व एक जैफरी बन्धु ने उसके ऊपर जो प्रार्थना की थी, उसके कारण है।

इंग्लैंड में ही अद्‌भुत स्मिथ विगल्सवर्थ था, जिसके साथ मेरी पत्नी की दादी लिलियन काम करती थी। एक अत्याधिक असाधारण कहानी जो मैनें लिल से सुनी, वह थी, कि श्रोंताओं में एक व्यक्ति मर गया। ''उसे उठाओ!'' विगल्सवर्थ ने कहा। तब उसने मृत व्यक्ति के पेट में घूसा मारा तथा कहानी इस प्रकार चलती है कि उसने सख्ती से कहा, ''यीशु के नाम से उठो!'' परन्तु व्यक्ति अब भी मरा हुआ था।

''उसे फिर से उठाओ!'' उसने आज्ञा दी, और भी अधिक कठोरता से। ''मैनें कहा, यीशु के नाम से उठो!''

कुछ नहीं हुआ। ''उसे जाने दो।'' अभी भी आदमी मरा हुआ था और फर्श पर गिर गया। तीसरी बार उसने निर्देश दिया कि वह व्यक्ति उठाया जाये। ''मैं कहता हूँ कि यीशु के नाम से उठ जाओ।'' और इस बार लिल ने कहा, उसने व्यक्ति के मुंह पर थप्पड़ मारा। और इस बार व्यक्ति ने अपनी आँखें खोलीं; वह जीवित था!

आप ऐसे संघर्ष के साथ शायद सहमत न हों, पर मेरा विश्वास है कि बात बिलकुल स्पष्ट है। परमेवर के आत्मा की शक्ति शाली अभिव्यक्ति उसके लोगों के मध्य में कोई नई बात नहीं है। यह आरम्भ से होती आ रही है। और न भूलें, यह आपके लिये भी है।

अध्याय – 11
यीशु – मैं हूँ

पवित्र आत्मा एक उत्कृष्ट सांत्वना देने वाला, सलाहकार, सहायक है जो पिता व पुत्र द्वारा भेजा गया है कि परमेश्वर के लोगों के साथ, भीतर व उनके ऊपर रहे, जब यीशु स्वर्ग पर चला गया। त्रिएकत्व के इस महिमामय तीसरे व्यक्ति का प्रमुख उद्देश्य है प्रभु यीशु मसीह को प्रगट करना। सत्य के आत्मा के रुप में, उसने यीशु की बातों को ले लिया और उन पर प्रगट करता है जो सुने, देखें व अनुकरण करेंगें।

जब मैं पवित्र आत्मा की उपस्थिति और अभिषेक के विषय में लिख रहा हूँ, आप प्रभु यीशु को कभी भी दृष्टि से ओझल न होने दें।सब कुछ दिया गया है कि आप उसे जाने प्रेम करें और उसकी सेवा करे। अतः इस बिन्दू पर मैं कुछ समय लेकर मनन करना चाहता हूँ कि यीशु कौन है, जिससे आप बेहतर ढंग से इस पुस्तक के, विषय के बड़े विस्तृत महत्व को समझ सकें।

जैसा कि गीतकार ने इस पुराने कोरस 'महिमा का प्रभु' में कहा है।

वह महिमा का प्रभु है, वह है महान 'मैं हूँ'
अलफा और ओमेगा, आदि और अंत।
उसका नाम है अद्‌भुत, शाँति का राजकुमार
अनन्त काल का पिता, सारे अनन्त काल तक का।
वह परमेश्वर का सबसे पूर्ण प्रकाशन है। आरम्भ और अन्त। प्रथम और अन्तिम कारण व समापन आमीन है।

''मैं अनन्त जीवन हूँ'' उसने कहा। अनन्तकाल से अनन्तकाल तक – यीशु।

आप पूछिये ''प्रभु, हम स्वर्ग में क्या देखेंगे?''
''मैं तुम्हारा केन्द्र बिन्दु होऊंगा।''
''हम स्वर्ग में क्या करेंगे?''
''आराधना करोगे और मेरा आनन्द लोगे, सदा लों।''

''हम स्वर्ग में क्या सुनेंगें?''

''सब जो मैं तुम पर प्रगट करुँगा।''

''स्वर्ग क्या है?''

''मेरी सृष्टि तुम्हारे लिये।''

यीशु सब कुछ का केन्द्र है। केवल वही है – ''मैं जो हूँ सो हूँ।'' ''मसीह में'' होना और जीना इसी का कहते हैं। एक बार आप बच गये, आप उसमें हैं। आप उसके जीवन से ढाँप दिये गये। आप ने आदि व अन्त को, अल्फा और ओमेगा को पहन लिया।

एक लम्बे समय तक, मैं न समझ पाया कि कैसे हो सकता है कि परमेश्वर कुछ कहे और वह सदा के लिये स्थिर हो जाये। पर यही है जो बाइबल कहती है, ''हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है'' (भजन 119:89)। वह उसे बोलता है और वह पूर्ण होता है। समय उस पर प्रभाव नहीं डालता, वह शाश्वत है।

यीशु ही वचन है। वह जो कहता वह सत्य है।

उसके बिना, इतिहास का कोई अर्थ नहीं है। वास्तव में उसके बिना इतिहास है ही नहीं। कोई कारण नहीं, कोई साराँश नही।

सारा संसार, पूछता है, ''मैं कौन हूँ? मैं यहाँ क्यों हूँ? मैं कहाँ जा रहा हूँ?'' कौन, क्यों, कहाँ – वह इन तीनो का उत्तर है।

महान अर्थ

आप देखिये इस घोषणा में अर्थ है, ''वह महान 'मैं हूँ' है''। स्मरण आया? मूसा ने पूछा, ''तेरा नाम क्या है?'' किसने उत्तर दिया? प्रभु यीशु के स्वर्गदूत ने। ''मैं हूँ'', उसने कहा। कौन? ''मैं हूँ।''

पौलुस कुलुसियों 1:16 – 17 में यीशु के बारे में लिखते हुए कहता है:

क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।

इसी कारण मूसा कह सका, ''समुद्र में से होकर आगे बढ़ो,'' और समुद्र बंट गया। क्या आप उसे नहीं सुन सकते? वह ऐसा कैसे कर पाया? मैं हूँ बोला, ''आगे बढ़ो'' और मूसा ने अपनी लाठी बढ़ाई और समुद्र बंट गया – लाठी के कारण नहीं, परन्तु ''मैं हूँ'' के कारण।

एलिय्याह भी इसी प्रकार बोला और स्वर्ग से अग्नि गिरी। मैं हूँ बोला।

एक दिन नासरत में एक युवा लड़की नें, न जानते हुए कि क्या होने वाला है, एक स्वर्गदूत देखा जिसने कुछ ऐसा कहा, न जानते हुए कि क्या होने वाला है, एक स्वर्गदूत देखा जिसने कुछ ऐसा कहा, ''मरियम, परमेश्वर का वचन, तेरे गर्भ में एक शिशु होकर आने वाला है''।

''यह कैसे हो सकता है कृपया समझायें।''

''मैं इसे पूरी तरह नहीं समझा सकता।'' मुझे समझने में सहायता करो।'' नहीं कर सकता।''

कोई नहीं समझता। अनन्त को समझने के लिये शब्द बहुत सीमित हैं। आप इतना ही जान सकते हैं – और वह भी घटना के इस ओर से, कि असीमित ने स्वयं को एक शरीर में सीमित करने का निर्णय लिया। मरियम के गर्भ में अनन्तकाल एक शरीर बनने वाला था। वह उसके शरीर से निकल कर आयेगा और वह बच्चे को अपनी बाहों में उठाएगी, जिसका नाम यीशु था। और यीशु उसका पूरा नाम नहीं था, क्योंकि उसका अर्थ है केवल ''उद्धारकर्ता'' या ''उद्धार'', जबकि वह ''मैं हूँ'' भी था।

हमें यीशु नाम दिया गया है, जिस के द्वारा हम ''मैं हूँ'' को पुकार सकें, और यीशु नाम वास्तव में हर नाम से ऊपर है। परन्तु प्रश्न यह है : शरीर में आने से पूर्व वह किस नाम से पुकारा जाता था? वह आदि और अन्त, अलफा और आमेगा, के नाम से पुकारा जाता था और उससे भी पहले, मैं हूँ।

और वह इस धरती पर चला।

सब कुछ को जोड़ कर रखना

हर बार जब आप अपनी बांह हिलाते और आप कह रहे हैं, ''यीशु जीवित है।'' आप उसे नहीं हिला सकते बिना उस ऊर्जा के जो उसने बनाई। वह, वो सामर्थ है जो आपके हृदय को चलाती है। वह, वो शक्ति है जो आपके शरीर को जीवित रखती है।

जरा साचिये, पौलुस कहता है कि यीशु – मैं हूँ ही वह शक्ति है जो परमाणुओं को जोड़ कर रखती है। अगर वह हट जाये, संसार जिसमें आपकी बांह और हृदय भी शामिल हैं, के धुर्रे उड़ जाएंगे। इब्रानियों 1:3 को देखिये। परमेश्वर का यह पुत्र सब वस्तुओं को जोड़ कर रखता है, अपनी सामर्थ के वचन द्वारा।

वैज्ञानिक कहते हैं कि एक शक्ति सब तत्वों को व सम्पूर्ण प्रकृति को एक साथ जोड़कर रखती है। आप उन्हें बता सकते हैं कि उसका नाम क्या है।

हम जो कह रहे हैं उसकी गहराई को कृपया सुनिये, किसी ने यह उत्कृष्ट ग्रह बनाया जिसे पृथ्वी कहते हैं और तब वह नीचे आ गया और इस पर चला वह इतना बड़ा है कि अपनी सृष्टि के वृहत ब्रम्हाण्ड में, इस धूल के कण को सृजा और तब उसे जोड़ कर भी रखा, जबकि वह उस पर चला।

और यदि यह पर्याप्त नहीं है, स्वयं के बारे में सोचिये, जैसे एक घूल का कण, उस धूल के कण (पृथ्वी) के ऊपर, और तब यह हर वस्तु का असीमित सृजनहार निर्णय करता है आपके अन्दर रहने का और उसने आपको बचाने का भी फैसला किया है। क्यों?

मैं हूँ।

तो यही था जो पृथ्वी पर आ गया और जब उस देश के अगुवे जिसमें उसने रहना पसंद किया, क्रोधित हो गये और बोले, ''हम इब्राहिम की संतान हैं, उसने धीरे से उत्तर दिया, ''इससे पहले कि इब्राहिम हुआ, मैं हूँ।''

''ईश्वर निन्दा।'' वे चिल्लाये

''नहीं मैं हूँ।''

''तुम 'मैं हूँ' कैसे हो सकते हो जब तुम केवल तीस वर्ष के हो?''

''मैं हूँ।''

और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। पर वे न जानते थे कि मृत्यू उसको बाँध नहीं सकेगी क्योंकि वह मृत्यू को बाँधे हुए है। वे यह भी न जानते थे कि कब्र उसे बाँध न सकेगी क्योंकि वह कब्र को बाँधे हुए है।

अतः वह मृतकों में से जीवित हो गया और तब भी कहा, ''मैं हूँ''

मनुष्य के विषय में रुचिकर विचार

बाइबल कहती है कि आकाश और पृथ्वी और उनमें की सब वस्तुएं बनाने के बाद, परमेश्वर कहता है, ''हम मनुष्य को अपनी समानता में बनाएं'' और वह उसे प्रभुत्व भी देता है। परन्तु वह इस अद्भुत सृष्टि को अपने साथ – साथ शाश्वत जीवन नहीं देता। वह उसे चुनाव देता है।

साराँश, में परमेश्वर ईश्वरत्व में बात करते हुए कहता है, ''आओ हम मनुष्य को अपना साझेदार बनायें, हममें से एक नहीं, परन्तु एक भागीदार, ईश्वरत्व में चौथा व्यक्ति नहीं, पर एक सहभागी। और जो संसार हमनें रचा है उसे देते हैं और हम उसे चुनाव भी देते हैं कि वह जीवन पसन्द करेगा य मृत्यु।''

अतः परमेश्वर आदम को बनाता है, एक बगीचे में रखता है, और दो पेड़ लगाता है – एक जीवने का वृक्ष, दूसरा मृत्यु का, जो भले – बुरे के ज्ञान का वृक्ष भी कहलाता है। और परमेश्वर प्रतीक्षा करता है देखने के लिये कि आदम क्या करेगा।

अब, उत्पत्ती की पुस्तक में किसी भी स्थान पर परमेश्वर स्वयं को आदम पर प्रगट नहीं करता है। इस पर विचार कीजिये। परमेश्वर एक मनुष्य की सृष्टि करता है पर कभी नहीं बताता कि वह, उसका रचने वाला कौन है। पहला व्यक्ति जिसने सुना ''मैं हूँ'' वह मूसा है (निर्गमन 3:14)

आदम क्यों नहीं? परमेश्वर जीवन व मृत्यु के प्रति आदम के चुनाव को देखने के लिये रुका हुआ था। यहाँ पर एक बहुत बड़ी बात है।

आपको 'मैं हूँ' के विषय में प्रकाशन कभी नही मिलेगा, जब तक कि आप उसका चुनाव न करें। परमेश्वर स्वयं को किसी पर लादता नहीं है, पहले मनुष्य पर भी नहीं।

आदम ने यदि जीवन का वृक्ष चुना होता, वह सदा तक पुर्णता में रहता और वह मानव जाति के लिये कितनी महिमामय बात होती। न भूलियेः इससे पूर्व कि पाप तस्वीर में आये, परमेश्वर की इच्छा थी कि मनुष्य फूले – फले और बढ़े। कितनी सुन्दर बात होती।

जब आदम भले – बुरे के ज्ञान के वृक्ष को चुनता, वह मर जाता है, और जब वह इसे अनुभव करता हैं, वह उसे अच्छा नहीं लगता। उसने जीवन के वृक्ष तक पहुँचने का यत्न किया होगा, क्योंकि परमेश्वर एक स्वर्गदूत भेज कर उसे रोकता है।

सोचिये कि वह जीवन का वृक्ष यीशु मसीह है। यदि आदम ने बिलकुल आरम्भ में ही इस वृक्ष को ले लिया होता, तो जीवित परमेश्वर के वचन के निरन्तर प्रकाशन में उसका प्रवेश हो गया होता। परन्तु उसने दूसरा वृक्ष चुना।

यीशु पृथ्वी पर क्यों आया

मुझे स्मरण है बिली ग्राहम ने परमेश्वर व मनुष्य की स्थिति – गिरने के बाद, इस प्रकार चित्रित की – जिसमें आप – एक मनुष्य ने, यह लघु प्राणी बनाया चींटीं कहा। और उसका रचयिता होने के नाते आपने इस छोटी चींटीं से प्रेम किया और उसकी देख भाल की। एक दिन आपने देखा कि यह चींटीं मुत्यु की ओर जा रही है, सो आप क्या कर सकते थे? कैसे आप उसे बता सकते थे कि वह मरने जा रही है?

समस्याएं बड़ी अभिभूत करने वाली थीं। एक, चींटीं ऐसे नही सोचती जैसे आप सोचते हैं, दो, वह आपको सुन नहीं सकती। तीन, वह आपको देख नहीं सकती चार, वह आपको समझ नहीं सकती। यदि आप उसे छूने की चेष्टा करें, आप उसे मार सकते हैं। यदि आप अपना हाथ उसके सामने रखें, वह आपके हाथ के ऊपर से चढ़कर चलना जारी रखेगी। आप क्या करेंगें?

केवल एक बात, जो हो सकती थी, वह यह कि चींट बन जाना और कहना ''उस रास्ते मत जाओ; तुम मरने जा रही हो। मेरे पीछे आओं।''

जब हम प्रभु यीशु के बारे में सोचते हैं, हमें समझने की चेष्टा करनी चाहिये कि वह उस सीमित मनुष्य, जिसे संसार ने स्वाभाविक आँखों से देखा – यहाँ तक कि आश्चर्यकर्म करने वाले मनुष्य, से बढ़कर है। यदि उसे केवल एक मनुष्य समझेंगें तो आपने, असीमित प्राणी जो वह है, उसे जानना आरम्भ ही नहीं किया। हाँ उसने कहा, वह ''द्वार है'' परन्तु द्वार के पीछे क्या है? यह बड़ा रुचिकर प्रश्न है और आप व मेरे लिये बहुत कुछ अभी आगे है।

परन्तु प्रभु सैकड़ों वर्षों से अपने व्यक्तित्व को विभिन्न व्यक्तियों द्वारा थोड़ा – थोड़ा करके प्रगट कर रहा है। इब्रानियों की पत्री के आरम्भ में यह बात कही गई है।

पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप – दादों से थोड़ा – थोड़ा करके और भाँति – भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके, इन अन्त के दिनों में हमसे पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है। वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से सम्भालता है, वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानो पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा।

आरम्भ में, परमेश्वर ने स्वयं को मनुष्यों के मुख द्वारा, एक बार में एक बूँद के रुप में प्रगट किया। हर एक के पास एक प्रकाशन, एक वचन, एक उपदेश था, यदि आप देखें – हनोक, नूह, इब्राहिम, इसहाक, याकूब, यूसुफ, मूसा, यहोशू, कालेब, गिदोन, दाऊद, सुलैमान, और वहां से युहन्ना बपतिस्मा देने वाले तक।

परन्तु एक दिन परमेश्वर ने कुछ इस प्रकार कहा, ''अब हम किसी दूसरे के मुख द्वारा बात नहीं करेंगें। हम दृश्यमान हो जाते हैं और बोलते हैं। अतः वचन देहधारी हो गया और हमारे बीच में डेरा किया'' (यूहन्ना 1:14)।

हमारे पास असीमित प्रकाशन है जिसे हम यीशु कहते हैं, यद्यपि अभी भी इस प्रकाशन को अपने स्वाभाविक मस्तिष्कों द्वारा नहीं देख सकते। पर पौलुस हमें सिखाता है कि हमने, ''वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जाने, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।'' पर, वह जोड़ता है कि ''शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नही करता .... क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है................ परन्तु हममें मसीह का मन है'' (1कुरि. 2:12 – 16)।'

यह स्तंभित करने वाली बात है!

जब आप आत्मा के साथ चलते हैं, उसकी उपस्थिति में रहते हुए, उसकी सामर्थ से अभिषिक्त होकर, आप पाएंगे कि आप अधिक से अधिक इस असीमित प्रभु व उद्धारकर्ता, 'महान मैं हूँ', को समझ पा रहे हैं। आपको एक स्पर्श मिलेगा और आप पुकारेंगें ''मुझे पुनः स्पर्श करो।'' आप कल के स्पर्श से संन्तुष्ट न रहेंगें और पाएंगे कि हर समय आप कह रहे हैं ''एक और बार, कृपा करके एक बार और।'' हर प्रकाशन आपको दूसरे के लिये भूख देगा।

आप स्वयं से पूछते हुए पाये जा सकते हैं, ''क्या मैं कभी आपके प्रकाशन की समाप्ति पर आऊँगा?'' और वह कहेगा, ''कभी नहीं।'' एक प्रकाशन अगले का आरम्भ मात्र होगा। और मैं आपको दिखाना चाहता हूँ कि इस यात्रा पर कैसे निकलें और चलते रहें।

अध्याय – 12

यह आपके लिये है – अभी

बहुत से लोग परमेश्वर की सामर्थ चाहते हैं, परन्तु वे यह नही समझ पाते, कि सामर्थ नहीं मिलेगी, जब तक पहले, वे उसकी उपस्थिति का अनुभव न कर लें। और जब उसकी उपस्थिति आयेगी, उसका पहला प्रमाण होगा, जैसा मैनें पहले कहा, आत्मा के फल की अभिव्यक्ति। फल दृष्टिगोचर होगा, हमारे आस – पास के लोंगों के साथ, हमारे प्रतिदिन के संम्पर्क में। और जब फल वास्तव में होगा, प्रभु आपको अपनी आत्मा का अभिषेक देगा, जो कि सामर्थ है।

यह ऐसे होता हैः परमेश्वर की उपस्थिति वह वाहन है, जो सामर्थ को लाता है। उपस्थिति के बाद सामर्थ आती है, इसका उल्टा नहीं। उपस्थिति व फल एक साथ आते हैं। अभिषेक व सामर्थ भी।

जब आप आत्मा का अभिषेक प्राप्त करते हैं, परिणाम होता है प्रेरितो 1:8 का पूरा होनाः ''तुम मेरे गवाह होगे।'' इसका अर्थ है कि बिना उपस्थिति के, अन्य भाषा में बोलना अथवा आत्मा के किसी भी वरदान की अभिव्यक्ति करना, वह बात नहीं है जिसके बारे में परमेश्वर कह रहा था। आपके पास उपस्थिति पहले होनी चाहिये, जो आपको फल देगी और यह परमेश्वर को आमंत्रित करेगी कि वह आपके अन्दर रहे। तब अभिषेक आयेगा जिसका अर्थ है सामर्थ और आप उसके गवाह होगें।

परमेश्वर ने इस विषय में बड़ी स्पष्टता से मुझ से बातचीत की : ''मै ऐसे पात्रों का अभिषेक नही करता जो मुझ से रहित रहते हैं। मै ऐसे पात्रों का अभिषेक करता हूँ जो मुझसे भरे होते हैं''। यह एक प्रकाशन था। हम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं, उसमें डूब जाते हैं, वह भीतर रहता है, हम उसमें भर कर उमंडने लगते हैं। अनुभव वास्तविक है, मात्र भावना य रोंगटे खड़े होना नही। तब आत्मा का फल हमारे जीवनों से बहना चाहिये, उन्हे स्पर्श करता हुआ जो हमारे आस – पास हैं।

जब यह होता है, प्रभु हमारा अभिषेक करेगा, जब हम उसके साथ चलते व उसकी आज्ञापालन करते हैं, और इस क्षण सामर्थ आरम्भ होती

है – सामर्थ उसकी सेवा करने की तब हम निर्भीकता से परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पा लेते है, जिससे हम देख पाते हैं एक अविश्वासी का हृदय नरम होना व परमेश्वर की ओर मुड़ना और देख पाते हैं चिन्ह व अद्‌भुत कार्य, वैसे जैसे प्रेरितों के कार्य की पुस्तक में वर्णित हैं।

आपका चेहरा चमक उठेगा

आप स्मरण करेगें कि जब मूसा ने सीनै पर्वत पर परमेश्वर की महिमा व उपस्थिति को देखा, उतरने पर उसका चेहरा ज्योति की तरह चमक रहा था। यहाँ तक कि लोग उसके चेहरे की ओर न देख सके। जब आपकी भी, परमेश्वर की उपस्थिति से भेंट होगी, सब पर प्रगट हो जायेगा। वह आपके चेहरे पर भी दिखाई दे सकता है, तथा निश्चय आपके आचरण में भी दिखाई देगा। आपका मुख आस – पास वालों को बतायेगा कि ''मैं भिन्न हूँ।'' ''मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपस्थिति में था।''

जबकि पहले आपको आत्मबोध था, थोड़ा या बिलकुल भी ईश्वर – बोध नहीं – और आप स्वयं को प्रदर्शित करते थे। अब आप आत्मबोध खो देंगें, ईश्वर – बोध प्राप्त कर लेंगे और परमेश्वर का फल प्रगट करेंगे।

आदम अच्छा चित्र प्रस्तुत करता है। जब उसने ईश्वर – बोध खो दिया तथा उस उपस्थिति व महिमा से निर्वस्त्र हो गया, जिसने उसे ढाँपा हुआ था, वह स्वयं के आत्म – बोध से भर गया था। तब उस ने कहा, ''मैं डर गया था।'' इस समय वह परमेश्वर से छिपने लगा जो उसका मित्र, स्वर्ग और पृथ्वी का सृजनहार था।

आत्मबोध का प्रथम परिणाम भय है तथा निर्भीकता ईश्वर – बोध का प्रथम परिणाम जब हमें ईश्वर – बोध हो जाता है तब हम स्वयं पर व अपनी सामर्थ पर भरोसा रखने को विवश नहीं हैं, परन्तु परमेश्वर की उपस्थिति हमारे अन्दर रहती है जो सामर्थ व अधिकार हमारे जीवनो में लाती है। हम अब अपनी शक्ति में युद्ध नहीं लड़ते हैं, पर निर्भय होकर आत्मा के अधिकार द्वारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर को पुकार सकते हैं।

मेरा विश्वास है कि आप समझते हैं। आत्मा की उपस्थिति, आपकी आत्मा में रहेगी, जबकि आत्मा का अभिषेक आपको ढक लेगा व सराबोर कर देगा। यह दोनों आपके पास होने चाहिये, कि आप संसार के सामने यीशु को अच्छी तरह दिखा सकें – यानि उसके गवाह बनें। उपस्थिति आवश्यक है आपको परिवर्तित करने के लिये, जबकि अभिषेक आवश्यक है आपमें से उसकी उपस्थिति को दूसरों तक पहुँचाने के लिये।

एक ही मार्ग है

''तो'' आप कहेगें, ''मुझे क्या करना चाहिये?'' एक ही मार्ग है, प्रार्थना। इसका अर्थ है युद्ध – पूरी तरह युद्ध सर्वप्रथम, यह युद्ध है अहम के विरोध में, जो सबसे बड़ा शत्रु है। यदि आप अपने अहम को दृष्टि से ओझल नहीं कर सकते, आप परमेश्वर की उपस्थिति को नही जान सकते। शरीर प्रार्थना में मरता है। और आपको यह प्राप्त करने के लिये युद्ध करना पड़ेगा। आपमें से अधिकांश यह पाएंगे, जैसा मैनें पाया, कि जब आप पहली बार वास्तविक प्रार्थना में जाते हैं, आप केवल अपने गम्भीर पापों व आवश्यकताओं के बारे में ही सोच पाते है, आप केवल इतना ही कह पाते हैं, ''मुझे क्षमा कर, मुझ पर दया कर, मेरी सहायता कर, मेरी अगुवाई कर, ''और इसी तरह की बातें। सब कुछ मैं, मैं, मैं होता है।

अब, मुझे गलत न समझें। आपको अपने पापों का अंगीकार करना चाहिये, क्षमा मांगनी व प्राप्त करनी चाहिये और मार्ग दर्शन पाना चाहिये, पर आपको इसके आगे बढ़ना चाहिये, प्रभु के साथ सहभागिता रखने, जो बातें उसके हृदय में है उन्हे सुनने व उनके विषय में बात करने के लिये। आपको उससे प्रेम करने, धन्यवाद देने व स्तुति करने की आवश्यकता है। यह उसकी उपस्थिति का फल है। शेष बातें उसके समय में, आपके समय में नहीं।

पाँच मिनट परमेश्वर की उपस्थिति में, उसकी संगति में, एक वर्ष तक मैं, मैं, मैं करते रहने से बढ़कर हैं। और आप पाऐंगें कि जैसे आप इस युद्ध में विजयी होते है, आप उपस्थिति को अनुभव करना आरम्भ कर

देते हैं। आपका आनन्द इतना बड़ा होगा कि आप खुशी से शरीर को व अहम को त्यागने को तैय्यार हो जाते हैं केवल उसकी उपस्थिति का आनन्द उठाने के लिये।

परमेश्वर आपसे बात करेगा, आप उससे बात करेगें। वह आपके साथ इतना कुछ बांटेगा, आपको इतना कुछ बतायेगा। आप उसके प्रेम, उसकी गर्माहट, उसकी कोमलता, उसकी बुद्धिमत्ता में आनन्दविभोर हो जाएंगे। इससे अब आप चलेंगे उसकी आवाज के आज्ञाकारी होने की ओर, और वह कुन्जी है पवित्र आत्मा के अभिषेक की।

वह आपको छोटी चीजें देकर आपकी विश्वास योग्यता को परखेगा, कि आप कैसे आज्ञापालन करते हैं। यदि आप थोड़े मे विश्वासयोग्य हैं वह आपको और अधिक ..... और अधिक .....और अधिक देने का भरोसा करेगा। उसकी सामर्थ आपके ऊपर होगी, ताकि आपके लिये उसकी जो बुलाहट है उसे आप पूरा कर सकें।

सामर्थ सब के लिये है

बुलाहट के लिये मुझे कुछ कहना है। पवित्र आत्मा का अभिषेक प्रत्येक मसीही के लिये है, और नौवे अध्याय में कोढ़ी के अभिषेक का वर्णन करते हुए जैसा मैनें कहा, प्रत्येक व्यक्ति जिसने नया जन्म पाया है, उसे आत्मा का आरम्भिक अभिषेक प्राप्त हो चुका है, जिसे मैनें कोढ़ी का अभिषेक कहा।

इससे बढ़कर अभिषेक एक मसीही के नाते आपकी बुलाहट के अनुसार होगा। कुछ सीधे प्रभु की सेवा के लिये बुलाये गये हैं – प्रचार, सुसमाचार सुनाने वाले, चंगाई देने वाले प्रचारक, पासबान, शिक्षक अन्य हो सकते हैं – लेखक, संगीतज्ञ, प्रशासक, सहायक, समूह – अगुवे, पहुनाई करने वाले और भी। इसके अलावा हो सकते हैं जीवन – साथी, माता – पिता, सामान्य स्कूल के शिक्षक, व्यापारी, बढ़ई, श्रमिक इत्यादि। यह मानते हुए कि सब अपनी बुलाहट व उद्देश्य के अनुसार प्रभु की सेवा कर रहे हैं – कलीसिया में या संसारिक रुप से, तो हर एक अपनी बुलाहट के अनुरुप अभिषेक प्राप्त कर सकता है व उसे पाना चाहिये।

इस पुस्तक के अधिकांश भाग में, मैनें ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जो सीधे सेवकाई वाली बुलाहट के लिये पवित्र आत्मा के अभिषेक की ओर संकेत करती है। यही कारण है कि हमने काफी चर्चा की, शैतान व रोंगों पर आक्रमण करने और परमेश्वर के दास के रुप में , परमेश्वर के लोगों की पुलपिट या मंच से सीधी सेवकाई करने की। यह बात, जो भी कार्य आप कर रहे हैं, उसके लिये अभिषेक पाने के लिये, आपके उत्साह को जरा सा भी कम न करें।

अन्ततः शीघ्र हो तो अच्छा है, आपको उस स्थान पर पहुँचना है, आप जहाँ निरन्तर प्रार्थना करते हैं। वह आपका जीवन बन जाती है क्योंकि आप उसे बहुत अधिक करते हैं और आपका स्वभाव बदल जाता है। आपकी जीवन शैली बदल जाती है।

निश्चय ही आपको एक स्वाभाविक जीवन जीना है। हम भी ऐसा करते हैं। यीशु यद्यपि, बड़े भोर को उठकर, एकांन्त में चला जाता था, फिर भी दिन के चौबीस घन्टे अपने घुटनों पर नही रहता था। हममें से कोई भी ऐसा नही कर सकता। नियमित कार्य है जिसे करना होता है, बच्चों की देखभाल और इसी प्रकार के कार्य।

कुछ एक सबसे अनमोल क्षण मुझे साधारण जीवन की स्थितियों में मिले। मैं अपने बच्चों के बारे में सोचता हूँ और वह अद्‌भुत समय जो हमने एक साथ बातें करते व प्रार्थना करते गुजारे। मैं अकेला अपने कमरे में या जंगल में नही हूँ। मैं वहीं पर अपने बच्चों व पत्नी के साथ हूँ, और प्रभु की उसी खूबसूरत उपस्थिति को अनुभव कर रहा हूँ। यह पूरी तरह भिन्न प्रकार का अभिषेक है, सिर्फ परमेश्वर की कोमल उपस्थिति और हमारे परिवारिक जीवन की आशीष। यह चंगाई सभा के लिये अभिषेक तथा सामर्थ नही है। परन्तु यह बड़ा महत्वपूर्ण है, बड़ा वास्तविक है।

यही बात मैनें पाई, जब मैं ओरलेन्डो क्रिश्चियन सेन्टर में अपने सहकर्मियों से बात करता हूँ – उनका उत्साह बढ़ाते, सहानुभूति जताते,

प्रेरित करते, सुधारते हुए। उपस्थिति बहुत वास्तविक होती है, मेरे ''यीशु'' मात्र कहने से।

पर मुद्दा यह है, कि यीशु अपने पिता के साथ निरन्तर संगति में था और हमें भी उसके साथ निरन्तर संगति में रहना है, अद्‌भुत पवित्र आत्मा के जरिये।

एकांत मनन के समय जैसा मैनें कहा, निरन्तर प्रार्थना करने को जन्म देते हैं और हमें उनकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये।

लोग हमेशा मुझसे मेरे व्यक्तिगत प्रार्थना समय के बारे में पूछते हैं। मैं उनकी सीखने की इच्छा को समझता हूँ और बहुधा अनुकरण करना, सीखने का उत्तम ढंग होता है। परन्तु वास्तव में, प्रार्थना इतनी व्यक्तिगत है, इतनी बहुमूल्य है, इतनी घनिष्ठ है, कि मैं लोगों से कहता हूँ, कि जैसे मैं करता हूँ उस पर न अटके रह जायें, पर इसके बजाय, परमेश्वर उन्हे दर्शाये कि उन्हे कैसी करनी चाहिये।

ऐसे समय हैं,जब मैं अकेले प्रभु के साथ अपने कमरे में या बाहर या कहीं भी, जो स्थान व्यक्तिगत व शांत हो, प्रार्थना करना आरम्भ करता हूँ, और उसमें इस तरह लीन हो जाता हूँ कि आधा दिन या इससे भी अधिक समय तक प्रार्थना करता रहता हूँ। ऐसे भी समय हैं जब मैं उसके साथ एक घन्टा ही अकेला रह पाता हूँ।

विदेश यात्राओं के दौरान ऐसे भी समय आये हैं, जब कार्यक्रम या बाधाओं की वजह से मुझे पाँच मिनट से अधिक समय नहीं मिल पाया। परन्तु, स्मरण रखिये, प्रभु ने मुझे कई वर्ष पहले निरन्तर संगति में रहने का प्रशिक्षण दिया था और मैं कभी भी उसकी उपेक्षा नही करता।

बाधाओं और परीक्षाओं के उन दिनो में कभी – कभी, मैं चंगाई सभाओं के मंच पर इतने अभिषेक के साथ गया हूँ कि कोई सोचेगा कि मैं सारा दिन प्रार्थना करता और बाइबल पढ़ता रहा हूँ।

बाइबल को न भूलें

जहाँ तक बाइबल की बात है, यह प्रार्थना समय का आवश्यक अंग है। मैं अपना दिन आरम्भ नहीं करता हूँ बिना पवित्र वचन पढ़े, प्रार्थना से भी पहले। मुझे करना ही है। यह परमेश्वर का वचन है और यह मेरी

आत्मा में, मेरे अन्दर उंडेला जाना चाहिये – और ऐसे ही आपके अन्दर भी।

इसके अतिरिक्त, जब आप प्रार्थना करते व परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करते हैं, आपके पास बाइबल होनी चाहिये। वह आपको वचन अंशों पर ले जायेगा और आपको सिखाएगा। और आप जब किसी अंश पर परेशान हो जाएं, उससे उसके विषय में पूछिये। वह आपको सिखायेगा। बाइबल साफ – साफ कहती है, कि वह आपका शिक्षक है– वास्तव में आत्मा ही वह शिक्षक है जिसकी आपको आवश्यकता है।

1 यूहन्ना 2:27 स्मरण करिये:

और तुम्हारा वह अभिषेक जो उसकी और से किया गया, तुममें बना रहता है, और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हे सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नही, और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो।

जैसे – जैसे आप जीवन के इस अद्‌भुत मार्ग पर आगे बढ़ते हैं, आप बाइबल में सिद्धान्त व शिक्षाओं को पाएंगे जो प्रथम महत्व की हैं और सच्चे अर्थों में मेरा आशय है प्रथम, जैसा कि आप देखेंगें।

अध्याय – 13

दो गूढ़ आधार

जब आप पवित्र आत्मा द्वारा अपने अभिषेक की ओर जा रहे हैं प्रिय मसीही, मैं दो आधारभूत सिद्धातों की चर्चा करना चाहता हूँ, जो इतने गहन हैं कि समस्त ग्रह को हिला दें, निश्चय ही सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड को। ये पश्चाताप और मसीह के लहू के विषय में हैं, जो निश्चय ही साथ – साथ चलते हैं।

पश्चाताप पहला कदम है अभिषेक प्राप्ति की ओर, आप किसी भी स्तर पर क्यों न हों।

अब, मैं विरोध करती हुई आवाजें सुन सकता हूँ: ''पर, मैं तो पश्चाताप कर चुका, मैं तो नया जन्म पाया हुआ हूँ।

आप नया जन्म प्राप्त हैं इस बात के लिये मैं कहता हूँ, ''हाल्लेलुयाह।'' इस विचार के लिये कि पश्चाताप को आप पीछे छोड़ आयें हैं, और यह अब कोई मुद्दा नही है, मैं कहता हूँ ''नहीं चलेगा।''

मैं प्रेरितों 2:38 से आरम्भ करता हूँ। यह पिन्तेकुस्त के दिन यरुशलेम के अविश्वासियों को पतरस द्वारा दिये गये विलक्षण भाषण के बाद की बात है। पवित्र आत्मा की सामर्थ एक सौ बीस यीशु के मानने वालो पर आई और इस आश्चर्यकर्म का प्रगटीकरण विभिन्न तरीकों से हुआ, विशेष रुप से पतरस के प्रचार को सशक्त करने में।

बाइबल कहती है, संन्देश द्वारा सुननेवालों के, ''हृदय छिद गये'' और उन्होने पूछा, ''हम क्या करें?'' पतरस ने उन से कहाः मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संन्तानों, और उन सब दूर – दूर के लोगों के लिये भी है, जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलायेगा।

''पश्चाताप करो और बपतिस्मा लो'', उसने कहा। अब उस पद को देखिये जो पवित्र आत्मा के अभिषेक के बारे में मेरी शिक्षा में मूलभूत रहा हैः ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा, तब तुम सामर्थ पाओगे और तुम मेरे गवाह होगे .... पृथ्वी की छोर तक'' (प्रेरितों 1:8)

अतः आत्मा के हम पर आने के बाद हमें सामर्थ मिलने की प्रतिज्ञा है। आत्मा । अभिषेक । सामर्थ। और वे पशाताप के बाद आते हैं।

और यह किस लिये है? ''मेरे गवाह होने के लिये''। यह महत्वपूर्ण है। आप सामर्थ पाते हैं कि लोंगों को यीशु मसीह के बारे में बता सकें। आप संसार को यह नहीं बतायेंगें, कि आप कैसे हैं, आप कितने महान बन गयें हैं, आप कैसे अभागे पापी थे। नहीं, आप उन्हे महान महायाजक के बारे में, अपने महान राजा के बारे में, अपने अद्‌भुत उद्धारकर्ता के बारे में बताएंगे, जिसका नाम यीशु है। आप बताऐगे कि एक खाली जीवन के साथ वह क्या कर सकता है।

मैं पुनः घड़घड़ाना सुन सकता हूँ: ''आपका क्या मतलब है? क्या सामर्थ इसलिये नही मिली, कि मैं अपने अनुभव, अपनी गवाही बता संकूं?''

जी नही, आप किस किस में से होकर गुजरे हैं, पवित्र आत्मा इसे गौरवान्वित नहीं करता। वह यीशु को केन्द्र में लाता है। वह संसार को दिखाता है कि यीशु को किस में से होकर गुजरना पड़ा, आपको स्वर्ग ले जाने के लिये, यह नहीं कि आप पर क्या बीती वहां तक पहुचने के लिये। ''तुम मेरे गवाह होगे'' – कि यीशु कौन है, यीशु ने क्या किया, यीशु ने क्या कहा, यीशु ने किस बात की प्रतिज्ञा की।

मैनें सब प्रकार के पागल पन की गलतियां की हैं, मेरे प्रिय। मैं केवल दूसरों के बारे में ही नही बोलता। अठ्‌ठारह वर्ष पूर्व, पिट्‌सबर्ग में वास्तविक जीवन व वास्तविक सामर्थ के साथ मेरी मुलाकात से पहले, मैं कलीसियाओं में गया जो इतने शोर गुल वाली व अनियंत्रित थीं, कि स्पष्ट था कि वे सोचते हैं शोर गुल ही सामर्थ है। हर एक के पास एक डफली थी। लगता था वे सोचते हैं कि डफली से पवित्र आत्मा आता है। मैनें इतना ही पाया कि मैं लता पर ही मर रहा था, मेरे अन्दर जीवन नही था। मैं चर्च में खड़ा, सीट के पिछले भाग को इतनी जोर से दबाता कि मेरी उंगलियों में रक्त प्रवाह रुक जाता। प्रति रविवार मैं वेदी पर जा कर रोता और परमेश्वर से सामर्थ मांगता, जिसकी प्रतिज्ञा मैनें बाइबल में

देखी थी। मैनें हर ऐसे व्यक्ति द्वारा अपने पर हाथ रखवाये, जिसमें कुछ था। मैं

अपने कमरे में रह कर डफली बजाता, हर सुत्र का प्रयोग करता, हर पुस्तक को पढ़ता और हर प्रसारण को सुनता।

मैं सामर्थ की प्रतिज्ञाओं को जानता था और मैं जानता था कि वे मेरी होनी चाहियें। आज मैं जानता हूँ कि वे केवल मेरी ही नहीं, परन्तु मेरे बच्चों के लिये भी हैं।

और कुन्जी है पश्चाताप । यह आपको महान अग्नि की ओर अग्रसर करता है और आप उस लक्ष्य तक पहुँचेंगें, जो परमेश्वर चाहता है।

इसका क्या अर्थ है?

अतः पश्चाताप का क्या अर्थ है? आइये आरम्भ करते हैं इससे कि पश्चाताप का अर्थ क्या है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम वेदी पर जायें, कुछ आँसू बहायें, कहें, ''प्रभु मुझे दुख है,'' और बाहर जाकर फिर वही कार्य करें।

पश्चाताप दैनिक अनुभव है। और आलौकिक अनुभव है, ऐसा कुछ नही जिसे आप स्वयं मानवीय ढंग से प्राप्त कर लें। यह पवित्र आत्मा का वरदान है। पश्चाताप आधारित है इस पर, ''जो कोई अपना अपराध मान लेता व छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी'' (नीतिवचन 28:13)। यह सच्चा आर्थ है – केवल मानना नही, बल्कि छोड़ देना भी।

आगे को उसके साथ कुछ संबंध न रखना। आप अपने घुटनों पर आकर कहते हैं, ''प्रभु, दोबारा कभी नहीं,'' और आप उठकर बाहर नहीं जाते, जब तक सारा मामला सही न हो जाये।

जब तक वह सुलझ नहीं जाता, आप पवित्र आत्मा नहीं पाएंगे, और आप लता पर सूख जाएंगे। बहुत अधिक मसीही ऐसे हैं जो अपने एकांत स्थल में बैठे लता पर सूख रहे हैं क्योंकि वे जीवन व सामर्थ से रहित हैं। वे कहते हैं, ''पर मेरे पास विश्वास है।'' विश्वास? जब परमेश्वर का वरदान आता है – आत्मा – वह उस विश्वास को जीवन देगा।

इससे बढ़कर, इस विश्वास के मामला पर एक लम्बे समय से बहुत चर्चा की गई, गलत समझा गया और गलत प्रयोग किया गया है। लोग बहुत चिल्लाये हैं विश्वास, विश्वास, विश्वास के लिये, जब तक वे

टुकड़ों में न टूट गये। उन्होनें सिद्धान्त का इतना गलत प्रयोग किया व गलत अर्थ लगाया है कि उन्होने स्वयं को पूरी तरह भ्रमित कर लिया है तथा अपने साथ और भी हजारों को विश्वास, जैसा मैनें अभी कहा, परमेश्वर का वरदान है, जो खुशी से दिया जाता है, और आत्मा द्वारा जीवित रखा जाता है।

जहाँ तक पश्चाताप की बात है, जो पवित्र आत्मा के अभिषेक के लिये पहला कदम है, वह आपके जीवन के हर पापमय कार्य के लिये होना चाहिये, यहाँ तक कि साधारण बातों में भी, जैसे यदि आपने प्रार्थना नहीं की उसके लिये पश्चाताप, यदि उसका वचन नही पढ़ा उसके लिये पश्चाताप, यदि आपने प्रभु की अवहेलना की उसके लिये पश्चाताप, यदि आपने अपने जीवन में उपस्थिति के महान वरदान को हल्के रुप में लिया, उसके लिये पश्चाताप, यदि आपने यीशु को अपने वार्तालाप से निकाल दिया उसके लिये पश्चाताप।

इनमें से कोई भी पाप दर्शाता है कि आप खाली व मृतक हैं या कम से कम उस ओर जा रहे हैं। वे उस एक व्यक्ति को निराश करते हैं जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। और इससे भी कहीं बुरे पाप हैं, जिन्हे आप जानते हैं तथा मैं भी। वे अधिक स्पष्ट, बहुधा लज्जाजनक, और कभी – कभी घृणास्पद भी होते हैं। स्वाभाविक है कि हमे उनको ठीक करना है और शीघ्रता से। वह आप कैसे करते हैं? आप परमेश्वर के पास जाते हैं और कहते हैं, ''प्रभु, मुझे एक पश्चातापी हृदय दें।'' दाऊद के समान आप कहते हैं, ''मुझमें एक शुद्ध हृदय उत्पन्न कर, हे परमेश्वर।'' आप कहते हैं, ''परमेश्वर के लिये बलिदान एक टूटी आत्मा, एक टूटा व पश्चातापी हृदय है।'' आप कहते हैं, ''प्रभु मुझे क्षमा कर, इस संसार की वस्तुओं की खोज में रहने के लिये।'' आप कहते हैं ''प्रभु मुझे क्षमा कर अपना पहला प्यार त्यागने के लिये।'' आप कहते है, ''प्रभु मुझे क्षमा कर, इतना गुनगुना होने के लिये।'' आप कहते हैं, ''अपने पवित्र आत्मा को मुझ से न ले।''

आपको प्रतिदिन आत्मा की सामर्थ प्राप्त करनी है कि पश्चाताप में शरीर से लड़ सकें। क्योंकि यह दैनिक युद्ध है। शत्रु को ''नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, ''परमेश्वर को ''हाँ, हाँ, हाँ, हाँ।

अच्छे मित्रो, हमे कलीसिया से कहना चाहिये – अपने आप से कहना चाहिये – ''वापस जाओ, एक सच्चे हृदय से पश्चाताप की ओर

वापस जाओ''। हमें वह जीवन जीना आरम्भ करना है जो मसीह के साथ प्रतिदिन क्रूस पर चढ़ाया गया, क्योंकि यदि हम ऐसा करेगें, हम पवित्र आत्मा को स्वयं से दूर नहीं रखेगें। हमें उसे यह कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी कि हमें भर दे।

अब, एक बड़े मुख्य विषय में मेरी बात सुनिये। परमेश्वर नही चाहता कि उसके लोग हर समय बैठकर रोते रहें। यह पश्चाताप नहीं है। वह चाहता है। वह चाहता है कि हम अपने पापों के प्रति संवेदनशील हों और तत्काल ही ठीक करें, और परमेश्वर की सामर्थ में आनन्दपूर्ण जीवन में बढ़ चलें।

पश्चाताप । उपस्थिति । अभिषेक । सेवा । आनन्द ।

यह कैसे कार्य करता है?

जब आप पवित्र आत्मा द्वारा अपने अभिषेक की ओर बढ़ रहे हैं, मैं एक वास्तविकता के विषय में संक्षेप में लिखना चाहता हूँ, जो कि हर उस बात के पीछे हैं, जिसकी चर्चा हम कर रहे है, विशेष रुप से पश्चाताप के पहले कदम के।

बाइबल में, मसीह के पहले आगमन की ओर संकेत करते हुए, भविष्यद्वक्ता जकर्याह कहता हैः ''और तू भी सुन, क्योंकि मेरी वाचा के लहू के कारण, मैनें तेरे बन्दियों को बिना जल के गड़हे में से उबार लिया है'' (जकर्याह 9:11)

परमेश्वर, अपने लोगों के विषय में बात करते हुए कह रहा है कि मसीह का लहू, नई वाचा का लहू उन्हे स्वतन्त्र करेगा। और दुखद सत्य यह है कि अनेक लोगों को जरा भी ज्ञान नही है कि वे कैसे, लहू को अपने जीवनों में लगा सकते हैं तथा उन्हे लगाना चाहिये ताकि पश्चाताप

की स्वतन्त्रता तथा विश्वास की सारी सच्चाईयाँ प्राप्त कर सकें। अनेक अभी भी बंधन में हैं। शैतान उन्हें सताते हैं। रोग ने उन्हे व उनके बच्चों पर आक्रमण किया हुआ है। भ्राँतियाँ उनकी शान्ति को नष्ट कर रही है।

ऐसा नही होना चाहिये। बाइबल सिखाती है कि यीशु मसीह के बहाये हुए रक्त के द्वारा हमारे जीवनो में, छह बातें होगीं जो कलीसिया में व्याप्त गड़बडी के विरोध में होंगी।

- इफिसियों 1:7 कहता है ''हमको उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा मिला है।'' हम उसके लहू के द्वारा छुटकारा पाते हैं। छुटकारा किससे? अंधकार के सम्राज्य से, शैतान के सम्राज्य से जिसे, अभी के लिये संसार पर राज्य करने की छुट मिली है। मसीह ने जान बूझकर अपना लहू ''बहाया'' है, आकस्मिक रुप से ''छलका'' नहीं दिया और हमें छुड़ाया (बाजार में प्रयोग होने वाला शब्द)।

  आप शैतान की आँखों में आँखें डालकर उसे बता सकते हैं कि,उसका आप पर कोई नियंत्रण नहीं है, क्योंकि आप वैधानिक रुप से वापस मोल ले लिये गये हैं। आप देखिये, परमेश्वर व शैतान दोनो जानते हैं कि आप वैधानिक रुप से वापस मोल ले लिये गये हैं, पर क्या आप जानते हैं? जब शत्रु का आक्रमण आपके ऊपर होता हैं, आपको चिल्लाने की आवश्कता नहीं हैं, ''हाय, परमेश्वर, मेरी सहायता करिये!'' आप वैधानिक रुप से कह सकते हैं, ''शैतान, अपने गन्दे हाथ मेरे ऊपर से हटा ले।''
- इफिसियों 1:7 आगे कहता है, ''(हमको उसमें उसके लहू के द्वारा) अपराधों की क्षमा मिली है.........।'' हम क्षमा किये गये हैं मसीह के लहू के द्वारा। अब क्षमा किसी वस्तु को वापस नहीं खरीदती, पर एक पापी के रुप में आपने क्या किया, यह उसके साथ निपटती है। परमेश्वर आपको छुड़ाता है और फिर जो कुछ आपने किया सब भूल जाता है, जिसका

अर्थ है कि आपकी ओर देखना और कहना कि तुमने कभी कोई गलत कार्य नहीं किया। वह आपके ''पापों'' को भूल जाता है। ये वह बातें है जिन्हें आपने सोचा तथा आपकी ''दुष्टताएं'', जो आपके विचारों का कार्यरुप है। वास्तव में यशायाह 38:17 बताता है कि परमेश्वर हमारे सारे पाप अपनी पीठ के पीछे फेंक देता है। और जब परमेश्वर फेंकता है, वे सदा उड़ते रहते हैं।

- पहला युहन्ना 1:7 कहता है, यदि हम ज्योति में चलें, ''यीशु मसीह का लहू.......... हमें सब पापों से शुद्ध करता है।'' कृपया इस क्रिया के वर्तमान काल पर ध्यान दीजियेः शुद्ध करता है। यह अभी का अनुभव है। क्षमा का सम्बन्ध है जो आपने किया उससे, शुद्ध करने – का सम्बन्ध है जो आप कर रहे हैं उसके साथ।

  इस पर विचार कीजिये। मसीह का लहू आपको छुड़ाता व बचाता है जीवन के एक समय पर, बीते हुए वर्षों, घन्टों व मिनटों में किये हुए हर काम को क्षमा करता है और इसी समय आपके सब विचारों व कार्यों को शुद्ध करता है। यदि आप पश्चाताप करें तो जो बात उस क्षण आप सोच रहे हैं, वह शुद्ध की जाती है। लहू में प्रबल शक्ति है।
- रोमियों 5:9 कहता है, ''सो जबकि हम, अब उसके लहू के द्वारा धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेगें?'' न्यायसंगत ठहरना जो उसके लहू द्वारा किया गया, आपके भविष्य के साथ सम्बन्ध रखता है – क्रोध, जो आने को है। यह एक चौंकाने वाला कथन है, परन्तु यदि आप न्याय संगत ठहराये गये हैं, अब से आप जो भी करेगें, उसके लिये कुछ किया जायेगा।

स्पष्ट है, इसे समझाये जाने की आवश्यकता है, क्योंकि अब तक कोई न कोई यह कह रहा होगा, ''तो अब, अगर मैं न्यायसंगत ठहराया गया हूँ, कल जाकर मैं पाप कर सकता हूँ और परमेश्वर उसके लिये कुछ

करेगा। इस पर चल कर क्यों न देखूं, इत्यादि, इत्यादि?'' सत्य यह है कि, यदि आप जान बूझ कर और स्वेच्छा से – यही है मूलभूत वाक्याँश – यदि आप जान बूझकर और स्वेच्छा से पाप करने का फैसला करें,

आपका न्यायसंगत ठहराया जाना खिड़की के रास्ते उड़ जाता है। स्वेच्छा से पाप करना, जानते – बूझते हुए तथा इरादा करके, परमेश्वर की ओर से नहीं है। पश्चाताप का अब और स्थान नहीं रह जाता। साधारण शब्दों में कहें तो, आपका लगातार न्यायसंगत ठहराया जाना निर्भर करता है। आज्ञाकारिता पर, और आज्ञाकारिता आप स्मरण करेगें, मार्ग है अभिषेक पाने का। पाप जो दुर्बलता में अथवा अज्ञानता में अथवा अकस्मात किया गया, पहले बताये गये पाप के समान नहीं है।

कुलुस्सियों 1:20 कहता है, ''और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल – मिलाप करके, सब वस्तुओ का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले ......।'' परमेश्वर ने आपका अपने साथ मेल कर लिया है और उसके व आपके बीच मिलाप है। वह आपको वापस ले आया है और पिता, पुत्र व पवित्र आत्मा के साथ सहभागिता को पुनः स्थापित किया है। अपने पूर्ण अर्थ में यहाँ मेल करने का अर्थ है, ''परमेश्वर के साथ एक हो जाना।''

आप कह सकते हैं, ''मुझे तो यह दिखाई नहीं देता।'' धीरज रखिये। बाइबल कहती है, हम महिमा से महिमा में बदलते जा रहे हैं। आप वहाँ पहुँचेगें। अभी के लिये आप विश्वास द्वारा वहाँ हैं, पर आप अनुभव से वहाँ पहुँचेगें। और विश्वास वास्तविकता है। 1पतरस 1:2 कहता है, ''(परदेशियों को) परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लोहू के छिड़के जाने के लिये चुने गये हैं।'' इसको समझना कितना कठिन क्यों न हो, बाइबल कहती है, आप लहू द्वारा शुद्ध किये गये हैं।

अब शुद्धिकरण सीधे अभिषेक से जुड़ा हुआ है। शुद्धिकरण के बिना अभिषेक नहीं आयेगा, क्योंकि शुद्धिकरण का अर्थ है ''अलग किया हुआ''।

लैव्यवस्था 14 में कोढ़ी का वर्णन स्मरण कीजिये जो छावनी के बाहर रहता है, यहाँ कहा गया है कि याजक छावनी से बाहर जाता है,

लहू लेता है, जूफे को लहू में डुबाता है, कोढ़ी पर सात बार छिड़कता है और कोढ़ी अपने कोढ़ से शुद्ध हो जाता है। तत्पश्चात्, कोढ़ी छावनी में आता है, और याजक लहू लेता है वही लहू जो उस पर पहले छिड़का गया था और उसे शुद्ध हुए कोढ़ी के कान, अगूँठे, और पाँव के अगूँठे पर लगाता है। अब यह महत्वपूर्ण है। कान, विचारों का जीवन, अगूँठा, कार्यों का जीवन और पाँव का अगूँठा प्रतिदिन के चलने का जीवन। याजक तब तेल को उसके कान, अगूँठे व पाँव के अगूँठे पर डालता है तथा शुद्ध हुए कोढ़ी के सिर पर ढ़ेर – सा उंडेल देता है। यह अभिषेक की भरपूरी है। विचार – जीवन, कार्य – जीवन तथा चलने का जीवन।

इसका महत्व यह है कि हम में से बहुतेरे, शुद्ध किये जाने व छावनी के अन्दर आ जाने के बाद भी, उस अतिरिक्त सुरक्षा को नहीं पहचानते, जो हमारी है, केवल कलीसियाई जीवन में नहीं अपितु जीवन पर्यन्त। शैतान हमारे विचार – जीवन, कार्य – जीवन और जीवन में दैनिक चलने पर प्रहार कर सकता है और करता है। मैं, उदाहरण के लिये, लहू अपनी पत्नी, बच्चों, घर, कारों, प्रत्येक वस्तु पर लगाता हूँ।

जीवन के इन पहलुओं पर यदि लहु लगाया जाये, तो उनकी रक्षा करता है। तेल उन्हे शुद्ध करता है।

अब, इस पर मेरी यह बात सुनियेः लहू, तेल से पहले आता है। प्रभु कभी आपको पवित्र आत्मा से अभिषिक्त नहीं करेगा, जब तक आप लहू को अपने जीवन – सम्पूर्ण जीवन पर नही लगाएंगे।

मेरी वुडवर्थ एटर नाम की एक महान सुसमाचार प्रचारिका पूरी कलीसिया पर लहू लगाती थी, और परमेश्वर की सामर्थ एक चमत्कारिक ढंग से आती थी। आत्मा लहू का उत्तर देती है। इसे अवश्य करिये।

आप और मैं अपने आप को लहू से कैसे ढाँपते हैं? रोमियो 3:25 हमें तीन कुन्जियां देता हैः ''(मसीह यीशु,) उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहले किये गये, और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की, उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे।''

<u>पहली कुन्जी है</u> – ज्ञान । हमें जानना चाहिये कि लहू ने क्या – किया है। कोई इसे नही लगा सकता यदि वह इस बारे में अज्ञान है। हमें चाहिये कि इसका अध्ययन करें, सीखें, जानें। लहू ने क्या किया, और अब वह क्या वह क्या करेगा?

<u>दूसरी कुन्जी है</u> – जो हम जानते हैं उसमें विश्वास। विश्वास को आने हृदयों में जागने दीजिये। हम लहू को कैसे लगा सकते हैं जब तक, जो हम कह रहे हैं उसमें विश्वास न करें?

<u>तीसरी कुन्जी है</u> – जो हम जानते हैं उसकी विश्वास द्वारा घोषणा करना। घोषणा करने का अर्थ है कि उसे जोर से बोलना। यदि मैं उसे जानता हूँ व विश्वास करता हूँ, तो मैं उसे बोलूंगा – इस तरह नहीं जैसे कोई जादू अथवा अन्धविश्वास हो, परन्तु परमेश्वर में विश्वास द्वारा, जो कभी झूठ नहीं बोलता।

यह बड़ी सरलता से आता हैः लिखा है कि यीशू के लहू द्वारा, मुझे पापों की क्षमा मिलती है। मैं क्षमा किया गया हूँ। लिखा है कि मैं मसीह के लहू द्वारा छुड़ाया जाता हूँ। मैं वापस मोल लिया गया हूँ। लिखा है कि मैं मसीह के लहू को अपने विचार – जीवन, कार्य – जीवन व प्रतिदिन चलने के जीवन पर लगा सकता हूँ। मैं लहू को लगाता हूँ और मेरा सम्पूर्ण जीवन सुरक्षित हो जाता है।''

<u>जो कुछ है, वह सब को स्पर्श करता है</u>

लहू की शक्ति का सच में कोई अन्त नहीं है। हम पाते हैं कि बाइबल की छयासठ पुस्तक में से एक ही पुस्तक में मसीह के लहू ने – शैतान को नाश किया – इब्रा 2:14

- मृत्यू के भय को नाश किया – इब्रा. 2:15
- विवके को शुद्ध किया – इब्रा. 9:14
- स्वर्ग को शुद्ध किया – इब्रा. 9:23
- हियाव दिया – इब्रा. 10:19
- सिद्ध करने की प्रतिज्ञा की – इब्रा. 13:20
- द्वितीय आगमन का आश्वसन दिया – इब्रा. 9:28

और अब, मेरे मित्रो, आप कदम उठाईये अभिषेक को बनाये रखने व सुरक्षित रखने के लिये, जो आपके पास है या आपको दिया जा रहा है, जैसा आप अभी देखेंगें।

अध्याय – 14

यीशु का उदाहरण

अपनी कलीसिया में, मैं लोगों को बार – बार उकसाता और कहता हूँ, ''यदि तुम अभिषेक चाहते हो, तो किसी को यीशु के बारे में बताओ।'' आखिरकार, हर एक जानता है कि आत्माओं के लिये हम शैतान से युद्ध कर रहे हैं। और शैतान के साथ युद्ध के लिये अभिषेक की आवश्यकता होती है।

मुझे विश्वास है, कि यदि कोई व्यक्ति अथवा कलीसिया सेवा बन्द कर देती है – अनिवार्य रुप से किसी को यीशु के विषय में बताना बन्द कर देती है – तो अभिषेक चला जायेगा। आखिरकार, यह आत्मिक द्वन्द के लिये दिया गया है और परमेश्वर चाहता है कि हम इसे उसकी महिमा के लिये प्रयोग करें।

हाल की एक बुधवार रात्रि सभा में प्रभु ने एक शक्तिशाली वचन के साथ मुझे प्रेरित किया, कि कलीसिया को पूरी शक्ति से स्थानीय समाज व संसार में गवाही देनी चाहिये। मैने लोगों से प्रतिज्ञा की, कि हम तत्काल ही प्रशिक्षण के लिये एक श्रृंखला आरम्भ करेगें, उनके लिये जिन्हे इसकी आवश्यकता है, ताकि पूरी कलीसिया सक्रिय रुप से हर एक को एक मजबूत गवाही दे सके।

उस रात्रि मैंने यशायाह के अद्‌भुत शब्दों पर ध्यान दिया जो इकसठवें अध्याय को आरम्भ करते हैं: ''प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है।''

क्या शक्तिशाली शब्द हैं। यीशु ने इन्हे अपनी सेवकाई आरम्भ करने के लिये प्रयोग किया, जब वह धरती पर था। लूका रचित सुसमाचार कहता है, कि प्रभु ''आत्मा से भरा हुआ था।'' इससे बहुत लोगों को अचरज होता है, जो नही जानते कि यीशु मसीह जो पूर्ण मनुष्य व पूर्ण परमेश्वर था, उसे शैतान से युद्ध करने के लिये पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने की आवश्यकता थी, जैसी हमें होती है। इस अंश में, यीशु का आत्मा द्वारा अभिषेक हो चुका है जब युहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने उसे

बपतिस्मा दिया तथा जंगल में शैतान द्वारा उसकी परीक्षा भी हो चुकी है। तब वह ''अपनी रीति के अनुसार'' नासरत में आराधनालय में गया और पढ़ने के लिये खड़ा हुआ। उसे यशायाह की पुस्तक दी गई। लूका कहता है, उसने खोल कर वह जगह निकाली, जहां यह लिखा हुआ हैः

प्रभु का आत्मा मुझ पर है
इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने
के लिये मेरा अभिषेक किया है
और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को
छुटकारे का और अन्धो को दृष्टि पाने का
सुसमाचार प्रचार करुं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं।
और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का
प्रचार करुं। (4:18 – 19)

लूका बताता है कि जब यीशु बैठ गया, ''आराधनालय के सब लोगों की आँखें उस पर लगी थी'' मुझे यह शब्द ''लगी थीं'' अति प्रिय है। उन्होने परमेश्वर की सामर्थ व उपस्थिति को अपने मध्य में महसूस किया। वे ताकते ही रह गये। तब यीशु ने उन्हें बताया, कि क्यों वे सामर्थ को इस तरह महसूस कर रहे हैंः जैसा उन्होने पहले कभी नही किया:

''आज यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है''

''मैं ही वह हूँ, यीशु कह रहा था।'' मैं ही हूँ जिसका वर्णन यशायाह कर रहा था।'' आप स्मरण करेंगें कि अपनी सेवकाई के दौरान – यहाँ तक कि अपने जी उठने के बाद भी – यीशु ने अपने विषय में पवित्र शास्त्र की गवाही की बात कही है। पुराना नियम विभिन्न तरीकों से राज्य के आने तथा राजा के आने के लिये बताता है। और उसने अक्सर इस साक्षी की बात कही, जैसा बाद में उसके प्रेरितों ने भी कही।

यह विचित्र है, नहीं क्या, कि प्रत्यक्ष में वही लोग जिनकी आँखें उस पर ''लगी'' थीं और उस पर अचम्भा करते थे, शीघ्र ही उठकर उसे चोटी के नीचे गिराने का प्रयत्न करने वाले थे।

अंश हमें केवल यही नहीं दर्शाता कि अभिषेक प्रभु पर आया, पर यह भी कि वह अनेक कारणों से आया। वह था (1) सुसमाचार प्रचार

करने के लिये (2) टूटे ह्रदयों को जोड़ने (3) बंन्धुओं को छुटकारे का संन्देश देने (4) आश्चर्य के कार्य करने (5) कुचले हुओं को छुड़ाने तथा (6) प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करने।

और ऐसा ही हमारे साथ है।

प्रथम व सबसे पहले, यदि हम अभिषेक चाहते हैं, ''हमें कगांलो को सुसमाचार सुनाना है।'' आखिरकार, इसी के तो लिये पवित्र आत्मा आप पर आया है – एक गवाह बनने के लिये।

यहाँ ''कगांल'' क्यों कहा गया है? यह सत्य है कि यीशु ने बहुधा स्वयं को उन के साथ गिना जिनके पास पर्याप्त धन व आश्रम नहीं था। पर इससे बढ़कर भी कुछ है : हम सब प्रभु के बिना आत्मिक रुप से कगांल हैं। अतः हमें सुसमाचार, शुभ संन्देश, खुशखबरी सुनाना है।

यशायाह व लूका के अनुसार, अभिषेक ''टूटे मन वालों को चंगा करने के लिये'' भी आया। क्या महान, महान समाचार है हमारे टूटे मनवाले संसार के लिये! ओह, पवित्र आत्मा क्या कुछ कर सकता है यदि हम उपलब्ध हैं। उसे केवल चाहिये समर्पित पात्र! क्या आज आप वह पात्र बनेंगे? जब आप इन पृष्ठों को पढ़ रहे हैं उससे कहिये कि वह आपको वो पात्र बनाये – अभी।

बिना अभिषेक के प्रचार व गवाही देना टूटे मन वालों के लिये बहुत थोड़ा ही कर पायेगा। उन पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के विषय में सोचिये, जिन्हे आप जानते हैं, जो परिस्थितियों के द्वारा कुचले हुए हैं और चंगाई पा सकते हैं। परिवारों तलाकशुदा लोगों, अकेले, भयभीत, बहिष्कृत लोगों, आत्म हत्या के इच्छुक लोगों के बारे सोचिये। सूची बढ़ती जाती है। केवल अभिषेक ही सब पुरुषों व स्त्रियों के ह्रदयों को चंगाई प्रदान कर सकता है – यह बाइबल कहती है।

छुटकारे का प्रचार करना

प्रभु यीशु का अभिषेक, ''बन्धुओं को छुटकारे का संन्देश'' देने के लिये भी हुआ। लोग शैतानों द्वारा बाँधे हुए; बरबाद किये हुए थे।

आधुनिक मनुष्य हँसता है, पर छुटकारे की आवश्यकता आज और अधिक हैं। हमारे समाचार पत्रों तथा टेलीवीजन पर प्रतिदिन छाई हुई बन्धुवाई के विषय में सोचिये, खौफनाक, खौफनाक बन्धुवाई। मदिरा तथा नशे की गोलियाँ। निषिद्ध यौन – सम्बन्ध तथा समलैगिंकता। झूठे धर्म तथा जादू – टोना। गलत ढंग से अर्जित किया हुआ धन तथा भौतिकवाद।

प्रभु यीशु मसीह ने मरकुस 16:17 में कहा, ''वे मेरे नाम से दुष्टआत्माओं को निकालेंगे।'' पृथ्वी पर केवल पवित्र आत्मा ही एक शक्ति है, जो शैतान की शक्ति को नष्ट कर सकती है। और उसने आप, विश्वासी को, यह शक्ति दी है। सन्तो, हमें कार्यरत हो जाना चाहिये।

यीशु ने यह भी कहा कि उसका अभिषेक हुआ है, ''अन्धों को दृष्टि पाने का'' सुसमाचार प्रचार करने को। अन्धापन केवल शरीर तक सीमित नहीं है, अपितु आत्मिक क्षेत्र में भी पाया जाता है। दोनों के लिये यीशु ही उत्तर है।

उसकी कार्य सूची में उसके लिये और हमारे लिये ''कुचले हुओं को छुड़ाना'' भी शामिल है। जैसा बन्धुआई के साथ है, संसार के प्रत्येक राष्ट्र को उत्पीड़न का भयंकर प्रचलन खाये जाता है। यह केवल परमेश्वर की सामर्थ से ही नष्ट होगा।

वर्तमान अंधकार का शासक, उत्पीड़न का स्वामी है और केवल परमेश्वर की सामर्थ से ही हराया जाएगा। इसलिये, प्रिय, ''मेरे गवाहों को,'' पवित्र आत्मा का अभिषेक, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सामर्थ आवश्यक है।

यीशु द्वारा बताया हुआ अन्तिम कार्य, जो निश्चित रुप से छोटा नही, वह था, ''प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करना।''

जैसा, उसने घोषणा की, यह समय है – अनुग्रह का समय।

संसार का उद्धारकर्ता आ गया है, अन्त आने से पहले, मनुष्य जाति के लिये उद्धार ले कर।

आगे आने वाले समय

अन्तिम समय के विषय में, बाइबल बहुत कुछ कहती है। अपने उद्देश्यों के लिये, कुछ बातें मैं आपके साथ बाँटूंगा, जिन्हे पवित्र आत्मा ने मुझे दर्शाया है। यह बातें जैसे – जैसे समय निकट आयेगा विश्वासियों के लिये पूरी होंगी।

प्रेरितों के काम 3:19 –21 में, बाइबल बताती है कि हम पश्चाताप करें,

कि तुम्हारे पाप मिटाये जाएं, जिससे प्रभु के सन्मुख से विश्रान्ति के दिन आएं। और वह उस मसीह यीशु को भेजे, जो तुम्हारे लिये पहले ही से ठहराया गया है। अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब बातों को सुधार न कर लें, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है, जो जगत की उत्पत्ति से होते आये हैं।

पवित्र आत्मा ने पतरस द्वारा कहा, हर बात जिसकी प्रतिज्ञा की गई – सब कुछ जिसकी घोषणा भविष्यद्वक्ताओं ने की, यीशु मसीह के पृथ्वी पर लौटने से पूर्व घटित होगा व पूरा होगा।

प्रभु के आत्मा ने मुझे यशायाह 35 की ओर प्रेरित किया, वे बातें दिखाने के लिये, जिनकी प्रतिज्ञा विश्वसियों से की गई है। बातें, जो हम पर अति शीघ्र आने वाली हैं। अब मैं आपके साथ बांटना चाहता हूँ, और कृपया स्मरण रखिये कि सब कुछ जो पुरानी वाचा में लिखा हुआ है, अनुग्रह के इस विधान में जो आप व मैं पाते हैं उसकी एक छाया है।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने जिसकी घोषणा की, हम उसकी वास्तविकता में चल रहे हैं। यशायाह 35 आरम्भ होता है

जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे,
मरुभूमि मगन होकर केसर की नाई फूलेगी;
वह अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ
जयजयकार करेगी।
उसकी शोभा लबानोन की – सी होगी
और वह कर्मेल और शारोन के तुल्य तेजोमय हो जाएगी।

वे यहोवा की शोभा और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगें। (पद 1–2)

इस्त्राएल देश में पले – बढ़े एक व्यक्ति के रुप में, मैं कुछ – कुछ समझ सकता हूँ, कि जब बाइबल जंगल के विषय में कहती है तो उसका क्या अर्थ है। वहाँ आप पाएंगे; साँप, बिच्छु, मृत्यु, सूखा। यह ऐसे विश्वासी के लिये सांकेतिक है, जो शुष्क है, उस आत्मिक सूखे में रह रहा है जहाँ साँप व ऐसी ही चीजें हैं। परन्तु परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है, कि एक दिन आयेगा जब वह शुष्क तथा खाली जीवन, परमेश्वर की भरपूर सामर्थ से आशीषित होगा उस शुष्क व खाली स्थान को जीवन व आशीष कैसे मिलेगी?

यशायाह कहता जाता है कि ''उसकी शोभा लबानोन की सी होगी।'' मैं स्मरण करता हूँ, जब मैं बालक था, उत्तर की ओर लबानोन से हवाएं रह – रह कर आती थीं; और मै लबानोन के अद्‌भुत देवदारों की गंध ले सकता था। यही देवदार हैं जिनकी बात बाइबल करती है जब वह लबानोन की शोभा के विषय में कहती है। जब यशायाह उनकी खुशनुमा सुगंध के बारे में कहता है, वह परमेश्पर की उपस्थिति के एक नये वातावरण के बारे में पहले से बता रहा है जो आपके मरुस्थल – आपके आत्मिक जीवन को – एक सुन्दरता व बाहुल्य के स्थान में परिवर्तित कर देगा।

आगे बढ़ते हुए भविष्यद्वक्ता तब, ''कर्मेल व शारोन के तेज'' की बात करता है। आज इस्त्राएल में शारोन की तराई, मध्य – पूर्व में सबसे उपजाऊ तराई है। सबसे बढ़िया उपज का स्थान तथा सबसे खूबसूरत फूलों का प्रदेश। यही बात कर्मेल के लिये सत्य है। यशायाह में यह परमेश्वर के वचन के नये प्रकाशन के विषय में बताता है, उस बीज के विषय में बताता है जो बोया जायेगा कि सुन्दर फल लाये।

''वे यहोवा की शोभा'' यशायाह तब कहता है, ''और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगे।'' वह परमेश्वर की महिमा के नये दर्शन की बात करता है। और हमने पीछे सातवें अध्याय मे क्या पाया था कि परमेश्वर की महिमा क्या है? आप स्मरण करेगें कि निर्गमन 33:12 में मूसा ने परमेश्वर

से अपनी महिमा दिखाने को कहा। फिर निर्गमन 34:5 – 6 में उसने क्या देखा, केवल परमेश्वर के गुण, उसका व्यक्तित्व। दूसरे शब्दों में, यशायाह कहता है कि हम, स्वयं परमेश्वर का एक नया दर्शन पाएंगे।

इन सबको एक साथ रखने से हम देखते हैं कि परमेश्वर की इच्छा है कि हमें, हमारे जीवनो के आस – पास नया वातावरण दे, स्वर्ग से नया वचन दे, अपने वचन से नया प्रकाशन दे तथा स्वयं का एक नया दर्शन दे। जब यह होता है तो मृत्यु, व सूखे का हमारा मरुस्थल अनुभव, प्रतिज्ञात देश में बदल जाता है।

और भी कुछ है, क्योंकि यशायाह पद 3 – 4 में आगे कहता है:

ढीले हाथों को द्रढ़ करो
और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो
घबराने वालों से कहो हियाव बाँधों, मत डरो!
देखो, तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने और
प्रतिफल देने को आ रहा है।
हाँ, परमेश्वर आकर तुम्हारा उद्धार करेगा।

विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार होगा। जो नये वातावरण, नये प्रकाशन, और परमेश्वर के नये दर्शन से रुपान्तरित हो गये थे, अब ढीले हाथों व थरथराते घुटनों को स्थिर कर रहे हैं तथा संसार से कह रहे हैं, ''डरो मत, देखो, परमेश्वर तुम्हारा उद्धार करने आ रहा है।''

निश्चय ही यह भविष्यद्वाणी इस्त्राएल के लिये सहस्त्राब्दि में, की गई थी, पर नये नियम के समय की वास्तविकता की छाया के रुप में, इसमें आपके व मेरे लिये आत्मिक निर्देश हैं। निश्चित रुप से हम अपने चहुँ ओर देखते हैं तो उजाड़ पाते हैं, पर हमारे लिये परमेश्वर उसे रुपान्तरित कर देगा। जब हम संसार में जाकर सेवकाई करेंगें हम अभूतपूर्व, विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार देखेंगें।

इस बदले हुए उजाड़ से और क्या – क्या परिणाम यशायाह ने बताया निकलेंगें? पद 5 – 6 को पुनः देखिये : अन्धे देखेगें, बहरे सुनेगें, लंगड़े चौकड़ियाँ भरेंगें, गूगें गाएंगें!

यह अति आश्चर्यजनक है। परमेश्वर की आलौकिक सामर्थ शारीरिक चंगाई के लिये मुक्त कर दी जायेगी।

वर्षों पूर्व, एक दिन का स्मरण आता है, जब मैने कैथरीन कुलमन को अपने अद्वितीय ढ़ंग में भविष्यवाणी करते सुना था, कि प्रभु के आने से पहले, ऐसा दिन आएगा, जब परमेश्वर की सामर्थ इतनी बड़ी होगी कि प्रत्येक चंगा हो जाएगा। ''मसीह की देह में एक भी रोगी संत नहीं होगा'', उसने घोषणा की। अपनी आदत के अनुसार, नाटकीय ढंग से, उंगली से इशारा करते तथा एक हाथ कूल्हे पर रखे हुए, उसने पूछा था, ''क्या वह दिन आज हो सकता है?''

निश्चय ही, उसने वह दिन आते न देखा, पर वह आएगा। पवित्र आत्मा ने मुझे इसका विश्वास दिलाया है।

हमें परमेश्वर की अपने लोगों पर इस ढंग से कार्य करने की इच्छा पर सन्देह नही करना चाहिये। पवित्र शास्त्र में हमें प्रमाण मिलता है आलौकिक प्रबंध का, जिसमें चंगाई सम्मिलित है। भजन संहिता 105:37 में, उदाहरणार्थ, इस्त्राएल की संन्तान के लिये यह शब्द हम पाते हैं, जब वह उन्हे मिस्त्र से निकाल लायाः ''और उन में से कोई निर्बल न था।'' यह स्थाई स्वास्थ्य की शानदार स्थिति है। केवल ईश्वरीय चंगाई ही नहीं, पर ईश्वरीय स्वास्थ्य भी स्थायी चंगाई। मुझे विश्वास है कि वह दिन आ रहा है जब प्रत्येक विश्वासी स्वस्थ्य होगा।

मूल बात यह हैः यदि परमेश्वर सबको मूसा की व्यवस्था के आधीन चंगा करता है, तो अनुग्रह के आधीन कितना अधिक चंगा करेगा? इसके अलावा, जब यीशु ने पृथ्वी पर अपने समय के लोगों को चंगा किया, वह व्यवस्था के विधान के आधीन था, यदि ऐसा है तो, अनुग्रह के विधान के आधीन कितनी अधिक चंगाई होगी?

अत्एव, यशायाह के लिये ये विचित्र नहीं है कि वह भविष्यद्वाणी कर कि हमारा उजाड़, सुन्दरता में बदल जायेगा। विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार के दौरान, परमेश्वर आश्चर्यजनक चंगाई देगा।

वह यहीं पर रुकता नहीं है, जैसे 35 अध्याय जारी रहता है वह तीसरा परिणाम बताता है :

क्योंकि जंगल में जल के सोते फूट निकलेगें,
और मरुभूमि में नदियाँ बहने लगेंगी।
मृगतृष्णा ताल बन जाएगी,
और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे। (पद 6 – 7)

एक शक्तिशाली, नया अभिषेक हमारे उजाड़ पर आयेगा, जीवित जल की नदियाँ फूट पड़ेगी – हममे से प्रवाहित होंगी। यह कोई छोटी बात नहीं होगी। यह दोगुने भाग के समान हो सकता है, जिससे सोते, जलाशय, तथा झरने निकलेंगें। यह पवित्र आत्मा का शक्तिशाली बपतिस्मा होगा।

उन दिनों में आत्मा की हलचल हमारे द्वारा होगी। योएल 2:28 तथा प्रेरितों 2:17 में परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि वह अपना आत्मा 'ऊपर' से भेजेगा, पर 'भीतर से बाहर' देगा। वह हमें प्रयोग करेगा।

इस रुपान्तरण का चौथा परिणाम यशायाह ने इस प्रकार पहले से बताया है :

जिस स्थान में सियार बैठा करते हैं,
उसमें घास और नरकट और सरकण्डे होंगे। (35:7)

परमेश्वर अपने लोगों को हर एक शैतानी प्रभाव से मुक्त करेगा।

सियार – शैतान – घास में लेटे हुए हैं, उसे नष्ट कर रहे हैं, जब वह बाहर निकाले जाएंगे वह पुनः ठीक हो जाएगी।

पाँचवां, मसीह की देह में पवित्रता आएगी जैसा इन शब्दों में चित्रित है :

वहाँ एक सड़क अर्थात राजमार्ग होगा।
उसका नाम पवित्र राजमार्ग होगा
कोई अशुद्ध जन उस पर से चलने न पाएगा।
वह तो उन्ही के लिये रहेगा
और उस मार्ग पर जो चलेंगे, वह चाहे मूर्ख भी हों
तो भी कभी भी न भटकेंगे। (35:8)

पवित्रता इतनी बड़ी होगी कि दुचित्ते लोगों को भी स्थिरता प्रदान करेगी। वे एक बात से दूसरी बात की ओर कूदना छोड़ देंगे।

छठवाँ परिणाम यह होगा :
वहाँ सिंह न होगा,
और कोई हिंसक जन्तु उस पर न चढ़ेगा,
न वहाँ पाया जाएगा,
परन्तु छुड़ाये हुए उसमें नित चलेंगे। (35:9)

बिलकुल स्पष्ट है, शैतान व उसकी दुष्टआत्माएं मसीह की देह से पूर्णतया गायब होंगे।

अन्ततः,
और यहोवा के छुड़ाये हुए लोग
लौटकर जयजयकार करते हुए
सिय्योन में आएंगे,
और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा;
वे हर्ष और आनन्द पाएंगे
और शोक और लम्बी साँस का लेना
जाता रहेगा। (35:10)

मेरा विश्वास है कि यह हमारे लिये उठा लिये जाने की ओर संकेत है। क्योंकि केवल तभी – जब हम इस संसार से निकल जाएंगे, शोक और लम्बी साँस का लेना जाता रहेगा।

आपके लिये और बड़े कार्य

बाइबल घोषणा करती है कि यह बातें प्रभु की ओर से आ रही हैं। जब हम अपने आस – पास देखते हैं, इससे अधिक अविश्वसनीय कोई बात नही लगती। फिर भी यीशु ने एक अन्य वचन अंश में कहा, ''वरन इनसे भी बड़े काम करेगा क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ'' (युहन्ना14:12)।

यह चौंकाने वाली बात है। बाइबल कह रही है कि एक बात है जिसे यीशु न कर पाया उसे हम कर सकते हैं। कई वर्षों तक इस कथन ने मुझे चकरा दिया था। मैंने सोचा, प्रभु ने जो किया उससे बड़ा कार्य क्या हो सकता है – मृतक को जिलाना, दुष्टआत्माओं को निकालना,

समुद्र को शाँत करना, हवा को आज्ञा देकर बन्द करना, लगँड़े, अन्धे, बहरे को चंगा करना? इससे बड़ा क्या है?

एक दिन पवित्र आत्मा ने मुझ पर कुछ प्रगट किया जिसने मेरा जीवन बदल दिया। वह जो लाजर को मृतकों में से बुला सका। और पानी को शाँत कर सका, खड़ा होकर यह नहीं कह सका, ''मेरी ओर देखो, एक पापी, जो परमेश्वर के अनुग्रह से बचाया गया। एक समय मैं खोया हुआ था पर अब ढूँढ लिया गया हूँ, अन्धा था पर अब देखता हूँ, बन्धन में था पर अब मुक्त हूँ।''

जीवित परमेश्वर के निर्दोष पुत्र को पाप कभी छू न पाया। वही एक है जो सिद्ध जीवन जिया।

अतः आज, आप और मैं इस अंधकारमय संसार के सामने खड़े होकर कह सकते हैं, ''मेरी ओर देखो, यीशु ने क्या किया है।'' जैसा यशायाह ने दर्शाया, जब हमारा उजाड़ रुपान्तरित होगा और हम पर नया अभिषेक आयेगा। वह हमको उसके गवाह बनाएगा। तथा और भी बड़ा कार्य एक अभूतपूर्व ढंग से किया जाएगा।

इस पर विचार कीजिये। एक ऐसा दिन आनेवाला है, जब पवित्र आत्मा का अभिषेक हमारे ऊपर इतना अधिक होगा कि हम विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार, आलौकिक बातों का विश्व स्तर पर होना, सामर्थ का एक ताजा अभिषेक, मसीह की देह में से हर शैतानी प्रभाव से छुटकारा, सम्पूर्ण कलीसिया में पवित्रता, विश्वासियों के मध्य से शैतान का पूर्ण लोप होना, प्रभु का आना तथा हमारा उठाया जाना, इन सबको देखेंगे।

वह घड़ी कितनी उत्तेजनापूर्ण होगी। क्या आप अपने उजाड़ को रुपान्तरित होने देने के लिये मूल्य चुकाने को तैय्यार हैं?

प्रभु की आवाज

एक बात जो बाइबल इस रुपान्तरण के विषय में स्पष्ट रीति से बताती है, वह यह कि हम प्रभु व उसकी महिमा को जानेंगे तथा उसकी आवाज को सुनेंगे। इस अध्याय को समाप्त करने से पूर्व, मैं परमेश्वर की आवाज को पहचानने के बारे में कुछ बहुत महत्वपूर्ण बताना चाहता हूँ,

क्योंकि उसकी आवाज को जानने के द्वारा ही, हम उसकी सामर्थ को जानेंगे।

प्रेरितों के काम 1:4 कहता है कि पुनरुत्थित यीशु ने प्रेरितों को आज्ञा दी कि यरुशलेम को न छोड़ें, परन्तु पिता की प्रतिज्ञा के लिये प्रतीक्षा करें, जिसे उसने कहा, ''तुम मुझ से सुन चुके हो।'' वे उसकी आवाज को जानते थे इससे पूर्व कि पद 8 में, वह उनको बताता है कि वे सामर्थ पाएंगे।

एक बार जब आप उसकी आवाज को जान लेंगे, आपको भी अगुवाई मिलेगी जैसे फिलिप्पुस को एक दिन मिली प्रेरितों के काम 8:26 में, कि दक्षिण की ओर अज्जाह जाने वाले जंगल के मार्ग पर जा, जहाँ उसकी भेंट एक रथ में कूश देश के एक खोजे से हुई। आत्मा फिलिप्पुस से कहता है कि दौड़ कर उस खोजे को पकड़ ले। फिलिप्पुस ऐसा ही करता है। वह उस मनुष्य से बातें करने लगता है। उसके रथ में चढ़ कर बैठ जाता है तथा पवित्र शास्त्र का जो अंश वह पढ़ रहा है उसे सुनाता है। जब खोजा पूछता है कि इस अंश का क्या अर्थ है, ''तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया'' (पद 35)।

वह मनुष्य परिवर्तित हुआ तथा बपतिस्मा लिया, बड़ी सीधी सी बात है, क्योंकि फिलिप्पुस ने आत्मा का आज्ञा पालन किया। उसको स्पष्ट रुप से अभिषेक मिला जब उसने ''अपना मुँह खोला'' और यीशु का सुसमाचार सुनाया''। आवाज को सुनना तथा आज्ञापालन करना मूल बात है अभिषेक प्राप्त करने में। जब आप यीशु के गवाह बन जाएंगे, अभिषेक आप पर भी आयेगा। जब अभिषेक आता है आप उसका प्रत्युत्तर दीजिये, क्योंकि यदि आपने उसके स्पर्श को न पकड़ा, वह शायद दोबारा कभी आपकी ओर से होकर न जाये।

अभिषेक की रक्षा कीजिये, उसे संजोकर रखिये। जब आप पवित्र आत्मा को जान जाते हैं, और यह भी कि वह कैसे कार्य करता है, आप समय, तथा असमय तैय्यार रहेंगे। कभी – कभी वह इतनी तेजी से कार्य करता है कि वह आपके सिर को चक्कर दे दे। मेरा विश्वास है कि इसी

कारण से फिलिप्पुस दौड़ा। वह जानता था कि उसके पास एक अवसर है कि परमेश्वर के लिये एक आत्मा जीत ले। अन्य समयों पर आत्मा धीरे से कार्य करता है और आपको उसके साथ बस बहना है, प्रतीक्षा करनी है कि वह पहल करे।

स्मरण रखिये : वह आपके पीछे नहीं चलता, आप उसके पीछे चलते हैं।

आप उसकी आवाज कैसे सुनते हैं, यह आपको सीखना है। उसकी आवाज को जाने बिना, आप उसकी सामर्थ को नही जान पाएंगे / जैसा मैंने कहा प्रेरितों 1:4,8 में, प्रेरितों को सामर्थ नहीं मिली, जब तक उन्होने अपने स्वामी की आवाज को न सुन लिया। अनिवार्य रुप से वह अपने राज्य के लिये आत्माओं को जीतने की ओर आपको अग्रसर करेगा।

मेरे प्रिय मित्रो, यूहन्ना 10:3–4 में यीशु बड़ी सफाई से कहता है कि वह हमें नाम लेकर बुलाएगा व अगुवाई करेगा। क्या आप उसकी आवाज को सुनते हैं? यीशु कहता है कि उसकी अपनी भेंड़ें उसके पीछे चलेंगी, क्योंकि वह उसकी आवाज पहचानती हैं। यूहन्ना 10:27 में यीशु समस्त विश्वासियों के लिये यह महत्वपूर्ण संन्देश दोहराता है : ''मेरी भेड़ें मेरी आवाज सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूँ और वे मेरे पीछे चलती हैं।'' यदि आप यीशु को जानने का दावा करते हैं, आपको अपने जीवन में उसकी आवाज को सुनना और उसकी अगुवाई में चलना चाहिये।

पर और भी है। हमें उसके पीछे प्रतिदिन चलना है। प्रतिदिन उसकी आवाज सुननी है। भजन संहिता 95:7 हमें चुनौती देता है कि हर दिन – आज हमें परमेश्वर की आवाज सुननी है। प्रश्न यह नही कि क्या आज परमेश्वर आपसे बात कर रहा है अथवा नहीं, प्रश्न यह है कि क्या आप आज उसे स्वयं से बोलते सुन रहें हैं या नहीं?

क्या कारण है कि लोग ऐसे परमेश्वर की आवाज को नहीं सुनते जो उन्हे जानता है, प्यार करता है और उन्हे अपनी शाँति में ले जाने की इच्छा रखता है? एक कारण कि हम क्यों नहीं सुन पाते क्योंकि हम सुनने को अस्वीकार कर देते हैं। भजन संहिता 95:8 हमें अपने हृदयों को कठोर करने तथा परमेश्वर के विरुद्ध हो जाने के प्रति चेतावनी देता है।

परमेश्वर की आवाज सुनने के लिये आपमें उसके साथ रहने की इच्छा होनी चाहिये। प्रार्थना तथा आराधना में उसकी संगति करिये। यदि आप पाप में जी रहे हैं और पश्चाताप नहीं किया है, उसके अनुग्रह व दया के द्वारा, उसके पास लौट आइये। हमें उसको अस्वीकार नहीं करना है जैसा इब्रानियों 12:25 चिताता है।

अतः, उसकी उपस्थिति में लौट आने के लिये, दैनिक जीवन में उसकी आवाज सुनने के लिये आपको क्या करना चाहियें।

प्रथम, भरमाने वाली बातों से अलग हो जाइये। यशायाह 30:15 व 21 में शाँत रहकर व भरोसा रखकर लौटने की बात कही है तथा परमेश्वर की सुनना जब वह हमारे पाँवों को मार्ग दर्शन देता है। हमें पहले परमेश्वर की ओर ध्यान देना है।

दूसरा, प्रार्थना में जब आप उसे अपनी आवाज देंगे, प्रत्युत्तर में आप उसकी आवाज सुनेंगें। स्मरण रखिये, आप पवित्र आत्मा की उपस्थिति के बिना परमेश्वर की आवाज को कभी सुन न पाएंगे। जब आप भरमाने वाली बातों से अलग हो जाते है तथा आत्मा को अपने ऊपर आने देते हैं, परमेश्वर बोलेगा।

अगली बात है, यीशु ने परमेश्वर की आवाज सुनी क्योंकि वह निरन्तर परमेश्वर की इच्छा को खोजता था। उसने सुनी क्योंकि उसने आज्ञापालन किया (यूहन्ना 5:30)

अन्त में, परमेश्वर हमें पुकारता है कि हम धार्मिकता के लिये भूख व प्यास रखें (मत्ती 5:6) और प्रार्थना करें व उसके दर्शन के खाजी हों (2 इतिहास 7:14)

आज, परमेश्वर आपको अपने पास लौट आने के लिये पुकार रहा है। अभी एक क्षण लेकर सुनिये। मैं जानता हूँ आप उसकी आवाज को सुनेगें। क्या आप उसकी सामर्थ को अपने जीवन में जानने के लिये तैय्यार हैं? अब शाँत हो जाइये और उसे आपसे बोलने दीजिये। आज उसे यह कहते सुनिये, ''मार्ग यही है, इसी पर चलो'' (यशायाह 30:21)।

तब आप उसकी उपस्थिति व सामर्थ का अनुभव करेंगे।

अध्याय – 15

अपने तेल को बदलिये

बाइबल बहुधा पवित्र आत्मा के अभिषेक की तुलना तेल से करती है। दोनो ही महसूस किये जा सकते है तथा अनुभव किये जा सकते हैं। तेल के गुणों व विशेषताओं के बारे में कुछ अवलोकन, आत्मा के कार्य करने को , समझने में, वास्तव में सहायता कर सकते हैं।

उदाहरणार्थ, यदि नियमित पुनः पूर्ती न की जाये तो तेल उड़ जाता है तथा अन्ततः गायब हो गायब हो जाता है। आप इसे कभी करके देख सकते हैं। एक बर्तन में कुछ तेल डालकर लम्बे समय तक पड़ा रहने दीजिये और आप पाएंगे कि उसमें से कुछ तेल उड़ चुका है। यदि काफी समय व्यतीत हो जाये, तो आप तेल वाले बर्तन को खाली पाएंगे। शायद ही कोई प्रमाण मिले कि इसमें कभी तेल था।

आत्मा वाष्प बनकर उड़ता नहीं है, पर आप सोचेंगे कि वह उड़ गया है यदि आप इस प्रकार की उपेक्षा करेंगे। आपको निरन्तर आत्मा के तेल को अपने जीवन पर से बहने देना चाहिये, कि आपके आत्मिक जीवन को तरोताजा करे। यह आप प्रार्थना द्वारा, परमेश्वर के साथ संगति द्वारा और परमेश्वर के वचन को पढ़ने के द्वारा करते हैं।

अभिषेक आपके जीवन पर बना रहेगा जब आप प्रभु के साथ (सदैव उससे) चलना व बातचीत जारी रखेंगे। जब आप उसकी उपस्थिति में समय बिताते हैं, पवित्र आत्मा का समृद्ध तेल, आपकी आत्मा को ताजा व नया करते हुए, आपके जीवन पर से बहेगा।

तेल की दूसरी रोचक विशेषता है, कि यदि बर्तन में कोई छेद है तो वह उसमें से बह जाता है। छिद्र, अति सूक्ष्म, यहां तक कि नग्न आँखों से गुप्त भी हो सकता है, पर यदि बर्तन की बनावट में कोई दाग धब्बा या अशुद्धता है, तेल उसे खोज निकालेगा तथा बह जाएगा।

इफिसियों 4, जब कहता है कि शैतान को कोई ''अवसर'' न दो, तो वह आपके बर्तन में किन्ही संभावित ''छिद्रों'' के विषय में सावधान करता है। ''अवसर'' शब्द मार्ग या खिड़की के लिये यूनानी शब्द से

निकला है। सो आप को शैतान को कोई मार्ग नहीं देना है। कड़वाहट, क्षमा न करना, आत्मदया, और ऐसी ही अन्य बातों के छिद्र आपके जीवन में रेंगकर न आने पायें। क्योंकि तब आत्मा का बहुमूल्य तेल बाहर बह जाएगा।

यह ''छेद'' जो आपके आत्मा के बर्तन पर आक्रमण करते हैं, इतने सूक्ष्म हैं कि आरम्भ में पता लगाना कठिन है। कड़वाहट तो नितान्त अदृश्य रुप में रेग कर अन्दर आ जाती है। और कितनी बार आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिले हैं, जिसका बहुत – सा तेल आत्मदया के छिद्रों द्वारा बहा जा रहा है? ऐसे लोंगों से आप केवल यही सुनते हैं, ''बेचारा, बेचारा मैं''।

जब आप अभिषेक को खोज रहे हैं व उसमें चलते हैं, यह अत्यावश्यक है कि आप ऐसे छिद्रों के प्रति सावधान रहें तथा अपने तेल को ताजा रखने पर ध्यान केन्द्रित करें।

तेल के विषय में दूसरा सत्य है, कि केवल ताजे तेल में सही घनत्व – गाढ़ापन होता है एक इंजन या मशीन की अच्छी तरह सेवा करने के लिये। इस गाढ़ेपन को चिपचिपापन कहते हैं और यह महत्वपूर्ण है क्योकि यह उष्मा व दबाव को सहन करने व घर्षण तथा तनाव को कम करने की, तेल की क्षमता का मापदंड है। चिपचिपापन जितना कम होगा, दबाव के कुछ स्तरों पर, तेल उतना ही कम रक्षा करेगा।

जैसा आप जानते हैं, यह महत्वपूर्ण है कि आप अपनी कार में तेल नियमित रुप से बदलें। यह इतना महत्वपूर्ण है कि अधिकाँश वाहन निर्माता सलाह देते हैं कि हर तीन से पाँच हजार मील पर तेल बदलना चाहिये, तकि उसका भरपूर लाभ मिल सके। अन्यथा, मैला होने के साथ – साथ, तेल पतला और बेरंग भी हो जाता है तथा इंजन की सुरक्षा करने के स्थान पर उसकी हानि भी की सकता है।

इसी प्रकार से, आपका आभिषेक भी आत्मिक द्वन्द की गर्मी से पतला हो जायेगा। इसी कारण से आपको प्रतिदिन प्रार्थना व बाइबल अध्ययन पर ध्यान देना चाहिये। अपना आत्मिक गाढ़ापन तथा शक्ति बनाने व जारी रखने का यही एक तरीका है।

कुछ कठिन प्रश्न पूछिये

सो, आपका तेल कितना ताजा है? क्या आप बराबर ताजा तेल डाल रहे हैं या आप एक पुराने अभिषेक के द्वारा ही चल रहे हैं? आपके जीवन पर परमेश्वर का स्पर्श क्या बासा हो गया है? क्या यह उड़ने लगा है? क्या आपका बर्तन टूटा हुआ है? क्या उसमें छिद्र है?

मैं जानता हूँ आपमें से कुछ कह रहे हैं, ''आह!'' मेरी आशा है कि पीड़ा इतनी गम्भीर है कि आप अपने अभिषेक की ताजगी, स्तर तथा मजबूती को जाँचेंगे।

प्रार्थना तथा बाइबल अध्ययन के साथ – साथ (जो कि अनिवार्य है) आपको परमेश्वर के पुरुषों व स्त्रियों की भी सुनने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिये, मैं बहुधा कैथरीन कुलमन के संन्देशों को टेप पर सुनता हूँ और अधिक से अधिक मसीही पुस्तकें पढ़ता हूँ। यह आपके अस्तित्व व वृद्धि के लिये महत्वपूर्ण है कि आप नियमित रुप से परमेश्वर के अन्य सेवकों द्वारा पोषित किये जायें।

तिमुथियुस 4:13 में पौलुस तिमुथियुस से कहता है कि जब वह पौलुस के पास पुनः आये, तो पुस्तकें लेता आये। परिपक्व मसीहियों से सीखनें के महत्व पर मैं और अधिक जोर नहीं दे सकता। यह एक और तरीका है निश्चय करने का, कि आपका आत्मिक तेल नियमित रुप से नया हो रहा है।

बीते कल की वास्तविकता पर जीवित रहने का प्रयत्न करना, केवल एक धीमी व अति भ्रामक प्रकार की आत्मिक मृत्यु लाता है। इससे बुरा और कुछ नहीं, एक ऐसे व्यक्ति को देखना जो सोचता है कि वह आत्मिक रुप से जीवित है, पर है वास्तव में मृत। सबसे भयंकर प्रकार की मृत्यु है, मरना और न पहचानना कि आपकी वास्तविकता, धार्मिक क्रियाकलाप रीति – रिवाजों में बदल गई है।

इसी प्रकार से, अनेकों बार, मैनें मसीहियों को देखा है, जब वे गीत या स्तुति में परमेश्वर की आराधना करते हैं तो हिलते हैं, फड़कते हैं, नाचते व चिल्लाते हैं। ऐसा समय रहा होगा, जब परमेश्वर ने उनमें ऐसे सामर्थी ढंग से कार्य किया, कि वे स्थिर खड़े न रह सकें और वे हिले या

नाचे या कुछ भी किया होगा। पर अब, यह एक धार्मिक क्रिया अथवा परम्परा बन गया, जो उनके पहले के अनुभव से आया। जब परमेश्वर इसका देने वाला होता है, या इसके पीछे की शक्ति है, तब यह खूबसूरत है। परन्तु यदि यह केवल एक धार्मिक प्रथा या क्रिया – एक रीति है, यह पहली वास्तविकता का अवशेष है। इसमें भक्ति का भेष तो है, पर उसकी शक्ति का इन्कार किया जाता है (2 तिमु. 3:5)

जब आपका तेल ताजा है, उसमें एक सुन्दर सुवासित सुगंध है। पर बासे, सड़े हुए तेल की गंध से अधिक अरुचिकर और कुछ नहीं। क्या आपने कभी सड़ा हुआ जैतून का तेल सूँघा है? वह घृणास्पद है।

जैसे स्वाभाविक रुप से तेल अच्छी गंध दे सकता है, वैसे ही आत्मिक रुप में भी। आत्मिक सुगंध निश्चित रुप से परमेश्वर के लोगों के साथ होती है। यदि उनके जीवन आत्मा के ताजे तेल से भरपूर होते हैं आप एक मधुर सुगंध महसूस करेंगे। जब तेल गतिहीन है और शरीर हावी है, एक सड़ी हुई गंध आती है।

रुपान्तरित करने वाला तेल

1 शमुएल 10 में, आप शमुएल द्वारा तेल से शाऊल का अभिषेक करने का वर्णन पाते हैं। शाऊल रुपान्तरित हो जाता है। ''तब यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से उतरेगा, और तू उनके साथ होकर नबूवत करने लगेगा, और तू परिवर्तित होकर और ही मनुष्य हो जायेगा।'' पद 6 कहता है। अभिषेक आपको एक भिन्न व्यक्ति में बदल देता है। देश भर में आश्चर्यकर्म सभाओं में मैनें बड़े सामर्थ ढंग से पाया कि आप निर्भीक व मजबूत हो जाते हैं। आपका मस्तिष्क स्पष्ट हो जाता है। आपकी आत्मा संवेदनशील हो जाती है। अपने चहुं ओर के अदृश्य संसार के लिये आप जागरुक हो जाते हैं।

जी हाँ, 6 से 6 पदों के अनुसार, शाऊल का अभिषेक हुआ और वह एक दूसरा ही व्यक्ति बन गया। परमेश्वर ने उसे हजारों पलिश्तियों को मारने के लिये प्रयोग किया। वह इस्त्राएल पर राजा बन गया।

पर, दुर्भाग्यवश, उसमें कमियाँ व छिद्र उत्पन्न हो गये। दूसरा शमुएल 1:21 बताता है :

हे गिलबो पहाड़ो,
तुम पर न ओस पड़े, और न वर्षा हो,
और न भेंट के योग्य उपजवाले खेत पाए जाएं।
क्योंकि वहाँ शूरवीर की ढ़ालें अशुद्ध हो गईं ,
और शाऊल की ढ़ाल बिना तेल लगाए रह गई!

योद्धाओं के अपने अस्त्र – शस्त्रों की देख भाल करने के विशेष ढंग हैं। उदाहरण के लिये, उनकी चमड़े की बनी युद्ध की ढ़ालों को तेल मला जाता था कि वह संरक्षित रहें। ''तेल मलना'' अभिषेक का संकेत है, क्योंकि जब हमारे जीवन पवित्र आत्मा के अभिषेक से मले जाते हैं, वे परमेश्वर के राज्य के लिये उपयोगी हो जाते हैं। लेकिन, शाऊल ऐसा हो गया, ''जैसे उसका तेल से अभिषेक न हुआ हो।'' उसने पाप के कारण उसे खो दिया।

पहला शमुएल 3:11 – 15 शाऊल और उसकी सेना का पलिश्तियों से युद्ध का वर्णन करता है। शमुएल, न्यायी व नबी, ने इस्त्राएल के युद्ध में जाने से पहले, खुद ही कुछ विशेष बली चढ़ाने का वादा किया था (10:2)। जब आशानुसार वह वहाँ नहीं पहुँचा, शाऊल ने मूर्खता से सोचा कि वह पलिश्तियों के विरुद्ध इस्त्राएलियों के जीतने के मौके को दृढ़ कर सकता है तथा स्वयं होम बली चढ़ा दिया। इस अनाज्ञाकारिता से, शाऊल ने परमेश्वर प्रदत्त, राजा व नबी के अधिकारों के मूलभूत मानदंडो का उल्लंघन किया। उसने पाप किया और परमेश्वर ने उसको ऐसे जाना, जैसे कभी उसका अभिषेक हुआ ही नहीं।

राजसी अभिषेक की सामर्थ व निकटता को जानने के बाद, जिसके विषय में मैंने पहले लिखा, यदि आप उसे खो दें, आप अपनी रक्षा की ढ़ाल, ओस, परमेश्वर की आशीष की वर्षा को भी खो देंगें।

इस अनाज्ञाकारिता के पश्चात, शाऊल ने बिना अभिषेक के पलिश्तियों से युद्ध किया और गम्भीर रुप से हराया गया। परमेश्वर ने

उसके कार्य को विद्रोह कहा, और इसे ओझासिद्धि के पाप के समान ठहराया। वह परमेश्वर के समक्ष घ्रणित था।

इसके अलावा, जब शाऊल ने राजसी अभिषेक खो दिया, एक दुष्टआत्मा ने आकर उस पर अधिकार कर लिया। राजसी अभिषेक ने उसे शैतान पर अधिकार दिया था, पर जब उसने अभिषेक खो दिया, भूमिकाएं बदल गई और शैतान का उस पर प्रभुत्व हो गया। यहूदा ने भी, आप स्मरण करेंगे, राजसी अभिषेक खो दिया। यीशु ने उसे तथा अन्य ग्यारह से कहा था, ''जाओ, मैं तुम्हें सामर्थ देता हूँ। शैतानों को निकालो।'' जब यहूदा ने अभिषेक को खो दिया, शैतान उसमें समा गया और उसने यीशु के साथ विश्वासघात किया।

आगे बढ़ते जाईय

एक बार जब उद्धार का शुद्ध करने वाला तेल आपके ऊपर उंडेला गया तथा आपने कोढ़ी के अभिषेक का अनुभव कर लिया, तो रुकिये मत। बढ़ते जाईये और याजक वाले अभिषेक का ताजा तेल प्रतिदिन अपने ऊपर उंडेलने दीजिये, कि आप पवित्र आत्मा की अन्तरंग संगति व सहभागिता में आ सकें। उसकी उपस्थिति में समय बिताइये तथा उसे मौका दीजिये कि वह आपको स्वयं से तथा अपनी सामर्थ से भर दे। तब आप एक ऊँचे पठार की ओर बढ़ेंगे और राजसी अभिषेक में प्रविष्ट होंगे, जिसके साथ मिलेगी, सामर्थ शैतान के ऊपर।

अभिषेक की सावधानी पूर्वक रक्षा कीजिये। ''जिसे अधिक दिया गया है, उससे अधिक लिया जाएगा।'' (लूका 12:48)

स्मरण रखिये, आप बीते कल के तेल पर जीवित रहने की चेष्टा करके, पूर्व महिमा पर काम नहीं चला सकते। परमेश्वर का भंडार कभी नहीं सूखता। अतएव, स्वयं गतिहीन तथा संन्तुष्ट मत हो जाईये। पवित्र आत्मा के ''तेल'' को अपने ऊपर उंडेले जाने के लिये आमंत्रित कीजिये,

आपको नया करते हुए, तरोताजा करते हुए। इब्रानी में अभिषेक शब्द है 'मशाच' जिसका अर्थ है ''मलना'' यूनानी शब्द है ''क्रिस्म'' जिसका अर्थ है ''लेप लगाना''। क्या यह अद्‌भुत नहीं है? मैं चाहता हूँ

कि अभिषेक मुझ पर उंडेला जाये तथा मला जाये – मेरे ऊपर ही नहीं मेरे भीतर भी। मुझे वह ठोस अभिषेक चाहिये।

भेड़ व तेल

पहले मैंने, ''तेल मले जाने'' की बात शाऊल के संदर्भ में तथा उसके अभिषेक खो दिये जाने के बारे में कही थी। ''मलने'' का पवित्र शास्त्र में एक और महत्व है। भजन संहिता 23, जो बाइबल का सर्वाधिक प्रिय अंश है, में दाऊद कहता है, ''तूने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमंड रहा है।''

चरवाहे व उसकी भेड़ों की कल्पना को मन में रख कर हमें यह जानने में सहायता मिलती है कि मध्य – पूर्व में जहाँ मैं पला बढ़ा, चरवाहे नियमित रुप से अपनी भेंड़ों का अभिषेक जैतून के तेल से करते हैं, ताकि कीड़े – मकोड़ों को उन्हे परेशान करने से दूर रख सकें।

पवित्र देश में कई प्रकार के कीड़े हैं और भेड़ों को आराम देने का यही एक रास्ता है कि उन पर तेल मला जाये।

आपके व मेरे लिये यह सांकेतिक है, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा हम शैतानों द्वारा परेशान किये जाने से बचाये जाते हैं। यह आगे और इस बात को प्रमाणित करता है कि मसीहियों में, परिवर्तित होने के बाद, पवित्र आत्मा रहता है न कि दुष्टआत्माएं। उनके पास अभिषेक की सुरक्षा व शाँति होती है।

अभिषेक को रखने व बढ़ाने की तीन कुंन्जियाँ हैं। इनमें भी ''मले जाने'' का विचार पाया जाता है। तीनो कुन्जियाँ क्रमानुसार यह हैं :–

- प्रथम, परमेश्वर हमेशा देखता रहता है कि जो आपके पास है उसकी आप रक्षा कर रहे हैं या नही। दाऊद ने जब बतशेबा के साथ पाप किया, उसके बाद दाऊद को दी गई यहोवा की चेतावनी पर विचार कीजिये, ''मैनें तेरे स्वामी का भवन तुझे दिया, और तेरे स्वामी की पत्नियाँ तेरे भोग के लिये दीं, और मैनें इस्त्राएल और यहूदा का घराना तुझे दिया, और यदि यह थोड़ा था तो मैं तुझे और भी बहुत कुछ देने वाला था। तूने यहोवा की आज्ञा

को तुच्छ जानकर क्यों वह काम किया जो उसकी दृष्टि में बुरा है?'' (2 शमुएल 12:8 – 9) हाँ, जैसा हम भजन संहिता 51 में पढ़ते हैं, दाऊद ने पश्चाताप किया और वह परमेश्वर की नवीन उपस्थिति व सामर्थ से आशीषित किया गया।

परमेश्वर आपको और दे, इससे पहले वह देखता है कि जो उसने आपको दिया हुआ है उसके साथ आपने क्या किया है।

- दूसरी कुंन्जी लूका 24:28 – 31 में पाई जाती है। यहाँ दो व्यक्तियों का वर्णन है जिन पर पुनरुत्थित मसीह इम्माउस के मार्ग पर प्रगट हुआ। जब वे गाँव के पास पहुँचे, तो यीशु ने ऐसा दर्शाया कि वह आगे जाना चाहता है। ''परन्तु उन्होने उसे यह कहकर रोका कि ''हमारे साथ रह'' पवित्र शास्त्र कहता है। बाद में उसने रोटी तोड़ते समय स्वयं को उन पर प्रगट किया। यदि उन्होंने उसे न रोका होता, तो वह एक प्रकाशन पाने से चूक जाते।

  अनेक लोग यीशु का प्रकाशन पाने से वंचित रह जाते हैं क्योंकि वे उसे रोकते नहीं, वे उसे अपने साथ रहने को नहीं कहते। वे बड़ी आसानी से छोड़ देते है। वह प्रार्थना में उनके पास आता है तथा जब लगता है उपस्थिति जा रही है वह गलती से सोचते हैं कि परमेश्वर ने उनके साथ संगति समाप्त कर दी है। अगली बार जब यह आपके साथ हो, कुछ देर और ठहरिये तथा परमेश्वर को रोकिये कि अभी न जाये। उसी बिन्दू से आगे, आपको एक प्रकाशन मिलेगा।
- तीसरा, आपके सम्बन्ध महत्वपूर्ण हैं। अभिषिक्त लोगों के साथ मिलना – जुलना रखिये क्योंकि उनसे आप पर भी प्रभाव आयेगा। वे आपको प्रभावित करेंगे और उसके आश्चर्यजनक परिणाम होंगे।

आपको याद है जब समाज से बहिष्कृत लोंगों का एक दल दाऊद से मिल गया (1 शमुएल 22:2)? अपने संम्बन्ध के कारण वे भी पराक्रमी मनुष्य तथा विशाल घात करने वाले बन गये (2 शमुएल 8:18 – 20) दाऊद के जीवन का अभिषेक उनके जीवन पर भी आ गया। यही बात

शिष्यों के साथ हुई। प्रभु यीशु के साथ संबंध रखने के कारण उन्हे भी अभिषेक मिला (प्रेरितों के काम 4:13)। क्या यह आश्चर्यजनक नही है कि यदि आप परमेश्वर के पुरुषों व स्त्रियों के साथ समय बिताएं तो क्या कुछ हो सकता है?

जब आप इसे पढ़ रहें हैं, क्या आप आत्मा की उपस्थिति की महिमा तथा अभिषेक को जानने की तीव्र इच्छा कर रहे हैं, जो अपनी सामर्थ सहित आती है? तो, अभी उसे अपने जीवन में आमंत्रित करिये। यद्यपि आप जानते हैं। कि आप बचे हुए हैं और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाये हुए हैं, कहिये, ''पवित्र आत्मा, मुझे स्वयं को खुद से खाली करने में मेरी सहायता करिये, ताकि मैं आपसे भर सकूँ। मुझे अपनी उपस्थिति से भरिये, जिससे मैं आपकी सामर्थ को जान सकूँ .... जिससे मैं आपकी महिमा को जान सकूँ ...... कि मैं आपके आत्मा के अनमोल अभिषेक को जान सकूँ।''

जब आप उसकी उपस्थिति, उसके व्यक्तित्व, उसकी महिमा को जानना सीख जायेगें, जब वह आपको भर देगा, तब उसकी सामर्थ आपके जीवन को भर देगी तथा उसके आत्मा का अभिषेक आपका होगा।

अध्याय – 16

दोगुना भाग पाना

अपने जीवन पर पवित्र आत्मा के अभिषेक को ही नहीं, पर उस अभिषेक के दोगुने भाग को पाकर आपको कैसा लगेगा? विचार कीजियेः आपके जीवन के हर दिन आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ का दोगुना हिस्सा।

एलिय्याह व एलीशा की कहानी एक उत्तेजनापूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है कि कैसे सामर्थ का दोगुना भाग हमारा हो सकता है। एलीशा के हृदय की सबसे बड़ी लालसा थी, कि वह एलिय्याह के अभिषेक का दोगुना भाग पाये, और उसने पाया। हम उसके आज्ञाकारिता के कदमों से सीख सकते हैं, जिससे उसे यह अद्भुत वरदान मिला।

चलिये, हम आरम्भ करते हैं यह पहचानने से, कि पुराने नियम का एलिय्याह, प्रभु यीशु मसीह का एक प्रकार है तथा एलीशा – मैं और आप का एक प्रकार हैं। मैंने पाया है कि पुराने नियम में जो भी है, वह एक छाया है, जबकि आपने व मैनें जो भी नये नियम के द्वारा पाया है, वह छाया की वास्तविकता है। मूसा, एलिय्याह, एलीशा तथा बाकि भविष्यद्वक्ता, एक प्रकार की छाया की तरह जिये, कि हम देख सकें कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है कि हम करें, व हम किस प्रकार जियें।

जब आप बाइबल को पढ़ें याद रखिये कि यीशु मसीह परमेश्वर के वचन की वास्तविकता है और उसके पृथ्वी पर आने से पूर्व जो भविष्यद्वक्ता थे, उसकी वास्तविकता की छाया थे। आनेवाली वास्तविकता को भविष्यद्वक्ता केवल दर्शाते थे। इसी बात को कहने का दूसरा ढंग है कि पुराना नियम जबकि पूर्णतः सही है, सत्य की एक छाया है। सत्य मसीह है। सो जब आप पुराने नियम को पढ़ें, आपको याद रखना चाहिये कि आप वास्तविक सत्य की परछांई को देख रहे हैं, जो उस समय स्वर्ग में रह रहा था। जब वह धरती पर आया, वह – जो पुरानी वाचा के अन्तर्गत छाया द्वारा बोला करता था तब पृथ्वी पर वास्तविकता था। पर वह जो कि वास्तविकता है, सदा से अस्तित्व में था।

मैं कायल हूँ कि बाइबल में प्रत्येक वर्णन व पुराना व नया नियम – महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह यीशु को दर्शाता है। निरर्थक वर्णन उसमें नहीं है।

अतएव मेरा विश्वास है कि यह हमारे लिये अवास्तविक नही है कि हम दोगुने भाग को चाहें, जिसकी लालसा एलीशा ने की।

तैय्यारी करना

पहला राजा 19:16 में हम पाते हैं कि परमेश्वर एलिय्याह को निर्देश देता हैः "तू निमशी के पुत्र येहू का इस्त्राएल का राजा होने के लिये अभिषेक करेगा और आबेल – महोला के शापात के पुत्र एलीशा का अपने स्थान पर भविष्यद्वक्ता होने के लिये अभिषेक करेगा"

आगे वर्णन इस प्रकार बताता है कि एलिय्याह निर्देश का पालन करने को जाता है और एलीशा को बारह जोड़ी बैल या चौबीस बैलों के साथ हल जोतते हुए पाता है। इसका अर्थ है शापात, उसका पिता अत्यन्त धनवान होगा, क्योंकि उस समय के कुछ धनी व्यक्तियों के पास केवल छः बैल थे। अतः इस नवयुवक के साथ अपनी पहली भेंट में उसे मैला पसीने से तर और घरेलू श्रम करते हुए पाते हैं ऐसी स्थितियां, जिनकी अपेक्षा हम भविष्यद्वक्ताओं के लिये नहीं करते। पर परमेश्वर जानता था एलिय्याह की सेवकाई को पूर्ण करने के लिये वह किसे चाहता है।

बाइबल कहती है कि एलिय्याह, "उसके पास से गुजरा अपनी चादर उस पर डाल दी" जिसका अर्थ था कि एलिशा उसका उत्तराधिकारी था। एलीशा बिना झिझके हुए और प्रत्यक्ष में जाने को उत्सुक, एलिय्याह के पीछे दौड़ा और कहा, "मेहरबानी से मुझे अपने पिता और माता को चूम लेने दे तब मैं तेरे पीछे आऊंगा" वह अपने माता – पिता के लिये अत्यन्त आदर भाव को दर्शाता है।

पर तब "एलीशा गया और बैलों की एक जोड़ी को लेकर मारा और हल की लकड़ी का प्रयोग करते हुए उसे पकाया तथा लोगों को

खाने को दिया व लोगों ने खाया। तब वह उठा और एलिय्याह के पीछे हो लिया व उसकी सेवा की।''

इस कार्य का क्या अर्थ है? वह उसके बीते जीवन को त्यागने का चिन्ह है। उसने अपने पूर्ण जीवन को छोड़ दिया व भुला दिया। परमेश्वर आपको कभी दोगुना भाग प्राप्ति की स्थिति तक नहीं लाएगा, यदि आप बीते कल के भार अपने साथ लेकर चल रहे हैं, जिन्हे भुला देना चाहिये। पौलुस ने इसके लिये ऐसे कहा, ''जो बातें पीछे रह गई हैं उन्हे भुलाते हुए, आगे की बातों की ओर बढ़ता जाऊँ।'' (फिलिप्पियों 3:13)। जब आप अपने बीते कल को छोड़ते हैं केवल तभी आप आनेवाले कल की प्रतिज्ञाओं को पाते हैं।

परमेश्वर स्वाभाविक गुणों वाले व्यक्ति को नहीं चुन रहा था, परन्तु एक विश्वास वाले व्यक्ति को, जो भविष्यद्वक्ता का सेवक बनने को तैय्यार था। क्या आप आज अपने जीवन के साथ यही करने को तैय्यार हैं? दोगुने भाग के अभिषेक की ओर यह पहला कदम है।

अब एक यात्रा

2 राजा 2 में, हम पाते हैं कि एलिय्याह अनेक स्थानो की यात्रा करता है, जिन्हे मैं महत्वपूर्ण जानकारी देनेवाला पाता हूँ कि हमे कहाँ – कहाँ यीशु मसीह के साथ चलना चाहिये।

पहले हम उन्हे गिलगाल में पाते हैं, जहाँ अब दिन में बादल का तथा रात्रि में अग्नि का खम्बा नहीं है। यह उस स्थान को दर्शाता है जहाँ बहुत धार्मिक क्रिया कलाप हैं – बिना आलौकिक सामर्थ के यह वह स्थान जहाँ उसे मिस्त्र को भूलना था – ''आज के दिन मैनें तुमसे मिस्त्र का अपमान दूर किया है, अतः उस स्थान का नाम आज तक गिलगाल कहा जाता है'' (यहोशू 5:9)

यह वह स्थान है जहाँ आप पुराना जीवन भूलते हैं, यह कहते हुए कि, अब मैं नये सिरे से जन्म ले चुका हूँ। मेरे पाप धाए गये हैं। मैं अद्भुत समय बिता रहा हूँ।'' परन्तु दस से बारह पद कहते हैं कि गिलगाल में फसह मनाने के बाद, ''उन्होने उस देश की उपज में से

खाया'' आप देखिये, इस्त्राएल की संन्तान परमेश्वर पर निर्भर थे, पहले मिस्त्र से अपने छुटकारे के लिये और उसके बाद अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिये। हर दिन के लिये परमेश्वर का आश्चर्यजनक प्रबन्ध अविश्वसनीय था। प्रति सुबह जब वे उठते उन्हे मन्ना भूमि पर पड़ा मिलता, जिसे वे उस दिन के लिये एकत्रित कर लेते – हर दिन ताजा। फिर भी, वे बाद में उसे सामान्य रुप से लेने लगे और यहाँ तक कि परमेश्वर के आश्चर्यजनक प्रेमपूर्ण प्रबन्ध के बावजूद भी पुरानी वस्तु के लिये शिकायत करने लगे। जब अवसर मिला, उन्होने पुराना अनाज खाया और अगले ही दिन मन्ना बन्द हो गया। यह हमारे लिये क्या अर्थ रखता है? आपके व मेरे अनुभव में गिलगाल वह स्थान है जहाँ हम अपने उद्धार के अनुभव के बाद आते हैं जो मिस्त्र के छुटकारे का सांकेतिक है। हम अपने पाप का जीवन छोड़, अपने छुड़ाने वाले की फैली हुई बाहों में दौड़ कर आते हैं, प्रसन्न हो उस स्थान से निकलकर, जिसने हमें इतने लम्बे समय तक बंधुवा रखा। पर गिलगाल में ही हम अपने मिस्त्र की भयानकता को अतिशीघ्र भूल जाते हैं, जहाँ से निकलने के लिये हमें आलौकिक सहायता की आवश्यकता हुई थी। जब हम आराम दायक हो जाते हैं और ऐसा प्रतीत होता हैं कि हम परमेश्वर पर निर्भर नहीं हैं हमें आलौकिक सहायता की आवश्यकता दिखाई नहीं देती। हम सोचते हैं कि अपने आप सब कुछ कर सकते हैं। अतः मन्ना बन्द हो जाता है, साथ ही परमेश्वर की महिमा भी समाप्त हो जाती है जो बादल व अग्नि के खम्बे में प्रगट हुई थी।

एलिय्याह ओर एलीशा के गिलगाल में ठहरने से फिर, मैं क्या साराँश निकालूं? जैसा मैनें कहा गिलगाल दर्शाता है, धर्म – बिना सामर्थ के आरम्भ में हम में से कोई भी इसकी इच्छा नहीं करता, पर हम में से अनेक वहीं पहुँच जाते है। और हममें से कई गिलगाल में इतने आराम दायक हो जाते हैं, कि हम उसे कभी नहीं छोड़ते। हम नया जन्म पा कर प्रसन्न हैं, ''गिलगाल के प्रथम चर्च'' में धार्मिक क्रिया कलाप से सन्तुष्ट हैं, आत्मिक मध्यमपन से प्रसन्न हैं, परमेश्वर के अभिषेक के दोगुने भाग के लिये, कभी भी वृद्धि नहीं करते या परिपक्व नहीं होते। मैने बहुतेरे लोगों

से बात की जो इस प्रकार की बातें कहते हैं ''काश, मैं वैसा अनुभव कर सकता जैसा मैनें किया जब मैं बचाया गया, अथवा काश मैं ऐसा महसूस कर सकता, जैसा मैं महसूस करता था जब मैं आत्मा से भरा हुआ था।''

इस सबके बावजूद भी एक सॉंत्वना देने वाला विचार है कि परमेश्वर आपको एक उद्देश्य हेतु गिलगाल लेकर जाता है, कि आपको दर्शा सके कि मसीही जीवन कैसे जिया जाना चाहिये, वह आलौकिक के बिना जीनेवाला जीवन नहीं है।

मित्रो, हमें गिलगाल से आगे चलना है। हमारा दृष्टिकोण एलीशा के समान होना चाहिये, ''मैं यहाँ नहीं रुकने वाला। मैं यहाँ से आगे दोगुना भाग पाने के लिये जा रहा हूँ।

बेतेल की ओर

गिलगाल के बाद एलिय्याह व एलीशा बेतेल को गये (2राजा 2:2), जिसे मैं बड़े – बड़े निर्णयों का स्थान समझता हूँ। एक स्थान जहाँ आप परमेश्वर के आगे अपना समर्पण कर सकते है व स्वयं को उसके अधीन कर सकते हैं। अपनी लालसाओं के लिये मरने का स्थान। इसके बारे में सोचिये। बेतेल का जिक्र सम्पूर्ण पुरानी वाचा में किया गया है। यह स्थान जहाँ इब्रहीम ने अपना तम्बू गाड़ा और परमेश्वर के लिये जीने का निर्णय किया। यह स्थान था जहाँ उसके पोते याकूब ने, परमेश्वर से कहा कि वह उसके पीछे चलेगा व उसकी सेवा करेगा। यह स्थान है जहाँ वह वापस लौटा, परमेश्वर से युद्ध करने को, तथा याकूब से इस्त्राएल में रुपान्तरित होने को। यह वह स्थान था, जहाँ शमुएल ने सबसे पहले परमेश्वर की आवाज सुनी। यह वह स्थान था जहाँ शाऊल ने वचन का तिरस्कार किया और अपने राज्य समेत सब कुछ खो दिया। कुछ लोग जो बेतेल पर पहुँचते हैं, पराक्रमी रुप से सफल होते हैं, जबकि कुछ अन्य असफल।

पर विचित्र बात है, एक बार आप बेतेल पहुँच गये आप समर्पित व अधीन हो सकते हैं, पर आप अपने दोगुने भाग का अभिषेक वहाँ नहीं पाएंगें।

बेतेल में, एलिय्याह ने एलीशा से कहा, ''यहीं ठहर, क्योंकि यहोवा मुझे यरीहो को भेजता है।'' पर एलीशा तुरन्त बोला, ''यहोवा के जीवन की सौगन्ध और तेरे जीवन की सौगन्ध, मैं तुझे नही छोड़ने का।'' ''नहीं हो सकता'', एलीशा ने कहा, तू मेरे बिना नहीं जाएगा। दोगुना अभिषेक यहाँ पर नहीं है। वह कहीं और है और मैं उसे पाकर ही रहूँगा।''

आप बेतेल में रुकने का निर्णय कर सकते हैं या सम्भवतः गिलगाल के मध्यमपन पर वापस जा सकते हैं। अथवा आगे बढ़कर परमेश्वर की आशीषों का आनन्द ले सकते हैं।

यरीहो, कार्य करने का स्थान

अगला स्थान आता है द्वन्द युद्ध का स्थान – यरीहो। यरीहो के निकट ही वह स्थान था, जहाँ प्रभु यीशु ने शैतान का सामना किया, जब चालीस दिन व रात उसकी परीक्षा हुई। यह वही स्थान है जहाँ यहोशू के समय पर दीवारें भरभरा कर गिर गई।

जब आप यरीहो में पहुँचते हैं, शैतान आपका विरोध करेगा, आपके धन, आपके शरीर, आपके मस्तिष्क, आपके परिवार पर आक्रमण करेगा। यह वह स्थान है जहाँ आप शैतानों से व नर्क की समस्त शक्तियों से युद्ध करते हैं। साथ ही यहीं पर आप सेना के सेनापति को पाएंगे। आप निश्चित रुप से जानिये कि जब आप अहम का त्याग कर, परमेश्वर के पीछे चलने का निर्णय करते हैं, शैतान आपका विरोध करने को खड़ा हो जायेगा। पर सेना का सेनापति अपनी तलवार के साथ आपकी सहायता करने को वहाँ पर तैय्यार मिलेगा। आप निश्चय जानिये कि आपकी विजय बस होने वाली है, क्योंकि द्वन्द युद्ध में से एक ही चमत्कार का जन्म होता है।

अपनी यात्रा में विलम्ब न करें

मेरे अपने यरीहो में, शैतान ने अस्सी के दशक में, मेरी सेवकाई से मेरा ध्यान दूसरी ओर खींचने की चेष्टा की।

मुझे याद है सन्तुष्टि, एकसरसता व बोरियत के गड्ढे जो बिलकुल मेरे निकट थे। भयानक खतरा था कि कहीं मैं अपने अभिषेक को हल्का न जानूं। और इस सारे समय दोगुने भाग का अभिषेक बस अगले मोड़ पर ही था। जो कि हमेशा होता है। मुझे केवल इतना ही करना था कि अपनी आँखें खोल कर ध्यान भटकाने के विरुद्ध आत्मिक द्वन्द में विजय को हासिल करते हुए सेना के सेनापति को देखूं।

सन्देश बिलकुल साफ है; ''ध्यान मग्न'' होना, आपकी आत्मा का शत्रु है। उदाहरणार्थ, एक आश्चर्यकर्म सभा से पूर्व यह नियम है कि कोई मुझ से बात न करे। मैं लोगों से कह देता हूँ , ''जो भी हो रहा है मुझे कुछ भी न बताना।'' मैं किसी भी बात के लिये कुछ भी नहीं जानना चाहता। यदि मैं लोगों की आवश्यकताओं के बारे में सोचने लगूं, मेरी भावनाएं सब बंध जाती हैं और मुझे ध्यान केन्द्रित करने व स्पष्ट मस्तिष्क रखने में कठिनाई होती है। मुझे अपने हृदय व मस्तिष्क को परमेश्वर और केवल उसी पर रखाना है। मैं शैतान को अपना ध्यान भंग करने नहीं दे सकता और न ही आप करने दें। आप अपने ध्यानभंग होने के अवसरों पर याद रखिये कि परमेश्वर आपको विजय की ओर अग्रसर होने की सामर्थ देता है।

यरदन की ओर

और फिर यरदन पर क्या होता है, जो अगला पड़ाव है? परमेश्वर आपकी आँखें खोलता है और आप आत्मिक दृष्टि पाते हैं। वह यरदन पर ही था जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने पवित्र आत्मा को कबूतर के रुप में उतरते हुए देखा था। वह यरदन पर ही था जब यीशु ने अपनी सेवकाई आरम्भ की थी।

यरदन, वह स्थान है जहाँ आप स्वाभाविक से आगे, आलौकिक क्षेत्र में देखना आरम्भ करते हैं। यह वह स्थान है, जहाँ एलीशा को उसका

दोगुने भाग वाला अभिषेक प्राप्त हुआ। पवित्र शास्त्र का यह अद्‌भुत अंश देखिये :

तब एलिय्याह ने अपनी चादर पकड़कर ऐंठ ली और जल पर मारी, तब वह इधर – उधर दो भाग हो गया और वे दोनो स्थल ही स्थल पार उतर गयें। उनके पार पहुँचने पर एलिय्याह ने एलीशा से कहा, उससे पहले कि मैं तेरे पास से उठा लिया जाऊँ, जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिये करुं वह माँग, एलीशा ने कहा, तुझ में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए। एलिय्याह ने कहा, तूने कठिन बात माँगी है, तौभी यदि तू मुझें उठा लिये जाने के बाद भी देखने पाए, तो तेरे लिये ऐसा ही होगा, नहीं तो न होगा। वे चलते चलते बातें कर रहे थे, कि अचानक एक अग्निमय रथ अग्निमय घाड़ों ने उनको अलग – अलग कर दिया और एलिय्याह बवंडर में होकर स्वर्ग में चढ़ गया। और उसे एलीशा देखता और पुकारता रहा, हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्त्राएल से रथ और सवारो जब वह उसको फिर न देख पड़ा, तब उसने अपने वस्त्र पकड़े और फाड़ कर दो भाग कर दिये। फिर उसने एलिय्याह की चादर उठाई जो उस पर से गिरी थी, और वह लौट गया, और यरदन की तीर पर खड़ा हुआ। (2 राजा 2:8 – 13)

यरदन – जो आत्मिक दर्शन का स्थान है, वहाँ पर क्या होता है, उसकी भव्य छाया, इन पवित्र वचनों में छिपी हुई है। एलीशा दो कार्य करता है। वह अपने पुराने वस्त्रों को फाड़ डालता है, यह दर्शाता है पुराने मनुष्यत्व व बीते जीवन से मुक्त होना। तब वह गिरी हुई चादर को उठा लेता है और जान जाता है कि उसका दो गुना भाग आ गया है। जब नया आ रहा होता है, बीते हुए को अलविदा कहिये। पुराने को त्याग दीजिये ताकि परमेश्वर आपके जीवन में नया कार्य कर सके।

आप तब तक अपने दोगुने भाग के अभिषेक को प्राप्त नहीं कर सकते, जब तक आप परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को न जाने और उसमें विश्वास द्वारा उन्हे प्राप्त करने की आशा न रखें। इब्राहीम को जो पुत्र देने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी, उसके लिये उसे परमेश्वर पर भरोसा रखना पड़ा। अपनी सामर्थ पर भरोसा रखने या अपने कार्यों पर भरोसा

रखने से प्रतिज्ञा किया हुआ पुत्र नही मिला। इसहाक को पाने से पूर्व उसको उसे विश्वास द्वारा देखना पड़ा। जब आप विश्वास की आँखों द्वारा देखते हैं तब प्रतिज्ञा सामर्थ के साथ आपके लिये पूर्ण होना आरम्भ होती है। लूका 18:35 – 43 बरतिमाई – एक अन्धे व्यक्ति का वर्णन करता है, जो एक वस्त्र पहने हुए था जो इब्रानी रिवाज के अनुसार अन्धे व्यक्ति पहना करते थे। कोई भी यदि ऐसे वस्त्र पहने होता था, तो जान लिया जाता था कि वह अन्धा व असहाय है, जिसे जीवन की मुलभूत बातों में सहायता की आवश्यकता है जैसे खाना खिलाना व देख भाल करना। जब प्रभु यीशु मसीह ने उसे पुकारते सुना उसने कहा, ''उसे मेरे पास लाओ।'' तुरन्त बरतिमाई ने अपना वस्त्र फेंक दिया। इससे पहले कि उसे अपना आश्चर्यकर्म मिलता, उसने परमेश्वर पर अपनी सम्पूर्ण निर्भरता दर्शाते हुए अपना वस्त्र फेंक दिया, उसने नया पाने के लिये पुराने को जाने दिया।

जब मैं विश्वास द्वारा स्वयं को परमेश्वर के बालक के रुप में देखता हूँ मैं आगे को सिर झुकाये व आँखें नीची करके बुदबुदाते हुए नहीं चलता, ''हे परमेश्वर मैं आपकी उपस्थिति में चलने के लिये कितना अयोग्य हूँ।'' मैं महा पवित्र स्थान में जाता हूँ। दोष भावना के साथ नहीं परन्तु दोषी ठहराये जाने से मुक्त होकर। अन्धकार, जिसने मुझे पहले जकड़ा हुआ था, अब मेरी आत्मिक आँखों को धुंधला नहीं करता। मैं देखता हूँ। जब मैं वचन पढ़ता हूँ, मैं उस पर विश्वास करता हूँ और परमेश्वर के बालक के रुप में भीतर प्रवेश करता हूँ।

यह तरीका है जिससे आपको दोगुने भाग वाले अभिषेक तक पहुँचना है। आप गिलगाल के मध्यमपन पर रुकने वाले नहीं हैं। आप आगे बेतेल को जाएंगे आप अपने अहम के लिये मरेंगे व सदा के लिये परमेश्वर के पक्ष में निर्णय करेंगे। यरीहो : शैतान से लड़ेंगें, जो आपके विरोध में आ सकता है और आप जीतेंगे क्योंकि प्रभु यीशु आपके साथ है। यरदन पर आप स्वर्ग की प्रतिज्ञाओं को देखना आरम्भ करेंगे जो आपकी हैं और आप उन्हे सराहेंगे। आप परमेश्वर के लिये एक शक्ति होंगे जो स्वर्ग व नरक को हिला देगी।

अध्याय – 17

क्या आप मूल्य चुकाएंगे?

जैसा हमने देखा, अभिषेक का महत्व कई प्रकार से सिद्ध किया जा सकता है। परन्तु कोई भी इसे इतने अधिकारपूर्वक प्रस्तुत नहीं करता जितना कि भजनकार, जैसा कि नीचे दिये उद्धरण में हम पाते हैं। उन प्रतिज्ञाओं की ऊँचाई, गहराई और चौड़ाई पर विशेष ध्यान दीजिये, जो दाऊद से होकर मसीह तक पहुँची जो अंतिम अभिषिक्त है, जिससे आप अपना अभिषेक पाते हैं।

''मैनें अपने दास दाऊद को लेकर,
अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है।
मेरा हाथ उसके साथ बना रहेगा,
और मेरी भुजा उसे दृढ़ रखेगी।
शत्रु उसको तंग करने न पाएगा,
और न कुटिल जन उसको दुख देने पाएगा।
मैं उसके द्रोहियों को उसके साम्हने से नाश करुंगा,
और उसके बैरियों पर विपत्ति डालूंगा।
परन्तु मेरी सच्चाई और करुणा उस पर बनी रहेगी,
और मेरे नाम के द्वारा उसका सींग ऊँचा हो जाएगा।
मैं समुद्र को उसके हाथ के नीचे
और महानदों को उसके दहिने हाथ के नीचे कर दूंगा।
वह मुझे पुकारके कहेगा, कि तू मेरा पिता है,
मेरा ईश्वर और मेरी बचने की चट्टान है।
फिर मैं उसको अपना पहिलौठा,
और पृथ्वी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊंगा।
मैं अपनी करुणा उस पर सदा बनाए रहूंगा,
और मेरी वाचा उसके साथ अटल रहेगी।
मैं उसके वंश को सदा बनाए रखूंगा,
और उसकी राजगद्दी स्वर्ग के समान सर्वदा बनी रहेगी।

(भजन संहिता 89:20 –29)

यदि हमारे पास इसके अलावा और कुछ भी न होता, तो हमें इस अद्‌भुत उपहार को, जो कि हमारा है, पाने का प्रयत्न करना चाहिये। शक्ति, सुरक्षा, शत्रु पर विजय, विश्वासयोग्यता, अधिकार, सामर्थ, न समाप्त होने वाली वाचा आदि – आदि कई प्रतिज्ञाएँ हैं जो राजाओं के राजा, प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मेरी और आपकी हैं।

गंभीरता से इस बारे में साचिये

अभिषेक जिसके साथ यह प्रतिज्ञाएँ जुड़ी हैं उसके साथ एक मूल्य भी जुड़ा हुआ हैं, जैसा कि मैनें प्रथम अध्याय में लिखा और यह बहुत वास्तविक है। यदि आप मूर्खता से या बिना गंभीरता के चलेंगे तो आप बहुत कम कर पाएंगे या फिर उससे भी बुरा।

वह मूल्य है अपने अहं की पूर्णतयाः मृत्यु और यह केवल प्रार्थना में होता है। साथ ही साथ यह मृत्यु प्रतिदिन होनी चाहिये जैसा पौलुस ने लिखा (1कुरिन्थियों 15:31) मैं यह नहीं कह सकता कि ''मैं बीस वर्ष पहले मरा था।'' नहीं, शरीर को प्रतिदिन मारना चाहिये। यह एक श्रापित वस्तु है और प्रतिदिन क्रूस पर चढ़ाई जानी चाहिये।

यीशु ने बड़े सपाट ढंग से कहा ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपसे इंकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मरे पीछे होले'' (लूका 9:23) यह केवल प्रार्थना में ही हो सकता है।

आप देखिये, आपमें और मुझमें शैतान को 'न' कहने की सामर्थ नहीं है, हमारे अन्दर कोई शक्ति नहीं जो उसे अस्वीकार कर सके। सामर्थ हमारे अन्दर तभी आती है जब पवित्र आत्मा हमारे ऊपर हो। विश्वास के योद्धा गिर गये क्योंकि वे 'न' नही कर सके। उन्होने अपनी स्वयं की शक्ति का भरोसा किया।

वर्षों पहले कैथरीन कुलमन ने कहा था – ''मैं बहुत पहले मर चुकी हूँ।'' और उसे गलत समझ लिया जाता यदि आगे वह यह न कहती कि ''मैं हजार बार मरती हूँ।'' अर्थात उसने इसका निर्णय बहुत पहले लिया था परन्तु उसे यह निर्णय पुनः हर दिन करना पड़ता है।

पवित्र आत्मा की उपस्थिति के बारे में कई बातों में से यह एक बात है। यह केवल परमेश्वर के समक्ष निर्णय लेने लेने से आती, कहने से, सच्चे अर्थों में समझाते हुए और पूर्णतया अपने आपको परमेश्वर के हाथों में छोड़ने से। बेहतर होगा कि आप सावधान रहें क्योंकि वह जानता है कि हम सच कह रहें हैं अथवा नहीं।

यह जीवन भर का मामला है

परमेश्वर का अभिषेक, परमेश्वर की सामर्थ, हमारे ऊपर तब आती है, जब हम उसके साथ समय बिताते हैं और जो भी आवश्यक है वह सब करते हैं। और यह एक दिन का अनुभव नहीं परन्तु जीवन भर का है। एक ऐसा अनुभव जिसमें आपको अपना सब कुछ देना पड़ता है। मैं विश्वास नहीं करता कि मैं सौ प्रतिशत इस स्तर तक पहुँच चुका हूँ, यद्यपि वास्तविकता में मैं यही चाहता हूँ। और परमेश्वर ने मुझे प्रयोग किया विशेषरुप से हाल ही के वर्षों में और वह आपके साथ भी यही करेगा।

मैं अपने मामले में जानता हूँ कि मैं पूर्णतया संसारिक वस्तुओं की अभिलाषा छोड़ चुका हूँ। मुझे संसार में जरा भी रुचि नहीं है। मेरी संसारिक इच्छाएँ मर चुकी हैं।

ऐसे आलोचनात्मक युग में इस प्रकार की बातें कहना, और इस प्रकार कहना कि वह सत्य लगे, काफी कठिन है परन्तु पवित्र आत्मा की उपस्थिति और अभिषेक के कारण मैं परमेश्वर के साथ साथ चलने में और उसका कार्य उसका कार्य करने में पूरी रीति से लिप्त हूँ। अक्षरशः, वही है जो मेरे पास है। यदि वह कहे, ''बैनी, चीन चले जाओ'' मैं सब कुछ छोड़ कर चला जाऊँगा। अब मुझ में कोई विरोध नहीं रह गया। भौतिक वस्तुओं की इच्छा न होने का यह अर्थ नहीं है कि शैतान ने मुझे लुभाना छोड़ दिया है। स्वयं के लिये प्रतिदिन मरना जो कि बहुधा काफी कठिन होता है, एक ऐसा युद्ध है जो अभी भी प्रतिदिन लड़ना पड़ता है।

एक स्पष्ट सवाल

हाल ही में एक अच्छे मित्र ने मुझसे एक प्रश्न पूछा, जिसने मुझे सोचने पर विवश किया, ''क्या तुम सोचते हो कि परमेश्वर ने जिस प्रकार तुम्हे प्रयोग किया है, वह इसलिये कि तुम एकांतप्रिय थे और अपने आप में इस तरह मग्न रहने वाले व्यक्ति थे, कि तुम्हे बहुत संसारिक वस्तुओं के लिये मरना नहीं पड़ा, जब तुम युवा थे?'' जब मैनें इस बारे में सोचा तो इस प्रश्न ने एक महत्वपूर्ण तथ्य मेरे समक्ष रखा। मेरी वाणी में गम्भीर दोष था, मैं छोटा था व बहुत अधिक शर्मीला था। जब कभी हमारे घर अतिथी आते थे तो मैं अक्सर अपने पंलग के नीचे घुस जाया करता था।

परन्तु जब परमेश्वर ने मुझे प्रयोग करना आरम्भ किया, वास्तव में वास्तव में मेरे पास खोने के लिये कुछ न था और मैं किसी भी वस्तु से बंधा नहीं था। मेरी कुछ इच्छाएँ थीं, स्वाभाविक रुप से जैसे कि हर मनुष्य की होती है – कुछ वस्तुएँ जिनकी मैं इच्छा रखता था। परन्तु परमेश्वर ने मुझसे उनके बारे में बातचीत की।

इसलिये उपरोक्त प्रश्न के बारे में गम्भीरता से सोचने के बाद मै विश्वास करता हूँ, कि परमेश्वर अक्सर मेरे जैसे व्यक्तियों को चुनता है जिन्हे वह जानता है कि वे उससे संघर्ष नहीं करेंगे। परन्तु एक बात परम सत्य है कि जब आप परमेश्वर की उपस्थिति में हैं, और उसकी भलाई और प्रेम का स्वाद चख रहे हैं, आप कहते हैं, ''किसे अब किसी और वस्तु की आवश्यकता है?'' वह आपको पूरी तरह से समाप्त कर देता है। मैनें पाया कि जब आप, लोंगो को यह बात समझाना चाहते हैं और उन्हे बताते हैं कि वे किस बात से वंचित हैं वे बहुधा आपको इस प्रकार से देखते है जैसे आपका मस्तिष्क घूम गया हो।

आश्चर्यजनक तथ्य यह है, कि परमेश्वर आपसे इतना अधिक प्रेम करता है तौभी आप सदैव उसके साथ सही नहीं होते। मैं गड़बड़ी करता हूँ और बहुधा निशाने से चूक जाता हूँ और अनेकों बार उसे दुखी करता हूँ परन्तु कभी भी जान बूझ कर नहीं। मैं ऐसा करने के बजाय मरना पसंन्द करुंगा। मैं उससे इतना अधिक प्रेम करता हूँ कि इस प्रकार उसे दुखी नहीं कर सकता पर जब कभी मैं चूक जाता हूँ वह कोमलता से

आकर मेरे पापों, असफलताओं और कमजोरियों के बारे में मुझसे बात करता है और मैं क्षमा प्राप्ति के बाद आगे बढ़ता रहता हूँ।

मेरे मित्र ने मेरी सेवकाई के प्रति मेरे समर्पण के बारे में एक और कठिन प्रश्न पूछा, परन्तु उत्तर सरल था, ''क्या तुम्हे निश्चय है कि तुम परमेश्वर के कार्य को केवल इसलिये तो प्यार नहीं करते क्योंकि तुम इस कार्य में अच्छे हो?'' उसने कहा, इशारा करते हुए ''कि और कुछ है भी तो नहीं जो तुम कर सकते?'' मैनें अपने हृदय को कई बार जाँचा और तत्काल ही यह निष्कर्ष निकाला, कि मैं किसी और की सेवा करके अपना और अपने परिवार का जीवन नष्ट नहीं कर सकता और न ही परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को मार सकता हूँ। यह वीरता पूर्ण लगता है, परन्तु यह वैसे ही है जैसे पौलुस कहता है, ''क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है।'' (2 कुरिन्थियों 5:14)

लोंगो के प्रति परमेश्वर के अविश्वसनीय प्रेम को देखने का अवसर मेरे पास है। जब मैं चंगाई समारोहों के मंच पर खड़ा होता हूँ और अपने समक्ष हजारों की सँख्या में लोगों को देखता हूँ, पहियेवाली गाड़ियां, स्त्रियों और पुरुषों की आत्माएँ जो अपने सृजनहार के लिये भूखी हैं, तो मैं निश्चित रुप से जान जाता हूँ कि मैं सेवकाई में क्यों हूँ। मैं हर बार प्रार्थना करता हूँ, ''प्रभु मेरी मदद कीजिए कि आपका स्पर्श इन सब पर देखने के लिये मैं और भी ऊँची कीमत अदा कर सकूँ।

और मुझे कहना पड़ेगा कि मैं नही जानता कि क्यों प्रत्येक व्यक्ति छुआ नहीं जाता या चंगा नही होता, परन्तु मैं इतना जानता हूँ कि हजारों हजार व्यक्ति परमेश्वर द्वारा छुए जाते हैं। और मैं यह भी जानता हूँ कि इसका पूर्ण उत्तर पवित्र आत्मा के अभिषेक में और उसको पाने की इच्छा रखने में है – और इसके लिये कीमत चुकाने की इच्छा रखने में है।

और मुझे पूर्ण निश्चय है कि आप में से हजारो यह कीमत चुकाने के लिये तैय्यार होंगे। परमेश्वर अभी भी इस संसार और इसके लोंगों से इतना अधिक प्रेम करता है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

बहुत आदर की आवश्यकता है

पवित्र आत्मा के अभिषेक और उपस्थिति के लिये कीमत चुकाने के साथ ही साथ, एक और महत्वपूर्ण तथ्य है वह है, कि उस अभिषेक के लिये आदर होना चाहिये। यह बात बहुत अधिक आत्मिक न लगे, परन्तु मैनें सुना है कि परमेश्वर ने अभिषेक के साथ खिलवाड़ करने के बारे में चेतावनी दी है। और मैं कहूँगा, जैसे जैसे आप पवित्र आत्मा के साथ जीवन में आगे बढ़ते हैं, कोई भी ऐसा कार्य न करें जो प्रभु का अनादर करने वाला हो।

परमेश्वर के इस्त्राएलियों के साथ संम्बन्ध के इतिहास में, बहुत पहले ही आत्मा के अभिषेक के प्रति अनादर के बारे में चेतावनी दी जा चुकी है। गिनती की पुस्तक के बारहवें अध्याय के आरम्भ में लिखा है कि मरियम और हारुन मूसा के विरोध में बोले कूशी स्त्री के कारण, जिससे मूसा से विवाह कर लिया था।

उन्होने इन शब्दों में मूसा को चुनौती दी, ''क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें कीं हैं? क्या उस ने हमसे भी बातें नहीं की?'' (पद2) यहाँ पर पवित्र शास्त्र स्पष्ट शब्दों में कहता है, कि मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था। वह परमेश्वर का चुना हुआ जन था और परमेश्वर ने इस अनादर के कारण से उनका न्याय किया। परमेश्वर ने कहा, मूसा तो मेरे सब घरानों में विश्वासयोग्य है उससे मैं गुप्त रीति से नहीं, परन्तु आमने सामने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता हूँ और वह यहोवा का स्वरुप निहारने पाता है। सो तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते हुए क्यों नहीं डरे? (पद 7 – 1) मूसा और उसके अभिषेक का अनादर परमेश्वर को बहुत बुरा लगा। बाइबल कहती है। ''तब यहोवा का कोप उन पर भड़का और वह चला गया। तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया और अचानक मरियम कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई।''

परमेश्वर का क्रोध प्रचन्ड था और यदि मूसा परमेश्वर के साथ हस्तक्षेप न करता तो मरियम ''एक मरे हुए के समान'' ही रहती। हारुन ने क्षमा माँगी और विनती की और मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, ''हे

परमेश्वर कृपा कर, और उसको चंगा कर।'' सो परमेश्वर ने उसे सात दिन तक उसे दंड में रहने दिया – छावनी के बाहर और बाद में वह चंगी की गई (पद 11 – 15)

बात यह है कि – हारुन और मरियम अपनी बुलाहट से हट गये और उन्होने मूसा बनने का प्रयत्न किया, उस शक्तिशाली अभिषेक का अनादर करते हुए जो मूसा पर था कभी मूसा बनने का प्रयत्न मत कीजिये अगर आप वह नहीं हैं तो। और इस तथ्य पर ध्यान देना लाभ दायक है कि मरियम को कोढ़ होने से पहले बादल वहाँ से उठ गया। व्यक्ति जो अपने अभिषेक से दूर चले जाते हैं – जल्दी ही जान जाते हैं कि उपस्थिति उनके पास से चली गई है। हाँ, परमेश्वर उन्हे क्षमा करेगा जब वह पश्चाताप करेंगें परन्तु फिर भी एक मूल्य चुकाना पड़ेगा।

घोड़ा और खच्चर

अब, जबकि आप पवित्र आत्मा के आगे समर्पण के लिये तैय्यार हो रहे हैं, स्वयं के लिये मरते हुए, और उस अद्भुत उपस्थिति और अभिषेक की ओर बढ़ते हुए, जो परमेश्वर ने आपके लिये रखा है, मै आपके समक्ष पवित्र शास्त्र का एक पद रखना चाहता हूँ जो कि बगल में नुकीली सुई की तरह चुभ सकता है। मैं जानता हूँ कि इस पद ने मुझे अक्सर झिड़का है।

भजन संहिता 34:9 कहता है, ''तुम घोड़े और खच्चर के समान न बनो जो समझ नहीं रखते, उनकी उमंग लगाम और बाग से रोकनी पड़ती है।''

सोचिये तो सही! एक दिन प्रभु ने यह पद मुझे दिया और पवित्र आत्मा ने वास्तव में इस पद के द्वारा मुझे झझकोर दिया।

क्या आपको मालूम है कि एक घोड़ा क्या करता है? वह आगे –2 दौड़ता है और धीरज नहीं धरता। और खच्चर? वह इतना ढीठ होता है कि हिलता ही नहीं। एक बहुत तेजी से और दूसरा बिलकुल ही नहीं दौड़ता।

गंभीर संदेश यह है कि घोड़ा अभिषेक से बाहर भागकर शरीर में आ जायेगा, जबकि खच्चर शरीर में ही मर जाता है। बड़े दुख की बात है कि कलीसिया में बहुत से खच्चर हैं। वे परमेश्वर से कुछ नहीं चाहते, न ही उपस्थिति, न ही अभिषेक। वे ढीठ हैं।

यदि मेरी कलीसिया में सारी भेंड़े नहीं हो सकती, जो विश्वासयोग्यता से प्रभु के पीछे चले, तो मैं अपनी कलीसिया में खच्चरों के बदले घोड़े चाहूँगा। कम से कम घोड़े कहीं जा तो रहे हैं और आपके पास एक अवसर तो है उन्हें वश में करने का।

आगे बढ़ने का समय आ गया है

जैसा मैनें पहले कहा, यह सामर्थी समय है जिसमें हम जी रहे हैं। जिसमें हम जी रहे हैं। पाप अधिक है पर अनुग्रह उससे भी अधिक है। करोड़ों लोग उदासी के साथ परमेश्वर से विपरीत दिशा में जा रहे हैं। समाज अस्त – व्यस्त है। हमारे नवयुवक कष्ट में हैं। पर अन्य करोड़ों परमेश्वर के लिये भूखे हैं और उसके साथ खड़े होना व उसकी सेवा करना चाहते हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि आप दूसरे समूह में हैं और मेरी यही प्रार्थना है कि जब आप उसके लिये आगे बढ़ते हैं आप पवित्र आत्मा की सामर्थ में आगे बढ़ेंगे, उसके बहुमूल्य अभिषेक में आगे बढ़ेंगे, जो परमेश्वर के प्रत्येक जन के लिये हैं।

कोई भी वस्तु आपको डराकर पीछे न हटा ले। परमेश्वर को आपकी बहुत आवश्यकता है।

कृपया मेरे साथ प्रार्थना कीजियेः

पिता, मै इसी समय पूर्ण रुप से आपके सामने समर्पण करता हूँ। मैं सब कुछ आपको समर्पित करता हूँ – अपना शरीर, अपना मन और अपनी आत्मा, अपना परिवार, अपनी नौकरी, अपना पैसा, अपनी कमजोरियाँ, अपनी शक्ति, अपना भूतकाल, अपना वर्तमान और अपना भविष्य, सब कुछ जो मैं हूँ, सारे अनंतकाल के लिये आपको सौंपता हूँ। मैं विनती करता हूँ प्रभु, कि मुझे एक पश्चातापी हृदय दीजिये ताकि मैं उनसब बातों के लिये जिनके द्वारा मैनें आपको दुख पहुँचाया है, अपने

सारे पापों के लिये, अपने सारे अधर्म के लिये, अपने हृदय के ठंडेपन के लिये और अपने विश्वास की कमी के लिये पश्चाताप कर सकूं। मैं आपसे मांगता हूँ कि मुझे शक्ति दीजिये कि इन सबसे मुड़कर उस मार्ग पर जा सकूं, जो आपको प्रसन्न करता है। पवित्र आत्मा मैं आपको अभी इसी समय अपने जीवन में आमंत्रित करता हूँ। मैं आपकी स्तुति करता हूँ और आपसे प्रेम करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप उन वस्तुओं को प्राप्त करने में मेरी सहायता करें जो मैनें पिता से यीशु के नाम में मांगी है। मैं आपकी संगति और सहभागिता में आ सकूं इसमें मेरी सहायता कीजिये। क्योंकि मैं वास्तव में नहीं जानता कि स्वयं यह कार्य कैसे करुँ। मुझे अपनी उपस्थिति के प्रति पूर्ण रुप से जागरुक करिये। इस योग्य कीजिये कि आपकी आवाज सुन सकूँ। मैं आज्ञा पालन करने की प्रतिज्ञा करता हूँ। प्रभु यीशु पवित्र आत्मा से मेरा अभिषेक कीजिये जबकि मैं आज्ञापालन करता और सीखता हूँ। अपनी सामर्थ मुझे दीजिये कि मैं अपने आस पास के लोंगों को स्पर्श कर सकूँ और उन्हे भी जिन्हे आप मेरे पथ में लाएंगे। मुझे दर्शायें कि आगे मैं क्या करुँ। और मेरी सहायता करें कि मैं कभी भी आपकी संगति की उपेक्षा न करुँ। मैं यीशु अपने प्रभु के नाम से मांगता हूँ – आमीन

और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करुँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मान कर उनके अनुसार करोगे।

(यहजकेल 36:27)

परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरुशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे। (प्रेरितों के काम 1:8)

अध्ययन व चर्चा के लिये निर्देश

अध्याय 1 : डेट्रॉइट में अनर्थ

1 लेखक ने ''महिमा के बादल'' की चर्चा की है। उसने उसे शेकेन्याह महिमा कहा, परमेश्वर की विस्मयकारी पवित्र उपस्थिति।

(अ) क्या आप कभी ऐसे स्थान पर गये हैं, जहाँ परमेश्वर की विस्मयकारी उपस्थिति ने कमरे को भर दिया?
(ब) वह आपको कैसा लगा, वर्णन कीजिये।

2 पुराने नियम में दो अवसरों का विशेष रुप से वर्णन है, जब परमेश्वर की शेकेन्याह महिमा प्रगट हुई।

(अ) निर्गमन 33:9 को खोलिये। बादल का खम्बा जो उतर आया वह क्या था?
(ब) निर्गमन 33:15 – 16 में मूसा किस वस्तु के लिये कहता है कि वह उसके साथ जाना चाहिये?
(स) कौन सी बात इस्त्राएलीयों को अन्य सब लोगों से भिन्न बनाएगी?

3 दाऊद के पुत्र सुलैमान ने यहोवा के लिये एक भव्य भवन बनाया, जहाँ लोग आराधना कर सकते थे, तथा अपने बलिदानों को ला सकते थे। 2 इतिहास 5 में मंन्दिर के अर्पण किये जाने के वृत्तान्त को पढ़िये। ऐसी सभा में उपस्थिति रहना कैसा लगता, आप क्या सोचते हैं?

4 लेखक ने बताया कि उसे महसूस हुआ कि प्रभु उससे कुछ कह रहा है। आप क्या सोचते हैं लेखक का क्या अर्थ था? आप ऐसे स्थान पर कैसे पहुँच सकते हैं जहाँ आप भी इस भावना को अच्छी तरह जान जायें? ''वह भिन्न था'' इस भाग में लेखक की कहानी को पुनः पढ़ियें। अचानक अकेले हो जाने के प्रभाव को क्या आप महसूस कर सकते हैं?

5 परमेश्वर की उपस्थिति लेखक के साथ संध्या की सभा में क्यों नहीं थी?

अध्याय 2 : सबसे बहुमूल्य वरदान

1 अपने उद्धार के अलावा, लेखक किसे अपना सबसे बहुमूल्य उपहार कहता है?

2 उसका किस वस्तु से अभिषेक हुआ?

3 किसने यह अभिषेक किया?

4 लेखक के वृत्तान्त को पुनः पढ़िये, जिसमें उसने बताया है कि वह पवित्र आत्मा की उपस्थिति को कितना मूल्यवान समझता है। तब भजन संहिता 51:10 – 13 में दाऊद की पुकार को पढ़िये।

(अ) लेखक व दाऊद की लालसाओं के बीच समानताओं का वर्णन कीजिये।
(ब) क्या आप इस लालसा को व्यक्तिगत रुप से अपने साथ सम्बद्ध कर सकते हैं?

5 आप परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव कैसे करते हैं?

6 लेखक कहता है कि जब आप पवित्र आत्मा के साथ – प्रतिदिन चलने का अनुभव करेंगे, तो रोमियो 8 में वर्णित अनेक बातें आपके जीवन में होंगी। वे क्या हैं? आपने उन्हे अपने जीवन में कैसे घटित होते देखा है?

अध्याय 3 : आरम्भ में

1 लेखक ने कहा, वह ''तरस रहा था'' तथा ''हताश'' था तथा आत्मा के परिपोषण के लिये बहुत कम उसे उपलब्ध था। आप क्या सोचते है उसका क्या अर्थ था? क्या आपने कभी परमेश्वर की उपस्थिति के लिये ''भूख'' अनुभव की?

2 क्या आप सोचते हैं कि पवित्र आत्मा एक ''वस्तु'' हैं अथवा एक धुन्ध हैं? आप पवित्र आत्मा का वर्णन कैसे करेंगे?

3 पवित्र आत्मा आपका – और – बन जाएगा।

4 लेखक ने बड़ी तीव्रता से अनुभव किया कि पवित्र आत्मा उसे सुसमाचार प्रचार के लिये प्रेरित कर रहा है, यद्यपि वह हरेक को पूर्णकालिक प्रचार सेवकाई के लिये प्रेरित नही करता।

(अ) यीशु ने अपने शिष्यों से मरकुस 16:15 में क्या कहा?

(ब) क्या आप सोचते हैं कि यह आपके ऊपर भी लागू होता है?

5 वे सब जो परमेश्वर का अभिषेक चाहते व प्राप्त करते हैं, उन्हे पवित्र आत्मा क्या चेतावनी देता है?

अध्याय 4 : अन्ततः उत्तर मिला

1 आपके जीवन में क्या कभी ऐसा समय रहा है जब आपने परमेश्वर की खोज की? अपने कारण व भावनाओं को समझाने के लिये अपने उत्तर को विस्तृत रुप दीजिये।

2 अपनी खोज के अन्त में क्या आपने परमेश्वर को पाया? यदि नहीं, तो क्या आप अब भी उसे खोज रहे हैं

3 अभिषेक के विषय में और जानकारी प्राप्त करने से पहले, आपको यह निश्चय करना है कि आप नया जन्म पाये हुए हैं या नहीं। अपने शब्दों में बताइये ''नया जन्म पाने'' का क्या अर्थ हैं?

4 अभिषेक पाने का अगला चरण है निश्चित करना कि क्या आपने पवित्र आत्मा से कहा है कि वह आपके जीवन को भर दे। पवित्र आत्मा आपके द्वारा पर खड़ा है। किसी अतिथि के समान, वह अन्दर नहीं आयेगा जब तक बुलाया न जाये। बैनी हिन्न के साथ क्या आप भी कहेंगे, ''पवित्र आत्मा, इस स्थान पर आपका स्वागत है?''

5 लेखक कहता है, ''एक ऊँचा अनुभव भी है, पवित्र आत्मा की उपस्थिति मात्र से बढ़कर। एक अभिषेक है, सेवा के लिये सामर्थी किया जाना, और वह आ सकता है मूल्य चुकाने के द्वारा।''

(अ) भजन संहिता 63 पढ़िये और समझाईये कि वह मन और शरीर के विषय में क्या कहता है।

(ब) यशायाह 26:9 पढ़िये और समझाइये कि वह आत्मा के विषय में क्या कहता है।

6 क्या परमेश्वर किसी को प्रार्थना करने के लिये बाध्य करेगा? क्यों अथवा क्यों नहीं?

7 अभिषेक का मूल्य क्या है?

अध्याय 5 : न तो बल से

1 परमेश्वर ने जिस कार्य के लिये आपको बुलाया है, उसकी तैय्यारी करते समय किन तीन बातों में से होकर आप गुजरेंगें?

2 भजन संहिता 46:10 में परमेश्वर ने हमारे लिये एक शिक्षा दी है। इस वचन से आपने क्या सीखा, उसे अपने शब्दों में समझाइये।

3 प्रभु की सेवा के लिये जब आप अभिषेक खोजते और पाते हैं, आपको चाहिये कि प्रभु को धन्यवाद व महिमा दें। यह दोनो कार्य आप कैसे कर सकते हैं?

4 परमेश्वर आपको सामर्थी अभिषेक से आशीषित करे, उससे पहले दो बातें आपके व परमेश्वर के बीच में दिखाई देनी चाहिये।

(अ) आप और परमेश्वर में – होना चाहिये।

(ब) वह आप पर – कर सके।

अध्याय 6 : परमेश्वर की एक असाधारण स्त्री

1 कैथरीन कुलमन की व्यक्तिगत कहानी से शिक्षा लेते हुए, हमारे जीवनों में किसे प्रथम स्थान प्राप्त होना चाहिये?
2 अभिषेक के लिये जो मूल्य हमें चुकाना है उसे आँशिक रुप से पहचानिये।
3 जैसा कैथरीन कुलमन के जीवन में हुआ, आपके पश्चाताप किये हुए पापों के साथ, परमेश्वर क्या करेगा? उत्तर के लिये भजन संहिता 103:12 पढ़िये।

अध्याय 7 : यह क्या है?

1 पाँच गुणों की सूची बनाइये जो परमेश्वर की उपस्थिति के साथ आते है। आपको कौन से गुण को और अच्छी तरह समझने की आवश्यकता है?
2 अभिषेक क्या है?
3 प्ररितों के काम 1:4 – 5 – 8 में यीशु के शब्दों को पढ़िये। पवित्र आत्मा उसके ऊपर आने के बाद एक विश्वासी क्या पाएगा?
4 सामर्थ का उद्देश्य क्या है?
5 गलातियों 5:22 – 23 पढ़िये तथा आत्मा के फल की सूची बनाइये। आप अपने जीवन में इस फल का क्या प्रमाण देखते हैं?
6 पवित्र शास्त्र आत्मा के लिये विभिन्न चिन्हों का प्रयोग करता है जैसे कबूतर, अग्नि, वायु, तेल तथा पानी।

(अ) क्या वह इनमें से कोई वस्तु है?

(ब) वह क्या है?

7 उन भूमिकाओं को निभाने के लिये जिनके लिये पवित्र आत्मा आपको बुला रहा है आपको क्या चाहिये?

अध्याय 8 : आपके पास होना चाहिये

1 अभिषेक अनिवार्य है यदि आप प्रभु की सेवा के लिये बुलाये गयें हैं। उसके बिना आपकी सेवकाई में ....,.......और ....नहीं होगा।

2 पृष्ठ 61 पर लेखक अभिषेक में वृद्धि का एक रहस्य बताता है। यह गुप्त अवयव क्या है?

3 पृष्ठ 70 पर वह एक और रहस्य बताता है अभिषेक बहकर दूसरो को स्पर्श करने के विषय में। कुछ नहीं होगा यदि आप ....हैं।

4 लेखक कहता है कि वह प्रभु को जानता व उसकी आज्ञापालन करता था, परन्तु यदि लोग परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के बिना सेवा करने की कोशिश करते हैं, वे शैतानों द्वारा ठठ्ठों में उड़ाये जाएंगे। प्रेरितो के काम 19:13 – 16 पढ़िये और समझाइये कि यहूदी आझाओं को क्या हुआ?

5 पृष्ठ 79 पर लेखक अभिषेक के लिये एक और रहस्य का उद्‌घाटन करता है। यह रहस्य क्या है?

अध्याय 9 : तीन अभिषेक

1 कोढ़ी के अभिषेक को समझाइये। यह आपके जीवन से किस प्रकार सम्बन्धित है?

2 याजक वाले अभिषेक का वर्णन कीजिये। क्या आपने यह प्राप्त किया?

3 कोढ़ी के अभिषेक की आवश्यकता कितनी बार होती है? याजक वाले अभिषेक की आवश्यकता कितनी बार पड़ती है?

4 राजसी अभिषेक के अन्तर्गत आपको क्या अधिकार प्राप्त होता है?

5 तीनो अभिषेकों को हम किस प्रकार प्राप्त करते हैं इसको पुनः देखते हैं :

(अ) कोढ़ी का अभिषेक यीशु को .... करने से मिलता है।

(ब) याजक वाला अभिषेक यीशु के साथ .... करने से मिलता है।

(स) राजसी अभिषेक यीशु की .... मानने से मिलता है।

अध्याय 10 : यह कल आरम्भ नहीं हुआ

1 दाऊद को कितने अभिषेक प्राप्त हुए?

2 प्रेरितो को कितने अभिषेक प्राप्त हुए?

3 लेखक तीन बातें बताता है, जो प्रेरितों के काम की पुस्तक में विश्वासियों की निशानी बनी। बिना देखे क्या आप उनको बता सकते हैं?

अध्याय 11 : यीशु मैं हूँ

1 पवित्र आत्मा का प्रथम उद्देश्य क्या है?

2 कुलुस्सियों 1:16 – 17 को पढ़िये। किसके द्वारा सारी वस्तुएं सृजी गईं?

3 इब्रानियों 1:3 को पढ़िये। इस पद पर विचार कीजिये और तब जो अद्‌भुत बात इसमें व्यक्त की गई है उसे अपने शब्दों में समझाइये।

4 आदम के समान हममें से प्रत्येक को जीवन के वृक्ष तथा मृत्यु के वृक्ष का चुनाव करना होता है। उस दिन के बारे में सोचिये जब आपने यह चुनाव किया था।

(अ) क्या आप किसी को जानते हैं जिसे यह चुनाव करना है?

(ब) क्या आप उस व्यक्ति को बाध्य कर सकते हैं कि वह जीवन के वृक्ष का चुनाव करे?

(स) क्या परमेश्वर मे आपको निर्णय लेने के लिये बाध्य किया था?

5 क्या आप प्रभु यीशु को समझने की और अधिक – अधिक इच्छा रखते हैं? इफिसियों 3:16 – 19 को लिखिये। इसे अपनी व्यक्तिगत दैनिक प्रार्थना बनाने का क्या लाभ है?

अध्याय 12 : यह आपके लिये है – अभी

1 अभिषेक प्राप्ति के घटनाक्रम में रिक्त स्थानो को भरिये। पहले आती है .... उसकी .... तब आत्मा का .... और तब ....।

2 ईश्वर बोध का पहला परिणाम लेखक के अनुसार क्या है?

3 1 थिसलुनिकियों 9:17 को पढ़ने के बाद समझाइये यह पद आपके लिये क्या अर्थ रखता है?

4 इस प्रकार की प्रार्थना द्वारा आपके विचार में प्रभु क्या उत्पन्न करना चाहता है?

5 क्या आपकी दिनचर्या में वचन पढ़ने तथा प्रार्थना करने का नियमित समय है? आपके जीवन में इस विशेष समय के लिये सब से बड़ी बाधा क्या है? इसे बदलने के लिये आप क्या कर सकते हैं?

अध्याय 13 : दो गूढ़ आधार

1 जैसा प्रेरितों 1:8 में बताया गया है पवित्र आत्मा के एक विश्वासी के जीवन में आने का ध्येय क्या है?
2 लेखक यीशु के सम्बन्ध में चार बातें बताता है जिनकी गवाही हमें देनी है। उसके नाम बताइये व हर एक का एक उदाहाण सोचिये।
3 अभिषेक की एक और कुन्जी लेखक हमें देता है। यह कुन्जी क्या है?
4 ''इसका क्या अर्थ है?'' इस अंश को पुनः पढ़िये। अब पवित्र आत्मा आपको क्या करने के लिये निर्देश दे रहा है?
5 बाइबल सिखाती है कि यीशु मसीह का बहाया गया लहू हमारे जीवनो में 6 बातों को करता है।

(क) यीशु मसीह का लहू हमें – से छुड़ाता है।

(ख) उसके लहू के द्वारा हमें अपने पूर्व काल पापों की – प्राप्त होती है।
(ग) उसका लहू हमें प्रतिदिन के पापों से – करता है।

(घ) यीशु का बहाया गया लहु हमें भविष्य में आने वाले – से बचाता है।
(च) उसने हमारे तथा परमेश्वर के बीच – को पुनः स्थापित की दिया है।
(छ) उसने विश्वासी को – किया है।

(ह) लेखक तीन कुन्जियां बताता है जिनकी हमें आवश्यकता है कि हम अपने लहू में ढ़ाँप सकें। वे क्या हैं?

अध्याय 14 : यीशु का उदाहरण

1 लूका 4:18 – 19 अभिषेक के आने के छः कारण बताता है। वे क्या हैं?
2 लूका 4:18 में यीशु ने ''कंगालों'' की बात कहीं, वे कौन हैं?
3 पृथ्वी पर एक मात्र शक्ति, जो शैतान की शक्ति को नष्ट कर सकती है, का नाम बताइये।
4 जैसा लूका 4:18 में वर्णित है, आपके विचार में किस प्रकार की दृष्टि पाई जा सकती है?
5 क्या बड़ा कार्य हम कर सकते हैं जो यीशु ने नहीं किया?
6 ऐसा दिन आने वाला है, जब पवित्र आत्मा का अभिषेक इतना बड़ा होगा कि हम बहुत सी आश्चर्यजनक बातें देखेंगे। कुछ बातों को पुनः याद कीजिये, जिनकी चर्चा लेखक ने की है, और संसार पर उनके प्रभाव पर ध्यान दीजिये।
7 लेखक अभिषेक की एक और कुन्जी बताता है। यह कुन्जी क्या है?
8 कुछ बातों के उदाहरण दीजिये, जो आपको करनी हैं, यदि आप प्रभु की आवाज सुनना चाहते हैं।

अध्याय 15 : अपने तेल को बदलिये

1 पवित्र आत्मा के तेल की पुनः पूर्ती करने के तीन उपाय बताइये। क्या आप अन्य उपायों की अपेक्षा किसी एक उपाय को अधिक अपनाते हैं? क्यों?

2 इफिसियों 4 को पढ़िये तथा अपने जीवन के किन्हीं ''छिद्रों'' के विषय में सोचिये, जहाँ से पवित्र आत्मा का तेल बह रहा है।
3 क्या यह सम्भव है कि आप अपना राजसी अभिषेक खो दें? यदि हाँ, तो यह कैसे हो सकता है?
4 पृष्ठों पर लेखक अभिषेक को बनाये रखने तथा बढ़ाने की तीन कुन्जियों की चर्चा करता है। प्रत्येक कुन्जी के विषय में सोचिये कि यह आपके जीवन में कैसे लागू होती है।

अध्याय 16 : दोगुना भाग प्राप्त करना

1 फिलिप्पियों 3:13 पढ़कर अपने जीवन को जाँचिये। क्या आपके बीते कल की कुछ बातें हैं जिन्हे आपको छोड़ना चाहिये, अन्यथा वे आपको अभिषेक का दोगुना भाग प्राप्त करने में बाधा बन सकती है?
2 क्या आप अपने आत्मिक जीवन से संन्तुष्ट हैं? क्या आप यथापूर्व स्थिति से संन्तोष किये हुए हैं? क्यों?
3 जब आप अभिषेक के दोगुने भाग की खोज में हैं, किन क्षेत्रों में आपको बड़े – बड़े युद्ध करने पड़ रहे हैं – शैतान का विरोध, आपका पैसा, आपका शरीर, आपका मस्तिष्क अथवा आपका परिवार? विशिष्ट उपायों के बारे में सोचिये, जिनसे आप इन क्षेत्रों में विजय पा सकते है।
4 परमेश्वर ने आपके लिये भविष्य में क्या रखा हुआ है, क्या आपके पास इसका कोई दर्शन है? विश्वास के कार्य के रुप में इसे लिख डालिये। इसे अपने साथ रखिये तथा बहुधा इसे पढ़िये।

अध्याय 17 : क्या आप मूल्य चुकाएंगे?

1 अभिषेक के लिये क्या मूल्य चुकाना पड़ता है?
2 इस मूल्य को आप किस प्रकार चुकाएंगे?
3 क्या अभिषिक्त विश्वासी अपने जीवनों में कभी ऐसी स्थिति पर पहुँचते हैं जहाँ शैतान उन्हे अकेला छोड़ दे? लूका 9:23 तथा 1 कुरिन्थियों 15:31 उत्तर देने में आपकी सहायता कर सकते है। इस पर विजयी होने के लिये आप क्या कर सकते हैं?
4 जैसे आप इस अध्याय तथा चर्चा निर्देशों को समाप्त करते हैं, निश्चय कीजिये कि आप अभिषेक के विषय में इन चार प्रश्नों के उत्तर दे सकें

(अ) यह क्या है?

(ब) क्या आप इसे चाहते हैं?

(स) आप इसे कैसे प्राप्त करते हैं?

(द) क्या आप मूल्य चुकाना चाहते हैं?

लेखक के विषय में

बैनी हिन्न एक एक जाने – माने तथा सम्मानित पासबान, शिक्षक, चंगाई देने वाले प्रचारक तथा बहुबिक्री पुस्तकों के लेखक हैं। 'वर्ल्ड आरउटरीच सेन्टर' के संस्थापक व पासबान के रुप में, वे एक फलती – फूलती असम्प्रदायिक कलीसिया की सेवकाई करते हैं, जहाँ हर सप्ताह सात हजार से अधिक लोग आते हैं। उनकी शिक्षण सेवकाई हर सप्ताह लाखों लोंगों को प्रभावशाली ढ़ंग से स्पर्श करती है, उनके दैनिक आधे घन्टे के दूरदर्शन कार्यक्रम के माध्यम से, जिसका नाम है – 'यह आपका दिन है', जिसका प्रसारण अन्तर्राष्ट्रीय है। हजारों उनकी मासिक चमत्कारिक सभाओं में परमेश्वर की बचाने की तथा चंगा करने की सामर्थ का अनुभव करने के लिये एकत्र होते हैं, जो सारे संयुक्त राज्य अमेरिका तथा संम्पूर्ण विश्व में आयोजित की जाती है।

हिन्न ने अनेक बहुबिक्री पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'शुभ – प्रभात पवित्र आत्मा है, जिसकी दस लाख से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं। अन्य पुस्तकें हैं – 'अभिषेक', 'स्वागत पवित्र आत्मा' तथा 'आशीष के लिये बाइबल का मार्ग'।

हिन्न तथा उनकी पत्नी सुजैन, अपने चार बच्चों – तीन पुत्रियां, जेसिका, नताशा व एलियाशा तथा पुत्र जाशुआ के साथ ओरलेन्डो, फ्लोरिडा में रहते हैं।